53

9. I

श्रीः

नववर्षाङ्क

श्री स्वाध्याय

शरदङ्क

वर्ष ६
सं० २००६

संख्या १
आश्विन

स्वाध्यायोऽध्येतव्यः

वार्षिक मूल्य ४)

इस अङ्क का मूल्य १॥) रु०

संस्थापक—
श्रीमान् अमृतवाग्भव आचार्य

सम्पादक—
श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी

❀ विषय-सूची ❀

भूलसुधार—पृष्ठ ४० पर 'सत्य और सुन्दरमें विरोध' शीर्षकके स्थानमें 'गीतामय-आचरण' शीर्षक शुद्ध कर लें और इसी लेखकी आठवीं पंक्तिमें "समाज समझेगा कि आप उसके लिए उपयोगी हैं तो" इतना वाक्य दो बार छप गया है उसे एक बार ही समझें। इसी प्रकार पृष्ठ ५९ पर 'गीतामय आचरण' शीर्षकके स्थानमें 'सत्य और सुन्दरमें विरोध' समझें। प्रूफसंशोधककी असावधानीसे दोनों लेखोंके शीर्षकों और नामोंमें व्यत्यय हो गया है, पाठक सुधारनेकी कृपा करें।

—सम्पादक

❀ श्रीः ❀

श्रीस्वाध्याय

संस्थापक तथा प्रधानाध्यक्ष—
सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम आचार्य
श्री १०८ मान् अमृतवाग्भवजी महाराज

संरक्षक—

त्यागमूर्ति श्री १०८ गो० गणेशदत्तजी महाराज प्रधानमन्त्री स०ध०प्र० सभा पंजाब।
धर्ममार्त्तण्ड राजासाहब श्री० १०५ मान् दुर्गासिंहजी बहादुर सी०आई०ई० सोलन।
रावराजा कैप्टेन श्री १०५ मान् गिरिधारीशरणसिंहजी भरतपुर।
श्रीमान् दीवान रुद्रशरणप्रतापसिंहजी ज़मींदार साहब उपरोड़ा स्टेट सी० पी०।
श्रीमान् चौधरीसाहब गगनसिंहजी रईस जण्डवाल (होश्यारपुर)
श्रीमान् ला० शिवचरणदासजी सदस्य सलाहकारसमिति (हिमाचल प्रदेश) सोलन।

सहायक—

श्री १०५ मती स्व० माँजी महारानी साहिबा (सिरमौरीजी) बघाटराज्य।
आयुर्वेदमहोपाध्याय श्री पं० गोवर्द्धन शर्माजी छांगाणी सीतावर्डी, नागपुर।
श्री वेणुभाई एम० रावल पाचोरा (पूर्वखान्देश)।
रावबहादुर धर्मालङ्कार श्री १०५ मान् महाराज प्रभुनाथसिंहजी नरसिंहगढ़।
श्री १०५ महाराज रणदीपसिंहजी साहब नाहन (सिरमौर)।
श्रीमान् स्व० पं० चतुर्भुजजी राजपुरोहित ताल्लुकेदार भरतपुर।
श्रीमान् स्व० अक्रियानन्दजी (श्री चुन्नीलालजी) भरतपुर।
श्रीमान् पं० हरिशङ्करजी शास्त्री ज्योतिषरत्न खिड़कियां सी० पी०।
श्रीमान् कुँवर शिवसिंहजी बी० ए०, एल०-एल० बी० सेशनजज सोलन।
श्रीमान् लाला शिवप्रसादजी आढ़ती खड़ (पंजाब)।
श्रीमान् ला० बाँकेलाल राजकुमार आढ़ती खड़ (पंजाब)।

सम्पादक और व्यवस्थापक—
श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य

प्रकाशक—
श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (हिमाचलप्रदेश)

श्रीस्वाध्यायके नियम तथा उद्देश्य

उद्देश्य—

समस्त संसारको हितकी ओर ले जाना तथा ऐहलौकिक और पारलौकिक मोक्ष (स्वातन्त्र्य) प्राप्त कराना 'श्रीस्वाध्याय' का मुख्य उद्देश्य है।

संचालकगणोंके नियम—

संरक्षक—

(१) जो महानुभाव ३००) तीन सौ रुपयेसे अधिक प्रतिवर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के संरक्षक माने जायेंगे।

सहायक—

(२) जो सज्जन ५०) से ३००) तक प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'श्रीस्वाध्याय' के सहायक माने जायेंगे।

'श्रीस्वाध्याय' के नियम

'श्रीस्वाध्याय' आश्विन शुक्ला १०, पौष शुक्ला १०, चैत्र शुक्ला १० और आषाढ़ शुक्ला १० को प्रकाशित होता है। इसका वार्षिक मूल्य ४) रु० और एक प्रतिका १।) रु० है।

(२) जिन सज्जनोंके लेख श्रीस्वाध्याय-सदनकी ओर से प्रार्थना-पूर्वक मंगवाये जायेंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे। अन्य लेख यदि गवेषणा-पूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जावेंगे तो यथासमय प्रकाशित हो जायेंगे, अन्यथा नहीं।

(३) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकोंकी दो-दो प्रतियाँ और विनिमय (परिवर्तन) के पत्र पत्रिकाएँ सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला) के पतेसे भेजने चाहिएँ।

(४) लेख, कविता आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए।

(५) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने उसे घटाने बढ़ाने तथा लौटाने न लौटानेका सम्पूर्ण अधिकार सम्पादकको है। अस्वीकृत लेख डाकव्यय प्राप्त होने पर लौटाये जा सकेंगे।

ग्राहकोंके नियम

'श्रीस्वाध्याय' के स्थायी ग्राहक वर्षारम्भके प्रथमाङ्क से (आश्विनमास विजयादशमीसे) ही बनाये जाते हैं, चाहे वे मूल्य कभी भेजें। यदि विजयादशमीका 'नववर्षाङ्क' समाप्त हो जावे या कोई ग्राहक अवधि समाप्त होने पर पीछे विशेषाङ्क न लेना चाहे तो बीच में किसी भी समयसे ग्राहक हो सकते हैं। ऐसी स्थितिमें उनसे वार्षिक मूल्य ४) न लेकर वर्ष-समाप्ति (आषाढ़ तक) के शेष अङ्कोंका मूल्य ही लिया जायगा। 'नववर्षाङ्क' के बिना तीन अङ्कों या नौ मासका मूल्य ३) रु० और एक अङ्कका मूल्य १।) रु० मनीआर्डर द्वारा पेशगी आना चाहिए। वी० पी० मंगानेसे उक्त मूल्यमें चार आने अधिक रजिस्ट्री खर्चके बढ़ जायेंगे। वर्षारम्भसे स्थायी ग्राहक बनकर पूरी फाइल मंगवानेमें ग्राहकोंको विशेष लाभ है।

मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर अपना नाम तथा पूरा पता और ग्राहक संख्या स्पष्ट अक्षरोंमें लिखना चाहिए। यदि ग्राहक संख्या स्मरण न हो और पुराने ग्राहक हों तो मनीआर्डरके कूपनपर 'पुराना' शब्द और नये ग्राहक हों तो 'नया' शब्द नामके साथ अवश्य लिख देना चाहिए। वार्षिक मूल्य या एक अङ्कके मूल्यके नोट या टिकट लिफाफेमें कदापि न भेजें।

'श्रीस्वाध्याय' का नमूना बिना मूल्य किसीको नहीं भेजा जाता। जिन सज्जनोंके जवाबीपत्र या उत्तरके लिए टिकट आवेंगे उन्हींको तत्काल उत्तर दिया जावेगा। 'श्रीस्वाध्याय' प्रकाशित होनेकी तिथि (शुक्ला दशमी) को प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी सावधानीसे भेज दिया जाता है। यदि किसी ग्राहकके पास कोई अङ्क न पहुंचे तो उसके प्रकाशित होनेकी तिथिसे १५ दिनके अंदर हमें सूचना देनी चाहिए। बादकी शिकायत पर कोई ध्यान नहीं दिया जायेगा।

व्यवस्थापक—

श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शमिला)

श्रीः

नवम वर्षमें पदार्पण

विगत पन्द्रहवीं अगस्तको अभी हमारी स्वतन्त्रताकी दूसरी वर्षगाँठ समाप्त हुई है। इस स्वल्पकालीन स्वतन्त्र वायुमण्डलमें जहाँ हमारी विविध शक्तियोंका क्रमिक विकास हुआ है, वहाँ कहना न होगा कि हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दीने भी राष्ट्रभाषाके महनीय पद पर आसीन होकर अपना क्षेत्र विस्तृत किया है। हिन्दीमें दिनोंदिन पत्र पत्रिकाओंकी संख्या बढ़ती जा रही है, यह उसके शुभ भविष्यका द्योतक और इस बातका परिचायक है कि अब हिन्दी की ओर जनताकी अभिरुचि बढ़ने लगी है।

हिन्दी पत्र पत्रिकाओंकी बढ़ती हुई संख्या देखकर कौन ऐसा हिन्दी प्रेमी राष्ट्रिय व्यक्ति होगा, जिसको उस पर अभिमान एवं हर्ष न होगा। परन्तु हमको इतनी-सी ही प्रगति पर फूला न समाना श्रेयस्कर न होगा। अभी हमें आगे बढ़ना है, हिन्दी पत्र-पत्रिकाओंके मार्गको प्रशस्त करना है। हमारे सामने अभी अनेकों ऐसी कठिनाइयाँ हैं जिन्हें निकट भविष्यमें दूर करना होगा और अपने संगठनको इतना दृढ़ बनाना होगा कि भावी असुविधाएं हमारे मंगलमय प्रगति पथमें रोड़ा न बन सकें।

विदेशोंमें पत्र पत्रिकाओंको जो स्थान प्राप्त है वहाँ तक पहुँचनेमें अभी हमें वर्षोंकी यात्रा करनी होगी। वहाँ आर्थिक एवं सामाजिक धरातल समुन्नत होनेके कारण प्रत्येक व्यक्तिकी दैनिक आवश्यक वस्तुओंमें पत्र-पत्रिकाओंका भी प्रमुख स्थान है। परन्तु हमारी अवस्था ठीक इसके विपरीत है। शिक्षाके समुचित प्रसार और आर्थिक योग्यताके अभावसे हिन्दी पत्र-पत्रिकाओंके पाठकों और ग्राहकोंकी संख्या इतनी मन्थरगतिसे बढ़ रही है कि उसे सन्तोषजनक नहीं कहा जा सकता। इसका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभाव पत्र पत्रिकाओंकी आर्थिक स्थिति पर भी पड़ रहा है। यही कारण है कि ये अपने कर्तव्य पालनसे भी च्युत दीखते हैं, क्योंकि अपने पास निजी सम्पत्ति न होनेके कारण ये पूंजीपतियों और वर्गविशेषके चंगुलमें बुरी तरह फंसे हुए हैं।

ऐसी दशामें देशके स्वतन्त्र होने पर भी पत्र-पत्रिकाओंकी परतन्त्रता ज्यों की त्यों बनी हुई है। इनके कण्ठ में पूंजीका कफ इस प्रकार बढ़ चला है कि ये जनताके स्वरमें स्वर मिलाकर न तो बोल सकते हैं और न देश तथा समाजकी सच्ची पुकारको ऊपर उठानेमें समर्थ हैं।

इस सङ्कट कालीन परिस्थितिमें भी 'श्रीस्वाध्याय' अपने पथ पर अडिग रहा है। अपने उद्देश्यों एवं विचारोंको यथाशक्ति जनताके सम्मुख सुस्पष्ट रखनेमें सदाकी भांति प्रयत्नशील है। इसका राजनैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक अपना एक विशेष दृष्टिकोण है; जिसके संरक्षणमें वह सदा जागरूक रहा है।

यद्यपि 'श्रीस्वाध्याय' को मासिक बनानेका अभी हमारा शुभ संकल्प पूरा नहीं हुआ है, तथापि अपने त्रैमासिक स्वरूपमें ही उसने देश तथा समाजकी जो कुछ सेवा की है उससे यदि हमारे प्रेमी पाठकों, उदार संरक्षकों एवं सहृदय सहयोगियों की थोड़ी भी मनस्तुष्टि हुई तो हम अपना श्रम सफल समझेंगे।

अत्यन्त हर्ष की बात है कि 'श्रीस्वाध्याय' अपनी कुमारावस्थाके प्रारम्भिक आठ वर्षोंकी अनेक कठिनाइयोंको सहर्ष पारकर आज नौवें वर्षमें पदार्पण करता हुआ आपके कर कमलोंमें सादर समुपस्थित हो रहा है।

'श्रीस्वाध्याय' ने अब तक जो निरन्तर आपकी सेवा की है उसका प्रमुख श्रेय श्री जगदम्बाकी कृपा तथा 'श्रीस्वाध्याय' के जन्मदाता पूज्यपाद श्री १०८ आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराजको ही है; जिनके सतत शुभाशीर्वादोंने इसे आगे बढ़नेका बल तथा साहस प्रदान किया है। पूज्य आचार्यचरणोंकी मंगल-कामना एवं समय समय पर प्राप्त

पावन शुभ सन्देश ही आज उसका जीवनसम्बल हो रहा है । इसमें कोई सन्देह नहीं कि सर्वदाकी भाँति श्री आचार्यचरणोंकी कृपा भविष्यमें भी हमारे पथको आलोकित करती रहेगी ।

'श्रीस्वाध्याय' अपने उन सभी माननीय संरक्षकों और सहायकोंका परम कृतज्ञ है जिनकी उदार सहायतासे अब तक वह अपने कर्तव्य पालनमें सफल रहा है । विशेषतया हम अपने सम्माननीय संरक्षक विद्यानुरागी धर्ममार्तण्ड श्री १०५ मान् बघाटमहीमहेन्द्र महोदयके चिर ऋणी हैं जिन्होंने हमें सर्वविध सहायता प्रदान कर प्रोत्साहित करते रहनेकी महती कृपा की है । हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि श्रीस्वाध्याय सदाकी ही भाँति भविष्यमें भी अपने संरक्षकों सहायकों तथा प्रेमी पाठकोंका कृपापात्र बनकर स्वतन्त्र भारतके अभ्युत्थान एवं अभ्युदयमें सहायक एवं सहयोगी सिद्ध होगा । हम अपने उन विद्वान् लेखकोंको कृपाके भी आभारी हैं जिनकी लेखनीका अमियपान कर 'श्रीस्वाध्याय' निरन्तर अपने मन, प्राण तथा कलेवरको पुष्ट करता रहा है ।

अपने नवमवर्षमें पदार्पणकी इस शुभ वेलामें 'श्रीस्वाध्याय' अपने समस्त सहयोगियों संरक्षकों सहायकों ग्राहकों एवं विद्वान् लेखकोंकी शुभ कामना करता हुआ आशा करता है कि वे भविष्यमें भी सर्वविध सहयोग प्रदान कर इसे देश तथा समाजकी अधिकाधिक सेवा करनेका सुअवसर प्रदान करेंगे ।

इस अंकके सम्बन्धमें

अनेक अनिवार्य कारणोंसे यह 'नववर्षाङ्क' जैसा मैं चाहता था वैसा नहीं बन पड़ा और एक सप्ताह विलम्ब से भी प्रकाशित हो रहा है इसका मुझे महान् खेद है । इन्हीं दिनों आश्विन मासमें घरमें बिमारी और कार्यकर्ताके कारणवशात् पृथक् हो जानेसे मैं सदाकी भांति १५।२० दिन पूर्व छपाई करानेके लिए दिल्ली न पहुंच सका । यद्यपि इस अङ्कका मेटर ४० दिन पूर्व मैंने प्रेसमें भेज दिया था और प्रूफ संशोधनका भार सुहृद्वर श्री पं० जगदीशचन्द्रजी शास्त्री पर छोड़ा था, तथापि प्रेस वालोंकी अनवधानता और शास्त्रीजीको विशेष समय न मिलनेके कारण ४० दिन में केवल ६ फार्म (पृष्ठ १७ से ६४ तक) ही छप सके । उधर विजयादशमी तक 'नववर्षाङ्क' न मिलने से ग्राहकोंकी विकलता बढ़ती गई और कार्यालयमें नित्य अनेकों पत्र तथा तार आने प्रारम्भ हो गये । अतः अब विशेषांक के लिए अधिक विलम्ब करना उचित न समझ तत्काल दिल्ली पहुँच कर केवल ११ फार्म (८८ पृष्टों) में ही इस अङ्क को पूर्ण करके पाठकों तक पहुँचा रहा हूँ । कई सम्मान्य विद्वानोंके लेख और पुस्तक-समालोचनादि जो आवश्यक विषय इस अङ्कमें न जा सके वे आगामी अङ्कोंमें प्रकाशित किये जायेंगे । उपर्युक्त ६ फार्म मेरी अनुपस्थितिमें छपने के कारण इनमें मुद्रण सम्बन्धी कई अशुद्धियाँ भी रह गई हैं, इसके लिए विद्वान् लेखक और पाठक महानुभाव आशा है क्षमा करेंगे ।

यह अङ्क अण्डर पोस्टलसर्टीफिकेटसे

'श्रीस्वाध्याय'का प्रधान कार्यालय दिल्ली न होनेसे यहांका पोस्टआफिस एक दिनमें 'श्रीस्वाध्याय'की १०० से अधिक रजिस्ट्रियां लेता नहीं, अतः यदि सब ग्राहकोंको यह अङ्क रजिस्ट्री से भेजा जाता तो १०-१५ दिन और विलम्ब से मिलता, इस कारण किसी भी ग्राहकको रजिस्ट्रीसे न भेज सबको पोस्टल सर्टीफिकेट रसीद लेकर शीघ्रसे शीघ्र ग्राहकों तक पहुँचानेका प्रयत्न किया है ।

विनीत—

हरदेव शर्मा त्रिवेदी

(सम्पादक और व्यवस्थापक 'श्री स्वाध्याय')

श्रीस्वाध्याय

[शरदङ्क]

स्वराष्ट्रशितां गृह्णीयाच्चिकीर्षुः स्वां समुन्नतिम् ।
दूरदृष्टियया भूत्वा न कदाऽपि विषीदति ॥ [राष्ट्रालोक]

वर्ष ६ | सोजत, आश्विन शु० १० शनिवार सं० २००६ वि० | संख्या १

तत्तद्राष्ट्रे मानवानां व्यवस्थां शोभासम्पच्छालिनीमार्यरीत्या ।
प्रेम्णा लोके स्थापयँस्तत्त्वदर्शी श्रीस्वाध्यायः कल्पतां विश्वभूत्यै ॥
—अ० वा० आचार्य

स्वाध्याय-महिमा

[श्री १०८ आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराज]

शान्तिप्राप्तौ स्वहृदभिमते भुक्तिमुक्ती उभे ते
वांछन्दृष्टा जगति सकलो जीवलोकः स्वभावात् ।
वांछापूर्तिः कथमपि भवेदन्तरा सत्प्रयत्नं
स्वाध्यायोऽयं मनसि सुतरां स्फारयेत्तं प्रयत्नम् ॥१॥
राष्ट्रालोके प्रसृमरगुणौ सर्वतन्त्रस्वतन्त्रे
शान्ते स्वान्ते प्रसरति गतेऽनार्यभावे विनाशम् ।
आनन्दाप्तिर्भवति नियतं वैरिवर्गे विलीने
स्वाध्यायोऽयं प्रथयति जने तत्त्वमेतत्समस्तम् ॥२॥

सम्पादकीय विचार —

वैदिक साहित्यमें कृषिकी महत्ता

"अन्नं बहु कुर्वीत"

हमने अभी-अभी भारतीय स्वतन्त्रता दिवसकी तीसरी जयन्ती गत १५ अगस्तको मनायी है। आजसे दो वर्ष पूर्व शताब्दियोंके निरन्तर तप त्याग तथा बलिदान के पश्चात् हमें इसी दिन विदेशी-शासनसे मुक्ति मिली थी, अतः यह दिन हमारा राष्ट्रिय महापर्व हो गया है। परन्तु इस राष्ट्रिय महापर्वको इसके जन्म दिन १५ अगस्त १९४७ को सवप्रथम जिस उत्साह और लगनके साथ हमने मनाया था उसका षोडशांश उत्साह भी गत तृतीय जयन्ती पर हमें देखनेको नहीं मिला।

आज हमारे देशमें हमसे ही निर्वाचित लोकप्रिय जनप्रतिनिधियोंका शासन है, परन्तु कहना न होगा कि जहाँ यह हमारे लिए आनन्द और सन्तोषका विषय है वहीं अत्यन्त चिन्ता एवं खेदके साथ कहना पड़ता है कि स्वराज्य प्राप्तिके पूर्वकी हमारी सारी आशाएँ आज स्वप्न बन गयीं हैं। और हमारा यह मोहक स्वप्न भी दिनों दिन भग्न होता जा रहा है। इन दो वर्षोंमें यद्यपि हमारी सरकारके सामने अनेकों देशी विदेशी गम्भीर समस्याएँ आई हैं, जिनको देखते हुए उनकी योग्यता एवं नेतृत्व पर अविश्वास करनेका कोई कारण नहीं दीखता, फिर भी इतना तो कहा ही जा सकता है कि हमारे आर्थिकस्तरके सुधारमें जिस मन्थर गतिसे काम लिया जा रहा है वह कथमपि सन्तोषप्रद नहीं है। आज कोटि-कोटि भारतीयोंके कण्ठसे एक ही स्वर निकल रहा है—

"माँग रहा है हिन्दुस्तान, रोटी कपड़ा और मकान।" इस रोटी, कपड़े और स्थान (मकान) की समस्या ऐसी है जिसकी किसी भी देशकालमें उपेक्षा नहीं की जा सकती। कपड़े और स्थान (मकान) की चिन्ता सामयिक है, परन्तु रोटीकी चिन्ता तो नित्यकी अहोरात्रकी चिन्ता है। इस चिन्तासे यथाशीघ्र निकट भविष्यमें सन् १९५१ तक ही मुक्ति पानेकी सतत चेष्टा चल रही है। हमारा खाद्यान्न-विभाग और उसके सचिव नित्य नये उपायोंका अवलम्बन कर देशकी इस वर्त्तमान रोटीसमस्याको सुलझानेका घोर प्रयत्न कर रहे हैं। इसीका एक अङ्ग 'अन्न उपजाओ आन्दोलन' भी है।

इस 'अन्न-उपजाओ' आन्दोलनको सफल बनानेके लिए इधर एक नयी युक्ति अपनायी जा रही है। अनेकों शिक्षण केन्द्रोंमें युक्तप्रांतमें स्वयंसेवकोंको इस सम्बन्धकी आवश्यक शिक्षा दी जा रही है। और सहस्रोंकी संख्यामें यह दल प्रांतभरमें उक्त आन्दोलनका सफल प्रचार करनेके लिए भेजा जायगा। यह भी कहा जाता है कि यह आंदोलन केवल प्रान्तव्यापी ही नहीं, शीघ्र ही देशव्यापी रूप भी धारण करेगा। साथ ही सिंचाईकी सुविधाके लिए ट्यूब-वेलका भी अधिकाधिक प्रचार सरकारी आर्थिक सहयोग द्वारा क्रियात्मकस्वरूप ग्रहण करेगा।

अभिनव वैज्ञानिक खादोंके प्रयोग एवं कृषिके नये साधनों पर भी विशेष जोर दिया जा रहा है। परन्तु यह सारी योजना तभी सफल प्रमाणित होगी जब कृषकोंका अधिक से अधिक सहयोग सरकारको प्राप्त होगा और सरकारी कर्मचारी भी सच्ची सेवाकी बुद्धिसे जनसंपर्कमें आनेका प्रयत्न करेंगे। अन्यथा दोनोंके परस्पर क्रियात्मक योगके बिना कोरा सिद्धान्त बघारने एवं वाचनिक आंदोलनका प्रतिफल कुछ न होगा।

आज सबसे अधिक आश्चर्य तो तब होता है जब हम देशके आयात निर्यातके आंकड़ों पर दृष्टिपात करते हैं तो देखते हैं कि यह विशाल कृषिप्रधान देश भी आज अन्नकी एक बहुत बड़ी राशि प्राप्त करनेके लिए विदेशी राष्ट्रोंके सम्मुख हाथ फैलाये खड़ा है। हम भारतीयोंका कृषिधन ही मुख्य धन रहा है और हमारे गोधनका इससे घनिष्ट सम्बन्ध रहा है। इसीलिए वेदमें "गौर्मे माता वृषभः पिता मे" कह कर गायको माता एवं बैलको पिता रूपमें माना गया है। निश्चय ही हमारी कृषिका एकमात्र

आधार गोधन होनेके कारण हम भारतीयोंकी दृष्टिमें सदा से ही ये माता तथा पिताके समान ही पूज्य रहे हैं। सम्प्रति गोधनका ह्रास भी हमारे कृषिके ह्रासमें प्रमुख कारण है।

कहा जा सकता है कि इस यन्त्रयुगमें गोधनको अब उतना महत्व नहीं दिया जा सकता, जितना उसे इसके पूर्व प्राप्त था। परन्तु ऐसा कहना निरी भूल होगी। जिन्होंने भारतीय कृषि पद्धतिमें हलकर्षणके महत्वका अनुसंधान किया है उनका कहना है कि लोहयन्त्रकी अपेक्षा हल द्वारा भूमिकर्षणसे खेतोंकी उर्वराशक्ति बहुत दिनोंतक समानरूपसे बनी रहती है। और हलोंसे जुते खेतोंमें उत्पन्न अन्नमें पोषकतत्वोंकी अधिकता होती है। यही नहीं यन्त्रों द्वारा फसलोंसे निकाले गये अन्नके दानोंमें उगनेकी शक्ति नहीं होती या कम होती है। इसके विपरीत बैलोंके खुरोंसे कुचलकर निकले दानोंमें उत्पादन शक्ति अधिक होती है। अतः जहाँ विशाल भू-भागमें यन्त्रोंसे खेतीका काम लिया जा रहा है वहाँ भी बैलोंके खुरोंसे बीजोंकी प्ररोहण शक्तिकी रक्षाके लिए दाना निकालते देखा जाता है।

यह अन्न उपजाओ आन्दोलन हमारे लिए कोई नयी वस्तु नहीं है। कृषिप्रधान देश होनेके कारण यह सदा से ही हमारा प्रिय विषय रहा है। मानवजागरणका वह आदि वैदिक युग जो हमारी मानव सभ्यताका उन्नत युग भी कहा जाता है, हमारी कृषि सम्बन्धी जागरूकताका साक्षी है। यजुर्वेदमें हलों द्वारा भूमिकर्षण, बीजवपन एवं फसल के पकने पर उसकी लुनाईके सम्बन्धमें अनेकों मन्त्र पाये जाते हैं, यथा—

"युनक्त सीरा वियुगा तनुध्वं कृते योनौ वपतेह-बीजम्। गिरा च श्रुष्टिः सभरा असन्नोनेदीय इत्सृण्यः पक्वमेयात्॥"

अर्थात् हे कृषकों! हलोंको रस्सीसे जोड़ो और जूवे बैलोंके कन्धों पर फैला दो, हलसे सुन्दर जुते हुए परिष्कृत खेतमें बीज बोओ। वेद मन्त्रोंके पाठ द्वारा फसल उत्तम हो और निकटभविष्यमें ही पकने वाली फसलको काटनेके लिए हमारे हंसुए (दात्री) पहुंचे।

इसी प्रकार एक मन्त्रमें देवताओंसे प्रार्थना करते हुए ऋषियोंने कामना की है कि हमारे हलोंके अग्र भागमें लगे तेज लोहफाल सुखपूर्वक भूमिको जोतें और किसान बहुत ही प्रसन्नताके साथ अपने बैलोंकी सुन्दर जोड़ीके साथ आवें। वरुण तथा आदित्य समय समय पर वर्षा तथा धूपसे सर्दी तथा गर्मी पहुंचाकर हमारी फसलको पुष्ट करें। यथा—

शुनँ सुफाला विकृषन्तु भूमिँ शुनं कीनाशा अभियन्तु वाहैः। शुनासीरा हविषा तोशमाना सुपिप्पला ओषधीः कर्त्तनास्मे।

यजुर्वेदके ही 'लाङ्गल पविरवत्' इस मन्त्रसे जान पड़ता है कि देशकालानुसार आजकी ही भांति वैदिक युगमें बैलों और घोड़ोंसे हल खींचनेका काम लिया जाता था। साथ ही यह भी है कि उन दिनों एक विशेष प्रकारके बकरे भी हल खींचते थे। दूसरे दो मन्त्रोंमें औषधियोंसे फूलफलसे भरी पूरी तथा हृष्ट पुष्ट होनेकी प्रार्थनाके साथ ही यह भी कामना की गयी है कि इन औषधियोंका रस तथा रक्त जिस किसीके अङ्ग प्रत्यङ्ग तथा नसोंमें संचित हो वह नीरोग तथा दीर्घायुः होवे।'

इस प्रकार वैदिक युगमें भी हमारा यह 'अन्न उपजाओ' आन्दोलन ठीक उसी प्रकार चला था जिस प्रकार आज इसको उठाया जा रहा है। उक्त वैदिक मन्त्रोंके विवेचन से यह भी स्पष्ट प्रतीत होता है कि वैदिक कालसे लेकर अब तक हमारी खेतीकी एक ही पद्धति चली आ रही है। युग पर युग बदला, तबके और आजके संसारमें न जाने कितना क्रांतिकारी परिवर्त्तन हो गया है फिर भी क्रांतिकी नित्य नयी उठती लहरोंने हमारी प्राचीन कृषि पद्धतिको हिलाया तक नहीं। वह आज भी अपनी सनातन गतिसे भविष्यको चीरती आगे बढ़ती चली जा रही है।

आज विदेशोंके अनुभवके आधारपर यहाँ भी आधुनिक कृषिके यन्त्रोंसे काम लिया जाने लगा है, परन्तु इसमें कहाँ तक हमें सफलता मिलेगी यह आगे आने वाला समय और पीढ़ी ही बतलायेगी। हाँ, इतना अवश्य कहा जा सकता है कि इस दिशामें वर्त्तमान सरकारने जो भी पग उठाया है वह सराहनीय है। परन्तु इतनेसे ही हमें सन्तोष नहीं कर लेना चाहिए, अपितु जैसे भी हो सके देशको अन्नकी महर्घता और परमुखापेक्षितासे बचाकर शीघ्र ही

स्वावलम्बी बनाना और बनना सरकार का तथा हमारा कर्तव्य है।

अन्नका एक-एक दाना प्राणिमात्रके लिए बहुमूल्य और उपयोगी है। हमें चाहिए कि हम भोजनमें अपनी आवश्यकतासे अधिक अन्नका उपयोग कर उसका दुरुपयोग न करें। हम अपने लिए उतनी ही रोटियां और खाद्य-सामग्री पकावें—जितनेको खाकर स्वस्थचित्तसे अपना भली भांति कार्य कर सकें। पेटको ठूंस-ठूंस कर भरनेसे नाना प्रकारके रोग तो होते ही हैं, अन्नका भी दुरुपयोग होता है। हमें इसका ध्यान रखना चाहिए कि इस प्रकार नियमित आहारसे जो अन्नकी बचत होगी वह किसी हमारे भूखे पड़ौसी भाईकी उदर ज्वालाको शान्त कर उसकी प्राण रक्षा कर सकेगी।

सर्वदा स्वस्थ रहने और अपनी कार्य क्षमताको अक्षुण्ण बनाए रखनेके लिए ही आयुर्वेदमें पेटके आधे भागको अन्नसे, एक चौथाईको जलसे भर कर दूसरे चौथाई भागको वायु संचारके लिए खाली रखनेके लिए आदेश है। प्राचीन महर्षियोंने शारीरिक स्वास्थ्य तथा अन्नकी बचत और सदुपयोगके लिए ही भारतीय संस्कृतिमें व्रत तथा नियमित उपवास पर विशेष जोर दिया है। नियमित व्रत तथा उपवास हमारी आध्यात्मिक तथा शारीरिक शक्तिको बढ़ानेमें सहायक होते हैं। उनसे कथमपि हानि की आशंका नहीं की जा सकती।

आज अन्नकी अधिकाधिक उपजके साथ ही उसके सदुपयोग और बचतकी ओर भी जनताका ध्यान आकृष्ट करना आवश्यक है। किसी भी प्रकार सुरक्षित अन्नका एक-एक दाना समय पर वह काम कर सकता है जो मोतियोंके दानोंकी राशिसे भी सम्भव नहीं। अतः भूमिके चप्पे-चप्पेका अन्न उपजानेमें उपयोग होना चाहिए। कोई भी सरकारी या गैरसरकारी भूमिका टुकड़ा ऐसा नहीं होना चाहिए जहां हरी-भरी लहलहाती फसल न खड़ी हो।

तैत्तिरीयोपनिषदमें अन्नकी महिमा गायी गयी है। यथा—

अन्नाद्वै प्रजाः प्रजायन्ते। याःकाश्च पृथिवी ँ श्रिताः अथो अन्नेनैव जीवन्ति। अथैनदपि यन्त्यन्नतः। अन्नं हि भूतानां ज्येष्ठम्। तस्मात्सर्वौषधमुच्यते।

अर्थात् अन्नसे ही पृथ्वीके आश्रित सभी प्राणियों की उत्पत्ति होती है। सभी अन्नसे ही जीते हैं और अन्न में विलीन भी हो जाते हैं। सृष्टिके आदिमें प्राणीमात्र का जीवन हेतु सर्वप्रथम अन्न उत्पन्न हुआ अतः वही सर्वश्रेष्ठ है। और इसी कारण सबके प्राणकी क्षुधा ज्वालाको शान्त करनेसे उसको औषध कहा जाता है।'

अन्नकी महिमामें उसे "अन्नं वै ब्रह्म" अर्थात् ब्रह्म तक भी कहनेमें कोई हिचक नहीं की गयी है। अन्नकी इस गौरवगाथा और उपयोगिताके प्रतिपादनके साथ ही तैत्तिरोपनिषदमें अन्ततोगत्वा कहा गया है कि—

अन्नं बहु कुर्वीत। तद् व्रतम्।

अर्थात् 'अन्न अधिक बढ़ाओ, यही तुम्हारा व्रत होना चाहिए।'

इसी प्रकार कौटिल्यअर्थशास्त्रमें विद्यासमुद्देश प्रकरण में आन्वीक्षिकी, त्रयी, वार्ता और दण्डनीति चार प्रकारकी विद्याएं बतलायी गयी हैं। इनमेंसे तीसरी वार्त्ता नाम की विद्या कृषि, गोपालन तथा व्यापारके सम्बन्धमें थी। उसकी टीकासे कृषि पर महर्षि पराशरकी, गोपालन पर महर्षि गौतम तथा शालिहोत्रकी तथा व्यापार पर महर्षि जनककी लिखित पुस्तक का पता चलता है, परन्तु खेद है कि आज ये पुस्तकें समुपलब्ध नहीं हैं।

महर्षि वात्स्यायन कृत कामसूत्रमें भार्याधिकरण प्रकरणमें स्त्रियोंके कार्यक्षेत्रकी चर्चामें कृषि तथा बागवानी भी एक प्रधान विषय है। यथा—

'परिपूतेषु च हरितशाकवप्रानिक्षुस्तम्बाञ्जीरकसर्षपाजमोद शतपुष्पातमालवृक्षांश्च कारयेत्।' ....
कृषिपशुपालन चिन्ता वाहन विधानः योगाः।

अर्थात् स्त्री को गृहोद्यानके सुन्दर जुते खेतमें हरेशाको की क्यारी तैयार करनी चाहिये। ईखके पौदे, जीरा सरसों अजमोद, सौंफ और तमाल वृक्ष लगाना चहिए। तथा कृषि और पशुपालनकी चिन्ताके साथ सवारी का भी ध्यान रखना चाहिए।

इससे जान पड़ता है कि स्त्रियोंका प्राचीन कालमें खेती, बागबानी तथा पशुपालनमें प्रधान भाग होता था। आज भी जहाँ पर्देकी प्रथा नहीं है स्त्रियां इसमें यथोचित भाग लेती हैं।

इस भांति हमारे कृषिप्रधान देशमें सदा 'अन्न उपजाओ' आन्दोलन समान रूपसे चलता रहा है। आज जब देशमें घोर अन्नसंकट उपस्थित है और सरकार निकट भविष्यमें इसे दूर करनेके लिए कृतसंकल्प है तो हमारा कर्तव्य हो जाता है कि हम फिर एक बार आसेतु हिमाचल पर्यन्त 'अन्नं बहु कुर्वीत' इस प्राचीन वैदिक सन्देशको घर-घर पहुँचा कर देशको उक्त संकटसे बचावें।

इसी अंकमें हम भाई श्री चूड़रमल्लजी मुआलका 'अन्नकी विषम समस्या' शीर्षक लेख प्रकाशित कर रहे हैं। उस लेखकी ओर भी हम अधिकारियों और पाठकोंका ध्यान आकर्षित करते हैं। भाईजीने सप्ताहमें एक दिन खाद्यदिवस (Food Day) निश्चित करके अन्न बचत की जो योजना रक्खी है उससे हम पूर्ण सहमत हैं, किंतु 'खाद्य-दिवस' की अपेक्षा हम उसे 'उपवास या व्रत-दिवस' कहना अधिक उपयुक्त समझते हैं। और व्रतोपवासके ये दिन हमारे महर्षियोंने पहले ही निश्चित कर रक्खे हैं। प्रतिमासकी दोनों एकादशीको निराहारव्रत और अमावस्या, पूर्णिमा तथा दोनों प्रदोषको एकाशन व्रत (एक बार भोजन) करना जहाँ अक्षयपुण्य, पारमार्थिक लाभ और स्वास्थ्यप्रद है, वहाँ वर्तमान अन्न समस्याको सुलझानेमें भी बहुत सहायक सिद्ध होगा। भारत अपने प्रचीन सनातन मार्ग को अपना कर ही शाश्वत शान्ति प्राप्त कर सकता है।

भारतीय ज्योतिर्विज्ञान

ज्योतिष एक प्रत्यक्ष फलदायक शास्त्र है। इस शास्त्र का सृष्टिके आदि कालमें ही भारतीय महर्षियोंने आविष्कार किया था; इस विद्याके चमत्कारको न केवल भारतवर्षने ही अपितु सारे संसारने माना है। आजके पश्चिमीय देशोंने तो इस शास्त्रका अवलम्बन लेकर एक अपूर्वनाम कमाया है। जर्मनी जापान और इंग्लैण्डमें इस शास्त्र पर अनुसन्धान करनेके लिये बड़े-बड़े वेधालय बने हुए हैं; ग्रीन्विचकी संसारप्रसिद्ध वेधशालाको कौन नहीं जानता ? वहाँ तो इस शास्त्रको लोग अध्ययनका एक मुख्य विषय समझते हैं, तथा वहाँकी सरकार और जनता दोनों ही इस शास्त्रके अनुशीलन एवं अनुसन्धानमें पूर्ण सहायता देते हैं। पर खेदका विषय है कि जिस देशमें यह विद्या उत्पन्न हुई और जहांके महर्षियोंने इस विज्ञान को लोकोपयोगी बनाया वहाँ-इसका समुचित सम्मान तो दूर रहा— प्रत्युत न तो वहाँकी जनता ही इस ओर कुछ ध्यान देती है और न वहाँकी सरकार ही इस विज्ञानके अनुशीलन व अनुसन्धानकी ओर कुछ प्रोत्साहन देती है। कितना आश्चर्य है।

प्राचीन समयमें इस विद्याका यहाँ पूर्ण प्रचार था। बड़े-बड़े राजा महाराजा इस विज्ञानकी उन्नतिमें सब प्रकार की सहायता देते थे। मुगलसम्राट भी हिंदू ज्योतिषियोंका पूर्ण आदर करते थे, तभी हमारे यहाँ भास्कर आर्यभट्ट और वराहमिहिर सरीखे विद्वान् ज्योतिषी हुआ करते थे, जिनकी निर्भ्रान्त ज्यौतिष गणनाके द्वारा बतलाये गये भूत भविष्य वर्तमान फलादेश शतप्रतिशत अक्षरशः मिला करते थे। भारतवर्ष परतन्त्र हो जानेसे इस विज्ञान की भी विशेष अवनति हुई। जहाँ और देशोंने अपनी शक्तिको कला कौशल ज्ञानविज्ञान आदिके प्रसारमें लगाया वहां परतन्त्र भारतीय इस शास्त्रकी महत्ताको भी भूल बैठे। इधर समयानुसार इस शास्त्रके समुचित अध्ययन, अध्यापन एवं आनुसन्धानिक कार्योंकी समुचित व्यवस्थाके अभावसे अनेक अधकचरे पण्डितनामधारी नक्षत्रसूचियोंने इस शास्त्रको अपनी जीविकाका आधार बना, लोगोंको अनेक प्रकारके प्रपञ्च फैलाकर ठगना भी प्रारम्भ किया, जिससे जनताकी इस शास्त्रके विशेष कर फलित विभागसे श्रद्धा उठती गई। परिणामतः इस शास्त्रकी जो दुर्दशा हुई और हो रही है वह सर्वविदित ही है। अस्तु!

किन्तु यह सब जो हुआ सो हुआ। उस समय हम परतन्त्र थे, न हमारी अपनी सरकार ही थी और न हमें अपने शास्त्रों पर ही विचार करनेको समय मिलता था। उस समय तो केवल एकमेव स्वतन्त्रता प्राप्ति ही हमारा उद्देश्य था। पर अब स्वतन्त्र होनेके अनन्तर हमें आवश्यक है कि हम अपने ज्योतिर्विज्ञानको भी उन्नत बनाएँ। ज्यौतिष ही एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा हम भूत भविष्य और वर्तमानका पूर्ण विवरण जान सकते हैं। जबकि गणित द्वारा बताया गया सूर्य और चन्द्रमाका उदय एवं अस्त तथा ग्रहण होना ठीक मिल जाता है तब कोई कारण नहीं कि समुचित साधनों द्वारा अनुसन्धान एवं यहांके सूक्ष्म विमर्श द्वारा

बतलाया गया फल पूर्णरूपेण न मिले। आज स्वतन्त्र भारतके अपने हवाई एवं समुद्री जहाज होने पर भी उनके चलानेके लिए हमें ग्रीन्विचके 'नाटिकल-अल्मनाक' की ही शरण लेनी पड़ती है। इसके अतिरिक्त वर्षा और वायु का परिज्ञान तक करनेके लिए जब हमें विदेशी यन्त्रोंके लिये परमुखापेक्षी होना पड़ता है तब हमारी स्वतन्त्रता कैसी? यदि हम अपने ज्योतिर्विज्ञानको उन्नत कर लें तो हमें यह जो बात-बातमें परमुखापेक्षी बनना पड़ता है न बनना पड़े। आज देशको उन्नत करनेके लिए अनेकों योजनाएं बन रही हैं—पर भारतीय ज्योतिष-शास्त्रको समुन्नत एवं अधिकाधिक लोकोपयोगी बनानेकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है, यह कितने खेदकी बात है। हम मानते हैं कि आज कुछ अंशमें फलित ज्योतिष पर किये गये विचार एवं भविष्यवाणियां यथार्थमें नहीं मिलती, पर इतनेसे ही कारणसे हम ज्योतिषको छोड़ भी तो नहीं सकते। हमें उन कारणोंको पहले खोजना तो आवश्यक ही होगा। जिस प्रकार वैद्य या डाक्टरों द्वारा टी० बी० जैसे रोगोंकी सुनिश्चित औषधि न मिलने पर भी सरकार आयुर्वेदिक एवं डाक्टरी चिकित्सा पद्धतिको उन्नत करनेके लिए प्रयत्न कर रही है उसी प्रकार इस शास्त्रकी उन्नतिके लिये थोड़ा-सा भी ध्यान दे तो बहुत कुछ भ्रम निराकरण हो सकता है। जब तक ज्यौतिश्शास्त्र के फलितविभागका पूर्ण परीक्षण न हो जाय तब तक इसको सत्य या असत्यका शंकास्पद रूप दे देना निरा भ्रम ही होगा। अतः आवश्यकता है कि आज सब लोग इस शास्त्रके विज्ञानको विद्योतित करनेका प्रयत्न करें। यह विज्ञान न तो किसी धर्म एवं जाति विशेषका ही है और न किसी वर्ग विशेषका ही—क्योंकि इसमें जैन, मुसलमान अंग्रेज आदि सभी जातियोंने अनुसन्धान किया है और मुसलमानोंको तो इस महान् उदार शास्त्रने 'आचार्य' (यवनाचार्य) तकका पद दे दिया है—अतः यह मानव-मात्रके लिए कल्याणकारी भारतीय विज्ञान शास्त्र है। इसको समुन्नत करनेकी शुभ भावनासे ही गत ८ वर्षोंसे 'श्रीस्वाध्याय' सतत यत्न कर रहा है; किन्तु इस अल्प प्रयाससे वास्तविक कार्य नहीं हो सकता। जब तक ज्योतिष विषयका कमसे कम विश्वविद्यालय (यूनिवर्सिटी) एवं ग्रीन्विचके समान वेधालय न बन जाय तब तक इसकी पूर्ण उन्नति होना कठिन ही नहीं असंभव भी है। पर इन सबके लिए प्रचुर व्ययकी आवश्यकता है। अपरिपक्व शास्त्र एवं ज्यौतिषियोंकी आर्थिक स्थितिका संकटापन्न होना एवं राज्याश्रयसे रहित होना ही इस शास्त्रकी अवनतिके मुख्य कारण हैं। अतः इन सबको यथासाध्य दूर करनेके लिए सर्वसाधारण जनता जनार्दनसे हमारी प्रार्थना है कि वह तन मन धनसे हमें पूर्ण सहयोग एवं सहायता दें। साथ ही हमारी सरकार से भी प्रार्थना है कि वह इण्डियन मैट्रोलोजिकल डिपार्टमैंटके नाम पर जहां लाखों रुपयेका प्रतिवर्ष व्यय कर केवल तीन दिन पूर्वकी ही वर्षा एवं वायु की सूचना प्राप्त करती है—वहां यदि वह पहले और कुछ न कर सके तो उस विभागके साथ ही एक 'भारतीय ज्यौतिष विभाग' स्थापित करके हमें थोड़ी बहुत ही सुविधा दे जिससे हम छः मास पूर्व ही वर्षा, वायु सम्बन्धी सूचनाएं परीक्षार्थ देकर यह सिद्ध कर सकें कि ज्यौतिःशास्त्र वास्तवमें कितना उपयोगी है। यदि हमारा यह प्रायोगिक परीक्षण सफल माना जाय तो सरकारको तुरन्त ही इस ओर ध्यान देना आवश्यक होना चाहिए। आशा है, हमारी राष्ट्रिय-सरकार एवं भारतीय जनता हमारे इस निवेदन पर उचित ध्यान देकर ज्यौतिष विद्याके पुनरुद्धार कार्य में हमारा सहयोग कर अनुगृहीत करेगी।

जीवनका लक्ष्य

ले० – श्री जगदीशचन्द्रजी प्रभाकर

समयके प्रभावसे प्रभावित होकर अधिकतर संसारियोंकी प्रवृत्ति धनोपार्जनकी ओर ही पाई जाती है। यही लक्ष्य उनके सामने है। इसीके लिए वे हाय-हाय कर रहे हैं। मरण पर्यन्त भरसक प्रयत्न इसी लक्ष्यके लिए किया जाता है। संतान उत्पत्तिके लिए चिंतित रहते हैं। सन्तान आज्ञाकारी न होने पर दुःख प्राप्त होता है। वृद्ध हो जाने पर गाढे पसीनेकी और अनेक दुःसाधनों द्वारा कमाई हुई लक्ष्मीका स्वेच्छानुसार प्रयोग न होते देखकर चित्त दुखित होता है। यदि कोई सज्जन प्रभु प्रेमके लिए प्रेरणा करता भी है तो कह दिया जाता है 'जवानी कमाने के लिए है महाराज! वृद्धावस्थामें प्रभु प्रेम भी देखा जाएगा'। परिणाम क्या होता है? पता नहीं लगता वृद्धावस्था कब आ गई। धन लिप्सा प्रतिदिन बढ़ती जाती है। रोग ने आ घेरा। दांत विसर्जित हो गए। दृष्टि भी मन्द पड़ गई। सुनना भी कम हो गया। खाँसीके साथ कफ खूब निकलने लग गया। उधर पुत्र पौत्र घृणा करते हैं। बूढ़ेकी आज्ञाको नहीं सुनते। पुत्रवधूकी प्रेरणासे वृद्धजीका स्थान ड्योढ़ीमें निश्चित हो जाता है। मृत्तिका पात्रमें ही भोजन आदिकी व्यवस्था है। डर है कि सारा परिवार ही कहीं रोगी न बन जाए। वृद्ध महाशयके रोग कीटाणुओंसे डर लगता है। बच्चोंको कहा जाता है 'देखना बुड्ढेके पास मत जाना।' किसी काममें वृद्धजीकी सलाह नहीं ली जाती। प्रातः ईश्वरसे प्रार्थना की जाती है कि—'प्रभो! वह मुहूर्त्त कब आयेगा जब यह बूढा यमराजका अतिथि बनेगा और सब सम्पत्ति पर पूर्ण अधिकार हमारा होगा!' ऐसी स्थितिमें पाठक महोदय अनुमान कर सकते हैं कि प्रभुप्रेम वृद्धावस्थामें किस प्रकार हो सकता है। प्रत्येक कार्य यौवन ही में सम्भव है।

जीवका कल्याण उसी समय है जब वह परमात्मामें लीन हो जाय। वास्तवमें जीव और परमात्माके रूपमें कोई भेद नहीं। भेद केवल इतना है कि जीव सीमित है, परमात्मा असीम। जीवको यदि पात्रका जल मान लें तो परमात्मा असीम समुद्रका जल है। दोनोंका रूप (जल) एक ही है। जीव क्षुद्र है परमात्मा अपार। जीवका परमात्मरूपमें लय ही मोक्ष कहलाता है। इसीके लिए हमारे पूर्वज कटिबद्ध रहे हैं और भगवान्‌के कैवल्य धाम को विभिन्न साधनों द्वारा प्राप्त किया है। वही साधन उन्हीं ग्रन्थोंके रूपमें प्रस्तुत किये और हम जैसे अल्पज्ञोंके लिए मार्ग प्रशस्त कर दिये। पंडित लोग वाद-विवाद करते हैं कि अमुक साधन ठीक है अमुक मिथ्या। यह उनकी बुद्धि का दोष है। संकुचित बुद्धि वाले व्यक्ति ही इस प्रकार सोचते हैं। वास्तवमें सभी मार्ग उस एक ईश्वरको ही प्राप्त करनेके हैं।

जीवका परमात्मामें मेल हो जाना ही मोक्ष कहलाता है। जैसे श्रीयाज्ञवल्क्यजी लिखते हैं—

संयोगी योग इत्युक्तो जीवात्मपरमात्मनोः।

मोक्ष अर्थात् भगवत्प्राप्तिके निमित्त जो भी साधन किया जाय वही योग कहलाता है। इस प्रकारका साधन किए बिना सम्भव नहीं कि मनुष्य मात्रका कल्याण हो जाय। उसे ८४ के चक्रसे छुटकारा मिलना असम्भव है। इसके लिए प्रत्येक प्राणीको आत्मकल्याणके लिए कटिबद्ध हो जाना चाहिए और यथाशक्ति इस पथ पर अग्रसर होना चाहिये। इस पथ पर आरूढ़ हुआ साधक कभी नष्ट नहीं होता। ईश्वरकी शक्ति उसकी पग-पग पर सहायता करती है, पर उस स्थितिमें जब साधक सरल हृदयका हो जाता है, अपना सब कुछ ईश्वर ही को समझ लेता है। सब कुछ करता उसी परम पिताके लिए है। अपना अस्तित्व नहीं मानता और इस प्रकार अहंकारको उस परमेश्वरमें समाप्त कर देता है। अपनी एक मात्र गति उसे ही समझता है।

साधककी सहायता अनेक सिद्ध योगी लोग भगवत्प्रेरणासे किया करते हैं। अनेक शक्तियाँ ध्यानावस्थामें उसको मार्ग दिखाती हैं। मालाके मनके गिनने और

जीवनका लक्ष्य

ले० — श्री जगदी... ाकर

समयके परिस्थिति प्रायःन ोकर अ ...
संसारि ...
यही ...
कर ...
किय ...
सन्त ...
हो ...
कम ...
चिर ...
प्रेरण ...
के ...
देख ... या होता है ? पता नहीं लगता
वृद्ध ... आ गई। धन लिप्सा प्रतिदिन बढ़ती जाती है। रोग ने आ घेरा। दांत विसर्जित हो गए। दृष्टि भी मन्द पड़ गई। सुनना भी कम हो गया। खाँसीके साथ कफ खूब निकलने लग गया। उधर पुत्र पौत्र घृणा करते हैं। बूढ़ेकी आज्ञाको नहीं सुनते। पुत्रवधूकी प्रेरणासे वृद्धजीका स्थान ड्योढ़ीमें निश्चित हो जाता है। मृत्तिका पात्रमें ही भोजन आदिकी व्यवस्था है। डर है कि सारा परिवार ही कहीं रोगी न बन जाए। वृद्ध महाशयके रोग कीटाणुओंसे डर लगता है। बच्चोंको कहा जाता है 'देखना बुड्ढ़ेके पास मत जाना।' किसी काममें वृद्धजीकी सलाह नहीं ली जाती। प्रातः ईश्वरसे प्रार्थना की जाती है कि— 'प्रभो ! वह मुहूर्त्त कब आयेगा जब यह बूढ़ा यमराजका अतिथि बनेगा और सब सम्पत्ति पर पूर्ण अधिकार हमारा होगा !' ऐसी स्थितिमें पाठक महोदय अनुमान कर सकते हैं कि प्रभुप्रेम वृद्धावस्थामें किस प्रकार हो सकता है। प्रत्येक कार्य यौवन ही में सम्भव है।

जीवका कल्याण उसी समय है जब वह परमात्मामें लीन हो जाय। वास्तवमें जीव और परमात्माके रूपमें कोई भेद नहीं। भेद केवल इतना है कि जीव सीमित है, परमात्मा असीम। जीवको यदि पात्रका जल मान लें तो ... दका जल है। दोनोंका रूप (जल)
... मा अपार। जीवका पर-
... ता है। इसीके लिए
... भगवान्के कैवल्य धाम
... या है। वही साधन उन्हीं
... न जैसे अल्पज्ञोंके लिए
... लोग वाद-विवाद करते
... क मिथ्या। यह उनकी
... द्र वाले व्यक्ति ही इस
... मार्ग उस एक ईश्वरको

विनीत—
गनपतलाल व्यास
सेवानिवृत्त अतिरिक्त निदेशक शिक्षा (विभाग)
A-46, रणजीत नगर, भरतपुर
✆ : 25156

जीव... ाना ही मोक्ष कहलाता है। जैसे श्री... लिखते हैं—

संयोगी योग इत्युक्तो जीवात्मपरमात्मनोः।

मोक्ष अर्थात् भगवत्प्राप्तिके निमित्त जो भी साधन किया जाय वही योग कहलाता है। इस प्रकारका साधन किए बिना सम्भव नहीं कि मनुष्य मात्रका कल्याण हो जाय। उसे ८४ के चक्रसे छुटकारा मिलना असम्भव है। इसके लिए प्रत्येक प्राणीको आत्मकल्याणके लिए कटिबद्ध हो जाना चाहिए और यथाशक्ति इस पथ पर अग्रसर होना चाहिये। इस पथ पर आरूढ़ हुआ साधक कभी नष्ट नहीं होता। ईश्वरकी शक्ति उसकी पग-पग पर सहायता करती है, पर उस स्थितिमें जब साधक सरल हृदयका हो जाता है, अपना सब कुछ ईश्वर ही को समझ लेता है। सब कुछ करता उसी परम पिताके लिए है। अपना अस्तित्व नहीं मानता और इस प्रकार अहंकारको उस परमेश्वरमें समाप्त कर देता है। अपनी एक मात्र गति उसे ही समझता है।

साधककी सहायता अनेक सिद्ध योगी लोग भगवत्प्रेरणासे किया करते हैं। अनेक शक्तियाँ ध्यानावस्थामें उसको मार्ग दिखाती हैं। मालाके मनके गिनने और

नाम उच्चारण ही से भगवान्‌का सान्निध्य प्राप्त होना कठिन है। एकाग्रताकी आवश्यकता है। कबीर जी कहते हैं—

माला तो करमें फिरे जीभ फिरे मुख माहिं।
मनवा तो चहुं दिश फिरे ये तो सुमिरन नाहिं॥

सांसारिक पाठशालामें बैठा हुआ विद्यार्थी जब एकाग्र वृत्तिसे पाठ सुने बिना कुछ ग्रहण नहीं कर सकता तो क्या सम्भव है कि प्रभु प्राप्तिके मार्ग पर चलने वाला योगी व्यभिचारिणी वृत्तिके द्वारा कुछ प्राप्त कर सकता है? कदापि नहीं।

ईश्वर चिन्तन बुद्धिसे परेका विषय है। बुद्धि द्वारा तर्क वितर्क करके भगवद्‌प्राप्ति नहीं हो सकती। बुद्धिका विषय न होनेके कारण ही उसका रूप अनिर्वचनीय बतलाया गया है। कारण कि हम जिस विषय पर बुद्धिसे विचार कर सकते हैं, उसीके सम्बन्धमें कुछ कर भी सकते हैं। उसका रूप अनुभवसे सम्बन्ध रखता है, वर्णनसे नहीं। इसलिए पाठक महोदयों! यदि आत्मकल्याणकी इच्छा हो तो आज ही से प्रतिज्ञा कर लो और अपने जन्म-दाता और जिसने हमारे ऊपर इतने उपकार किये हैं, कृतज्ञता प्रकट करते हुए, उसीका सब कुछ समझते हुए अपने आपको उसीमें समाप्त करनेका साधन आरम्भ करदें।

पुस्तकोंको केवल पढ़ कर रख देना ही श्रेयस्कर नहीं, या उनको नमस्कार करके पाठमात्र कर लेना ही पर्याप्त नहीं। उन्हें धूप दीप आदि देना ही कल्याण नहीं कर देगा। कल्याण होगा तब, जब उन्हें ध्यानपूर्वक श्रद्धा और विश्वास सहित पठन करके उनका शंका रहित मनन किया जायगा। मनन ही पर्याप्त नहीं, उन बातोंको जीवन में धारण करना पड़ेगा। हमारे धर्मग्रन्थोंसे पश्चिमने लाभ उठाया और हम उनके या तो पुजारी ही बने रहे या निन्दक। यही हमारे पतनका कारण है। आध्यात्मिक विषयमें हमारा देश जो किसी समय अग्रज था, अब शून्य प्राय है। यह नहीं कि योग विद्याके खिलाड़ी अब हैं नहीं। हैं, परन्तु वेशमें नहीं। मैंने तो आज तक भगवाँ वेषमें संसार ही में आसक्त व्यक्ति देखे। यदि कोई साधक मिला तो वह गृहस्थ ही में। वे व्यक्ति अपूर्व होते हैं, सरलता उनका आभूषण, नम्रता उनकी सुन्दरता, कम बोलना और एकान्त वास उन्हें प्रिय होता है। वे अपने व्यक्तित्व को स्पष्ट नहीं करते, कोई पहचान ले तो अलग बात है। वे जो कुछभी करते हैं, अनासक्तिसे। यह हैं कुछ लक्षण जिनके द्वारा वे महोदय पहचाने जा सकते हैं। वही मार्ग दिखाने में समर्थ हो सकते हैं।

पातञ्जलिने योगकी व्याख्या इस प्रकार की है—

'योगश्चित्तवृत्तिनिरोध:।'

(पातञ्जल समाधिपाद २)

अर्थात् चित्तकी वृत्तियां सदा संसारके क्षणभंगुर सुखोंकी खोजमें बाह्य जगत्‌में विचरती रहती है। उन्हें रोककर अन्तर्मुखी कर लेना और ईश्वर खोजमें लगा देना ही योग है।

यदि योगका अभ्यास करना अभीष्ट हो अर्थात् अपने आपको वास्तविक मनुष्य बना कर उस अचिन्त्य प्रभुकी खोज करनी हो याने जीवन मरणके चक्रसे मुक्त होना हो तो योगकी साधना अथवा अभ्यास करना चाहिए। यदि इस जन्ममें सफलता प्राप्त न हुई तो अगले जन्ममें सही। योगारूढ व्यक्ति अवश्य सफल होता है। हो क्यों न? प्रभु की कृपाका हाथ सदैव इसके सिर पर रहता है, अर्जुन इस सम्बन्धमें भगवान्‌से प्रश्न करता है:—

अयति: श्रद्धयोपेतो योगाच्चलित मानसः।
अप्राप्य योग संसिद्धिं कां गतिं कृष्ण! गच्छति?

(गीता६।३७)

हे कृष्ण! योगसे चलायमान हो गया है मन जिसका, यत्न जिसका शिथिल हो गया है ऐसा श्रद्धायुक्त (योगी) योग सिद्धिको न प्राप्त होकर किस गतिको प्राप्त होता है?

भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुनको नहीं वरं हम लोगोंके संशय छेदनके निमित्त उत्तर देते हैं—

प्राप्य पुण्य कृतान् लोकानुषित्वा शाश्वतीः समाः।
शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते॥
अथवा योगिनामेव कुले भवति धीमताम्॥

(गीता ६।४१)

ऐसा योगी (साधक) जो अपने जीवनमें साधना समाप्त न कर सका अर्थात् मार्गसे विचलित हुआ (योगभ्रष्ट) स्वर्ग आदि पुण्य लोकोंका भोग करके शुद्ध आचरण वाले धनवान् घरमें जन्म लेता है, अथवा ऐसे कुलमें जन्म लेता है जिसमें योगी लोग जन्म लेते हैं।

इस पथ पर चढ़नेकी देर है, सफलता अवश्यम्भावी है। योगके निम्नलिखित अंग हैं—
(१) यम (२) नियम (३) आसन (४) प्राणायाम (५) प्रत्याहार (६) धारणा (७) ध्यान (८) समाधि। यथा—

यमश्च नियमश्चैव आसनञ्च तथैव च।
प्राणायामस्तथा गार्गि! प्रत्याहारश्च धारणा।
ध्यानं समाधिरेतानि योगाङ्गानि वरानने!॥
(योगि याज्ञवल्क्य)

यम, नियम, आसन और प्राणायाम हठयोग कहलाते हैं और उत्तर कथित चार राजयोग कहलाते हैं।

यम

जिस प्रकार किसी भूमिमें बीज बोनेसे प्रथम उस भूमिमें भली प्रकार हलचलाने सुहागा फेरने और खाद डालनेकी अर्थात् उस भूमिकी उपजाऊ शक्ति बढ़ानेकी आवश्यकता होती है, ठीक उसी प्रकार यम नियमादि पालन भी योगीके लिए अनिवार्य हैं। इसके बिना यदि अभ्यास किया जायगा तो ऐसे ही होगा जैसे मरूभूमिमें बोया हुआ बीज।

यम पांच हैं—अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, और अपरिग्रह। इनका वर्णन निम्नकी पंक्तियोंमें किया जाएगा—

अहिंसाः—किसी भी जीवको मनसे वाणी अथवा कर्मसे पीड़ा न पहुंचानेको अहिंसा कहते हैं। प्रत्येक जीवको अपना मित्र समझो। द्वेषका हृदयस्थलसे उन्मूलन कर दो। इस साधनाके लिए "आत्मवत् सर्वभूतेषु" प्रवृत्तिकी धारणा करना लाभकारी है। जीव मात्रको अपने जैसा ही समझो। जिस बात या कामसे तुम्हें दुःख होता है उस वाणी या कामका दूसरों पर प्रयोग मत करो। ऐसा करनेसे शांति बढ़ेगी और यहां तक कि संसारी जीव भी मैत्रीभाव रखने लगेंगे वे चाहे कितने ही भयानक क्यों न हो। ऋषियोंके आश्रमोंमें सिंह गाय और पशु-पक्षियोंका एकत्र रहना इसी साधनाका फल है।

सत्यः—किसी बातको, जिस प्रकार वह देखी गई, सुनी गई, या अनुभव की गई हो, उसी प्रकार यथार्थ रूपमें बिना परिवर्तन किए निरूपण कर देनेको सत्य कहते हैं। "ईश्वर ही केवल सत्य है" ऐसी धारणा रखना सत्य है। अन्तःकरण शुद्ध करनेका एकमात्र साधन है। जो उथल-पुथल चित्त वृत्तिको एकाग्र करनेमें बाधक होती है उन्हें जड़से उखाड़ फेंकनेमें यह साधन रामबाण है। "सत्य" साधनासे मनुष्यके अन्तःस्थलमें सत्यका सञ्चार हो जायगा और उस सत्यस्वरूप जगन्नियन्ता जगदाधारके आसन जमानेके लिए उपर्युक्त स्थान बन जायगा।

अस्तेयः—किसी निषिद्ध रीतिसे किसीका द्रव्य हरण न करना अस्तेय कहलाता है। "परद्रव्येषु लोष्टवत्" वृत्तिसे काम लेना चाहिए। जो पराई वस्तु है उसे मिट्टीके समान समझो। अपनी झोंपड़ीमें ही संतोष रक्खो। दूसरेके महल को लालायित दृष्टिसे देखकर द्वेषाग्नि प्रज्वलित करके मत अपना नाश करो। इसका परिणाम यह होगा कि महल बनाने की लिप्सा तुम्हें कपट, झूठ, धोखा करने पर वाध्य कर देगी जो तुम्हारे मार्गमें बाधक ही नहीं अपितु मार्गच्युत-कारक भी हैं।

ब्रह्मचर्यः—ब्रह्म=आत्मा, चर्य=आचरण करना। आत्माके लिए आचरण करना ब्रह्मचर्य है। आचरणके लिए शरीरका स्वस्थ होना आवश्यक है। सब प्रकार शरीरको स्वस्थ रखना अनिवार्य है। शरीर यदि रोगी होगा तो प्रतिदिन बाधाएँ उपस्थित रहेंगी और साधनामें बाधा पड़ेगी। यदि साधक गृहस्थी है तो उसे केवल संतानोत्पत्तिके लिए ही विषयभोग करना चाहिए, इंद्रिय तृप्तिके लिए नहीं। जितना अधिक वीर्य शरीरमें होगा उतना ही संयम भली प्रकार हो सकेगा। इन विचारोंको दृष्टिगत रखकर ब्रह्मचर्यका पालन करना चाहिए, अथवा साधन करना चाहिये।

अपरिग्रहः—व्यर्थ वस्तुओंमें, या बातोंमें चित्त विक्षिप्त न करके प्रमाद आलस्य तथा संशयको न बढ़ाना अपरिग्रह है। तर्क-वितर्क नहीं करना चाहिए। व्यर्थ हँसी मखौलमें समय नहीं खोना चाहिए।



अन्नकी विषम-समस्या

लेखकः—श्री चूहरमल्लजी मुञ्जाल

[विद्वान् लेखक मननशील गम्भीर विवेचक और सुलझे हुए मस्तिष्कके साथ ही पश्चिमी पञ्जाबस्थित ओकाड़ा मण्डीके सुप्रसिद्ध विशेषज्ञ व्यापारी हैं, अन्नका बहुत बड़ा व्यापार आपके तत्त्वावधानमें संचालित होता था, अतः अन्नके सम्बन्धमें आपके अनुभव और विचारोंसे जनता तथा शासनको लाभ उठाना चाहिए। —सम्पादक]

संसारका प्रत्येक कार्य किसी-न-किसी नियमके अनुसार होता रहता है। किसी वस्तुकी खामीको पूरा करना इस नियमके अन्तर्गत है कि खामी (कमी) वाली वस्तु का उत्पादन बढ़ाया जावे, उत्पादित वस्तुको काममें लाने तक व्यर्थ न जाने दिया जावे तथा उसको उचित रूपसे एवं कृपणतासे व्यवहारमें लाया जावे। इन नियमोंको कार्यान्वित करनेसे उस वस्तुकी कमीको पूरा करके उद्देश्य प्राप्त किया जा सकता है। कमीको पूरा करनेके लिए केवल उत्पादन बढ़ाने पर जोर देना और शेष दो नियमोंको छोड़ देना बुद्धिमत्ताके विरुद्ध है।

अन्नकी कमी

आज कल हमारे देशकी अवस्था शोचनीय है। उसका सबसे बड़ा कारण अन्नकी कमी है। यह कमी ४० लाख टन बतायी जाती है, जिसको पूरा करनेके लिए बाहरके देशों; अफ्रीका, कैनेडा, आस्ट्रेलिया, अरजण्टाईना रूस तथा अन्य भी कई देशोंसे अन्न मंगाया जा रहा है। इस वर्ष भी ४५ लाख टन अन्न बाहर विदेशोंसे मँगानेका प्रबन्ध किया गया है। जिसमें से ३६ लाख टन आ चुका है, शेष आ रहा है। ऐसी अवस्था में १२० करोड़ रुपया प्रतिवर्ष अपने देशसे निकल कर दूसरे देशोंमें चला जाता है। यह देशके लिए कितना घातक विषय है।

अन्नका उत्पादन बढ़ाना

इस विषयमें गवर्नमेंट अत्यधिक प्रयत्न कर रही है। पंजाबमें भाखरा-नांगल डैम (बांध) बिहारमें कोसी घाटी (वैली) बंगालमें दामोदरघाटी, टिहटा प्राजैक्ट (बिजलीका बांध) मद्रासमें रामापदा सागर प्राजैक्ट, हैदराबाद में तुंगभद्रा बिजली का बांध (प्राजैक्ट) इसी प्रकार अन्य प्रांतोंमें छोटे बड़े डैम, वैलियां तथा प्राजैक्ट बना रही हैं। जिनकी योजनाएं बन चुकी हैं। उन पर १७००००००००) रुपया खर्च होना है। इन सबके पूर्ण हो जाने पर २२५ लाख एकड़ भूमि खेती करनेमें वृद्धि हो सकेगी। प्रत्येक कमी वाली वस्तु रुई पटसन तेलके बीज, गन्ना तथा प्रत्येक प्रकारके अन्नकी बिजाई करके कमी पूरी की जावेगी। यदि इसमें से आधी भूमि भी अन्न-उत्पादनके लिए वापरी गई तो भी अन्न की पैदावारमें ५० लाख टनकी वृद्धि हो सकेगी। इससे १२० करोड़ रुपया जो देशका प्रतिवर्ष अन्न क्रयमें बाहर जा रहा है वह देश में बच रहेगा। अन्नका उत्पादन बढ़ानेमें सरकारका यह यत्न सराहनीय है। परन्तु यह कागजी स्कीमें कब सफल होंगी? इसके लिए समय चाहिये। इन सबमें से बड़ा भाखरा डैम (बांध) है। जिस पर ५५ करोड़ रुपया व्यय होना है और जिसने ४५ लाख एकड़ भूमि खेती करनी है। श्री गैडगिल भाखरा बांधके दौरा पर गए, उसकी देख भाल करके लौटने पर उन्होंने वक्तव्य दिया कि भाखरा बांध सन् १९५५ में पूर्ण हो सकेगा। इसी प्रकार दूसरे डैम प्राजैक्ट तथा वैलियाँ भी पर्याप्त समय लेंगी। अनुमान है कि ये सारी योजनाएं सन् १९५५ से १९६० तक पूर्ण हो सकेंगी। उनको पूर्ण करनेके लिए भूमि साफ करानी, नहरें खुदवानी, मशीनें ट्रेक्टर लेबर तथा और कई प्रकारके सामान और सबसे बड़ी वस्तु रुपया चाहिएगा। जिससे इन सारी योजनाओंको पूर्णरूप दिया जा सके। अन्नके उत्पादन बढ़ानेका प्रश्न ५-१० वर्षसे पूर्व पूर्ण न होगा। केवल उत्पादन बढ़ानेके आधार पर अन्नोत्पादनकी कान्फ्रेंसें, व्याख्यान, विज्ञापन, बड़े-बड़े निबन्ध, और कागज़ी लेखाजोखा (Estimate) अखबारी विश्वास, गवर्नरों, प्रधानमंत्रियों

तथा मंत्रियोंका अपने-अपने घरोंमें हल चलाना, यह सब प्रचार हमारी अन्नकी कठिनता दूर न कर सकेगा। अन्न अधिक उत्पादन करनेकी चेष्टा चालू रखते हुए निम्न दो नियमोंको काममें लानेका पूरा ध्यान देना चाहिए। अभिप्राय यह कि उत्पादित-अन्नको व्यर्थ न जाने देना तथा उचित रूपसे मितव्ययितासे बर्तना।

अन्नके उत्पादनको व्यर्थ जानेसे बचाना

बटवारेसे पहिले भारतवर्षमें अन्नके उत्पादनका साधारण प्रमाण इस प्रकार था—चावल २८० लाख टन, गेहूँ १०० लाख टन, चने ४० लाख टन, जौ २२ लाख टन, मक्की २३ लाख टन, बाजरा ३५ लाख टन, ज्वार ६५ लाख टन, दालें मूंग, उड़द, मटर, मसूर, अरहर आदि १३५ लाख टन; कुल अन्न बटवारेसे पूर्व लगभग ७०० लाख टन था। जो इस समय हमारे भागमें ५६० लाख टन आता है। ये अन्न जिस समय पैदा होते हैं उसी समय खपत नहीं हो जाते। खपत होनेसे पहले येनकेन प्रकारेण स्टाक (Stock) में रखे जाते हैं। परन्तु उनकी पूर्ण रूपसे रक्षा नहीं की जाती। पूरी रक्षा न करनेसे कीड़े मकौड़े सुसरी घुन तथा कई प्रकारके परमाणु इन स्टाकोंको हानि पहुंचाते रहते हैं। गवर्नमैण्टकी अपनी रिपोर्टके अनुसार अनाजोंको घुन लग जानेसे ३५ लाख टन अनाज व्यर्थ चले जाते हैं। क्या यह ३५ लाख टन अनाज थोड़ी संख्या है ? यह संख्या उस संख्याके लगभग बराबर है जितनी हमारे अन्नमें कमी है। या उतनी जितनी हम दूसरे देशोंसे मंगाते हैं। आज ३५ लाख टन अनाजका मूल्य १२) रुपये मन औसत लगाई जावे तो ११५ करोड़ रुपये होती है। इन अनाजोंको कीड़ों मकोड़ोंसे बचा अनाजकी कमी को पूरा किया जा सकता है और देशका ११५ करोड़ रुपया बाहर भेजनेसे भी बचाया जा सकता है। परन्तु यह काम गवर्नमैण्टके ध्यान देनेसे, व्यापारियों जमींदारों,किसानों को समझानेसे और देशमें इस बातका प्रचार करनेसे हो सकता है।

आजकल देशमें राशनप्रणाली (Ration System) है। अनाजकी कमीके समय राशनप्रणाली देशके लिए लाभदायक है। इस समय लगभग १५ करोड़ मनुष्य राशन के द्वारा अपना अन्न प्राप्त करते हैं। तथा अनाजोंके स्टाक अधिकतर गवर्नमैंटके अधिकारमें रहते हैं, अतएव जितना अनाज कीड़ोंमकोड़ोंसे व्यर्थ होता है उसका उत्तरदायित्व गवर्नमैंट पर है। आज कल संसारमें कई ऐसे (Fumigents) (अनाजको कीड़ोंसे बचानेकी औषधियां) का आविष्कार हो चुका है जो अनाजको हानि पहुँचाने वाले कीड़ोंके घोर शत्रु हैं। ऐसे नियम बर्तनेसे देशका ३५ लाख टन अनाज व्यर्थ होनेसे बचाया जा सकता। है इसी लिए गवर्नमैण्टको चाहिए कि न केवल अपने विभागों (डिपार्टमैण्टों) को चेतावनी दे, अपितु जनतामें घोषणा करे कि प्रत्येक व्यापारी ,जमीदार-किसान-स्टाक-होल्डर ऐसे तरीके बर्तें जिससे अनाज कीड़े मकोड़ोंकी हानि से बचाया जा सके। इस कार्यके लिए देशमें सार्वत्रिक प्रचार होना चाहिए तथा प्रत्येक अन्नगोदाम (Stok-Holder) को आज्ञा होनी चाहिए कि वह बिना इन नियमोंके बर्तें स्टाक न रखे। यदि वे ऐसे तरीके नही बर्त सकते या किसी कारणसे वे अनाजोंको कीड़ों मकोड़ों से सुरक्षित नहीं रख सकते तो उन्हें अपना अनाज सरकारको बेच देना चाहिए, जिससे वह व्यर्थ जानेसे बच जावे। इस नियमको यदि कोई कानूनी रूप भी देना पड़े तो दे देना चाहिए। तात्पर्य यह कि इस योजना (Item) पर गवर्नमैण्टको पूरा ध्यान देकर देश का ३५ लाख टन व्यर्थ जाने वाला अनाज बचा लेना चाहिए। अनाजकी पैदावार बढ़ानेमें जितने कष्टका सामना है उसके मुकाबले में इसका प्रबन्ध करना अत्यधिक सरलतर है। न भूमि की आवश्यकता है न नहरों की, न मजदूरोंकी और नाही रुपयोंकी। केवल ध्यान देने, अफसरोंको आज्ञा करने तथा देशमें प्रचार करने और थोड़ा सा कानूनी रूप देनेसे ३५ लाख टन अनाज बचाया जा सकता है। अब तीसरी बात—

उचित व्ययमें बचत

अनाजकी कमीको पूरा करनेके लिए देशमें एक खाद्यदिवस (Food Day) निश्चित किया जावे। यानी सप्ताहमें एक दिन दो समय की अपेक्षा एक समय अन्न खाया जावे। सप्ताहमें १४ बार खानेके स्थान पर १३ बार रोटी खानी चाहिए। १४ बारमें से एक बार न खाने

से मनुष्य मर नहीं जाता और नाहीं बीमार हो सकता है। अधिक खानेसे तो किसी समय मृत्यु हो सकती है और बहुत बार रोग भी आ सकते हैं; परन्तु न खानेसे कोई कठिनता नहीं आ सकती। अपितु सप्ताहमें एक बार न खानेसे स्वास्थ्य ठीक रह सकता है। और शरीरके सम्पूर्ण अणुओंको पूर्ण विश्राम मिल सकता है। देशमें इसको कुछ समयके लिए नियम बना देना बहुत लाभकारी सिद्ध हो सकता है। १४ बारमेंसे एक बार बचत करने से अनाजमें ७ प्रतिशत अनाज कम खर्च होगा। इस समय भारतवर्षका अनाजका खर्च लगभग ५६० लाख टन है। सात परसैंट कम खर्च होनेसे ४० लाख टन बचाया जा सकता है।

इस प्रकार एक खाद्यदिवस Food-day निश्चित करके उसको कार्यान्वित करनेसे ४० लाख टन अनाज बच सकता है, जितनी कि हमारी कमी है अथवा इस कार्यसे अनाजकी सारी कमी पूरी हो सकती है। यह योजना भी उपज बढ़ानेसे बहुत सरल है। सरकारको चाहिए कि Food-day निश्चित करके उसको देशमें लागू करें। घोषणाओं, अपीलों, पत्रों, रेडियो द्वारा सब प्रकारसे इसका प्रचार करे और उसको कोई कानूनी रूप भी दे दे। आवश्यकता के समय देशमें साधारण वातावरण (Normal Condition) बनाये रखने के लिए सरकारें क्या क्या नहीं करतीं। युद्धके समय बजट पूरा करनेके समय, बीमारीके समय, अकालके समय सरकार कड़ेसे कड़े नियम बनाकर देश में शान्तिस्थापित करती है, जिससे शान्ति स्थिर रहे। युद्धके समय जब अन्नकी कमी अनुभव की जा रही थी, अन्य देशोंने क्या कुछ नहीं किया। बृटिश सरकारने राशनमें इतनी कमी कर दी थी जो आश्चर्यजनक थी। मांस, अण्डा जो योरुपकी विशेष खुराक है सप्ताहमें एक बार कर दी गई। जब कठिन समयमें सब गवनमेंटें सब कुछ कर डालती हैं तो इस समय जब हमारे देश में ४० लाख टन अनाज की कमी है उसको पूरा करनेके लिए दूसरे देशोंसे अनाज मंगाया जा रहा है तथा देशका १२० करोड़ रुपया बाहिर भेजा जा रहा है, ऐसी अवस्थामें एक Food-day निश्चित करके अनाजके खर्चमें बचत करके ४० लाख टन अनाजका बचा लेना गवर्नमेंट के लिए कौनसी बड़ी बात है। उसको कानूनी रूप देकर भी तथा देशमें अच्छी तरह प्रचार करके इस उद्देश्य को प्राप्त किया जा सकता है।

इस राशन-सिस्टम होनेसे आधे अन्न पर गवर्नमेंट का अधिकार है। सप्ताहमें १४ बारका राशन देनेकी जगह १३ बार का राशन दिया जा सकता है। शेष आधे को प्रचार और कानूनी रूप देकर बचत की जा सकती है। इस यत्नसे बचत करके यदि देशका ४० लाख टन अन्न बचाया जा सके तो उससे यह बहुत सरल है कि १७० करोड़ रुपया खर्च करके २२५ लाख एकड़मेंसे आधी भूमिमें अनाजकी नई उपज उत्पन्न करके अन्न की ४० लाख टनकी कमीको पूरा किया जावे। इसका अर्थ यह नहीं कि उत्पादन न बढ़ाया जावे और उसका विचार छोड़ दिया जावे, कदापि नहीं। वास्तविक कमी तो तब पूरी होगी जब देशका उत्पादन बढ़ाया जावेगा। यह बहुत देरीका प्रश्न है। लगी हुई आग पर कुआँ खोदनेसे समस्या नहीं सुलझेगी। मैं गवर्नमेंटका ध्यान इस ओर खींचता हूँ जब तक देशकी उपज नहीं बढ़ती तब तक सरकार इन दोनों ढंगों पर अवश्यमेव ध्यान दें। पहला यह कि उत्पादित उपजको कीड़ों मकौड़ोंसे बचाकर ३५ लाख टन अनाज व्यर्थ न जाने दिया जावे। दूसरा यह कि "Food-day" निश्चित करके उसको कानूनी रूप देकर भी ४० लाख टन बचाया जावे। इन दोनों ढंगोंको बर्त कर देशमें ७५ लाख टन अनाज बचानेकी स्कीम बनाई जा सकती है। यदि गवर्नमेंट पूर्णरूपसे यत्न करे तो कोई कारण नहीं कि देशमें ७५ लाख टन अनाज न बच सके। यदि गवर्नमेंट इसका ५० प्रतिशत भी बचा सके तो भी हमारी अनाजकी कमी पूरी हो सकती है।

इन दोनों बातोंको कार्यान्वित करना न करना यह गवर्नमेंटका काम है। यदि गवनमेंटने दोनों या दोनोंमें से किसी एक पर भी ध्यान न दिया तो समझा जायेगा कि गवर्नमेंटकी लापरवाहीकी सीमा सीमोपरान्त तक पहुंच चुकी है।

आर्य-सभ्यता

ले०—सर्वतन्त्रस्वतन्त्र श्री पं० माधवाचार्य विद्यामार्तण्ड

हमें यह कहनेमें कोई भी संकोच नहीं है कि वर्तमान में आर्योंको अपने स्वरूप और सभ्यताका ज्ञान बहुत ही कम रह गया है। हम न तो अपने स्वरूपको ही जानते हैं और न अपनी सभ्यताका ही हमें ज्ञान रह गया है।

यहां मेरा 'आर्य्य' कहनेसे सारी हिन्दू जातिसे तात्पर्य्य है। मैं इससे किसी एक भागको नहीं ले रहा हूँ। मेरा यह पक्का विश्वास है कि—'सप्तसिन्धु, भारत और आर्य्यावर्त इस देशका नाम है। मीमांसाकार के मीमांसा लिखनेके समय आर्य्य और म्लेच्छ ये दो ही प्रसिद्धियां थीं।' अतः हम सभी हिन्दु 'आर्य्य' समभावसे एकसे हैं। हमारे सभी वर्ण और जातिके भेद आर्य्यत्वको लेकर हैं। सिन्धुके सम्पर्कके कारण भारतके बाहरके लोगों ने हमें 'हिन्दु' कहा था यही कारण हमारे इण्डियन कहलानेका भी है। क्योंकि इण्डस भी सिन्धुका इङ्गलिश नाम है।

हम तो यहां तक निश्चय पर पहुंचे हैं कि कुछ शाक्त, शैव पीछेके तन्त्र ग्रन्थोंको छोड़ कर किसीने इन्हें हिन्दू नहीं कहा। प्रसन्नता है कि आर्य्य समाजने आर्य्य शब्दका प्रयोग किया। दूसरोंने इस ओर ध्यान नहीं दिया। इसी कारण हिन्दुका स्थान आर्य्य शब्दने नहीं लिया। पर मैं यहां आर्य्य शब्द आजके हिन्दूके अर्थमें प्रयोग कर रहा हूँ। अतः मेरा इस शीर्षकका दूसरा अर्थ 'हिन्दु-सभ्यता' भी होता है।

आप किसी भी देशके किसी भी सुयोग्य सावधान व्यक्तिको देख लीजिये। उसने अपने सारे पुरुषार्थोंको सुचारु रूपसे अनायास प्राप्त करनेके लिए कोई नियम अवश्य बना रखे होंगे।

वह शरीरको स्वस्थ रखनेके लिये अपने ढङ्गके किन्हीं आरोग्यप्रद नियमोंका अवश्य पालन करता होगा। निश्चित समय पर उठता होगा, नियत कालमें भोजन करता होगा, नियमित भोजन एवं अन्य व्यवहार भी नियत हो होंगे।

वह अन्तःकरण तथा इन्द्रिय गणोंको पूर्ण स्वस्थ रखना भी चाहता होगा। उसकी मनीषा यही बनी रहती होगी कि—'मैं इन्हें इतना स्वस्थ रखूं कि—'ये अपने कामोंको निर्दोष ढङ्गसे पूरा कर सकें।'

आत्माको भव्य बनानेके लिये उन भव्य विधानोंका भी पालन करता होगा, जिनके अनुष्ठानसे आत्मा उच्च बनता है।

यही बात प्रत्येक समाजकी भी है। किसी भी देशका कोई भी मानव-समाज, अपने देश, धर्म और समाजके सारे कृत्योंको व्यवस्थित रीतिसे पूरा करनेके लिये किन्हीं नियमोंका अवश्य पालन करता है। कोई भी समाज ऐसा नहीं है, जिसने अपने पुरुषार्थोंको पूरा करनेके लिए कोई नियम न बना रखे हों। सबों ने अपने कृत्योंको यथा समय पूरा करनेके लिये अपने-अपने अनुशासन तकके भेद बना रखे हैं।

आज जो असभ्य नर-समाज कहे जा रहे हैं, जिन्हें पश्चिमके निवासी घृणाकी दृष्टिसे देखते हैं, यदि हम उनके ही भीतर प्रविष्ट होकर देखें तो उनके भी समाज-परिचालक कोई नियम अवश्य मिलेंगे। नियमोंके बिना कोई भी नरसमाज नहीं है। नियमों के बिना वह जीवित भी नहीं रह सकता है।

कौन नहीं चाहता कि—मेरा शरीर हृष्ट-पुष्ट न रहे'। किसे यह अच्छा नहीं है कि—'मेरा मन बलवान न रहे।' किसे यह अभिलाषा नहीं है कि—'मेरी आत्मा उच्च न बने।' सभी चाहते हैं कि—'मैं सदा अमर बना रहूँ। रोग-दोष पास भी होकर न निकलें।' सभीकी चाह है कि—'हमारा मन महासत्वशाली हो।' अपने आत्माको सभी उच्च कोटिका बनाना चाहते हैं। कोई भी अधम देखना नहीं चाहता; पर जो शरीरको हृष्ट-पुष्ट और बलिष्ठ

रखनेके विधानोंको यथावत् जान कर यथार्थ रीतिसे उनका पालन करता है, उसका शरीर अवश्य ही हृष्ट-पुष्ट और बलिष्ठ रहता है। जो मन और बुद्धिको सबल बनाने वाले नियमों को वास्तविक रूप से जान कर प्रयोगमें लाता है, उसकी मन बुद्धि अवश्य ही बलिष्ठ बन जाता है एवं जो आत्मोद्धारके सच्चे मार्गोंसे अपने आत्माको भव्य बनाना चाहता है, उसका आत्मा अवश्य भव्य बन जाता है।

किन्तु जिसके इन कामोंमें जिससे जितनी त्रुटि होगी, उसके विषय उतने ही दुर्बल होंगे। मनुष्योंकी इन बातोंमें जितना अन्तर दीख रहा है, वह उनके विधानोंके पालन की दुर्व्यवस्थाके कारण दीख रहा है। इसीसे कोई रोगी कोई स्वस्थ एवं कोई मध्यम दीख रहा है। जिसका जो विधान बिगड़ रहा है, उसकी न्यूनता भी उसमें दीख रही है, इसके अतिरिक्त दूसरी कोई बात नहीं है। यह एक ऐसी बात है जिस पर मनुष्यों का वैशिष्ट्य अवलम्बित है। इसी से मनुष्योंकी सारी विशेषतायें बनी हुई हैं, यही बात समाजकी भी है। इसमें जो खामियां दीख रही हैं, वे या तो विधानोंकी हैं या विधानोंके अपालनकी हैं। निर्दोष विधानोंके पालन करनेसे भी खामियाँ आ जाती हैं, एवं सदोष विधान भी खामियोंका ही कारण होता है। अज्ञान और प्रमाद निर्दोष विधानको भी आगे बढ़ने नहीं देता। इस कारण अयोग्य सन्तानें उन्नति नहीं कर पातीं एवं जिनका परिपालन ही दूषित होगा उनके अपूर्ण रहने में तो शंका ही क्या है।

इसी कारण निर्दोष विधानोंको जो महापुरुष बना गये हैं, उनकेलिए आज भी मानव समाज नत-मस्तक होता है। मानव समाजको जिन्होंने मनुष्यताका पाठ पढ़ाया, वे इसके पूज्य हुए हैं। इसी कारण मानव जगत् उनके आगे माथा नवाता है। पूर्व और पश्चिममें जो लोग पूजे जाते हैं, वे इसी कारण पूजे जा रहे हैं। उन्होंने अपने परम पुरुषार्थ इसीमें समझा था, वे इसीकेलिये जिये थे और दुनियांसे उठे, तो इसीकेलिए उठ गये। जो बात अपने समाजको हितकारी है; वही दूसरेको भी है एवम् जिस बातसे अपने आत्माको क्लेश पहुंचता है उससे दूसरेके आत्माको भी पहुंचेगा। पर उनकी बताई हुई सभ्यतामें अन्तर आनेके तो ये कारण हुए कि—'पहिले तो उनके आगे वहांकी वर्तमान परिस्थितियां आई। दूसरे उनके सार्वज्ञकी सीमा भी उनके मार्गमें कमी देनेका कारण बनी।' जो जितना ज्ञानी होगा उसकी बनाई वस्तु उतनी ही निर्दोष होगी। जिसने मानव जगत्के तीनों कालोंपर दृष्टि रखकर परिपूर्ण सार्वज्ञ भावसे सकल पुरुषार्थोंके सिद्ध करनेके पथ, मानव जगत्को बताये हैं, उनके बताये हुए उपाय सर्वदा अचूक रहे हैं आज भी हैं और भविष्यमें रहेंगे। पर जिनमें केवल करुणामात्र रही है, उसीसे प्रेरित होकर मानव-जगत्के कल्याणकी कमनाकी है, उनके विधानोंपर जहां सर्वज्ञकी विधियोंकी छाया पड़ गई है, वे निर्दोष रहे हैं। बाकीके काममें उनकी बुद्धिका दोष आ गया है। कहीं-कहीं तो सत्य वस्तुको जानते हुए भी किन्हीं प्रेरणाओंके वश हो अन्यथा कह दिया है। यही मानवोंमें मानवता है। भारतके ऋषि-महर्षियोंने सर्वज्ञ दृष्टिसे मानव-जगत्के सामने मानवताका पाठ रखा है। इस कारण इनके विधान निर्दोष रहे हैं। ये सदा परमात्माके संकेतपर ही चले हैं। यही कारण है कि मानव जगत् इनका चिरऋणी है। दूसरी सभ्यतायें भी इन्हींके आदर्शपर अवलम्बित हैं। जहाँ वे इनके आदर्शसे हटी हैं, वे उतने दोषसे ही सनी हैं; जिन्हें सभी विचारक समझ सकते हैं।

महर्षि जनोंने जिस मानवताको मनुष्य समाजके सामने उपस्थित किया है, उसीका नाम आर्य्य-सभ्यता है। यह भूत, भविष्य और वर्तमान इन तीनों कालोंको एवम् सारे मानव-जगत्को सामने रखकर ही कही गई है। नर समाजके किसी भी परिस्थितिके कृत्य इससे बाकी नहीं रहे हैं। मनुष्योंकी जितनी भी आवश्यकताएं हो सकती हैं, उनको निर्दोष ढंगसे पूरे करनेके उपायोंमेंसे किसीको भी बाकी नहीं छोड़ा है। आर्य्य सनातनसे ही सब परिस्थितियोंमें सामूहिक रूपसे सारे पुरुषार्थोंको पूरे करनेके उपाय जानते हैं। इनके यहाँ कोई भी बात नहीं छोड़ी गई है, जिसके लिये ये पथ-भ्रष्ट हों। यही कारण है कि सनातनसे आर्य्य अबतक उसी रूपसे जीवित चले आये और सदा जीवित रहेंगे। पर जिनके विधान सर्वज्ञोंके रचे हुए नहीं हैं; उनमें सारी परिस्थितियों पर दृष्टि नहीं जा सकती। इस कारण वे कभी-न-कभी अवश्य ही असफल होते हैं। पर जिनके हाँ

सारे अचूक उपाय उपस्थित हैं, उन्हें जानकर प्रयोगमें लाना ही बाकी रहता है। वे कभी भी सावधान होकर उन्हें अपने प्रयोगमें ला सकते हैं। सारे प्रयोग आर्य्य-सभ्यताके आदर्शोंमें समाये हुए हैं।

पर अत्यन्त क्लेशका विषय तो आज यह हो रहा है कि आर्य्य-सभ्यताके सांचेमें फेर-फार करनेवालोंके सामने भी इसका पूरा साँचा और ज्ञान नहीं है और न समर्थकोंके ही पास है। यही कारण है कि दोनोंमें अनुकरण और अन्ध-परम्परा समाई हुई है। जब हम अपनी सभ्यताके सच्चे रूपको जान जायेंगे तो जो कहेंगे और सुनेंगे वह प्रामाणिक होगा।

यह भी सर्वशक्तिमान् परब्रह्म परमात्माकी हम अपने ऊपर अनुकम्पा समझते हैं, जिसने हमें आज आर्य्य सभ्यता तथा इससे विभिन्न अवान्तर विषयोंपर कुछ कहनेका अवसर दिया है।

यह इतना प्यारा शब्द है कि जितना इसका मनन किया जाता है उतना ही अधिक मननीय बनता जाता है। इसके तत्वका जितना ध्यान करते हैं उतना ही अधिक तत्वमय प्रतीत होता है।

विचार-दृष्टिसे देखा जाये तो अर्थ शब्दके भीतर ही विराजमान रहता है। मानवीय बुद्धि ज्यों ज्यों शब्दकी महिमामें गोते लगाती है वह त्यों त्यों अथके समीप पहुंचती चली जाती है।

आर्य सभ्यता

यह इतना भावार्थपूर्ण सुन्दर शब्द समूह है कि इस शब्द-समुदायके भीतर प्रविष्ट होता हुआ मन आनन्दके अखण्ड समुद्रमें निरन्तर रमण करने लगता है। इसमें आर्य्य और सभ्यता ये दो शब्द है। इसका अर्थ—'आर्योंकी सभ्यता' यह होता है।

अब यहाँ यह विचार होता है कि आर्य्य किन्हें कहते हैं और उनकी सभ्यता क्या है? पहिले हमें शब्दार्थपर विचार करना होगा, पीछे उसकी सम्भावनापर विचार करेंगे।

आर्य

मान्य और सभ्यके पर्य्यायमें कोशकारोंने रखा है। ये मान्य और सभ्य पुरुषको आर्य्य कहते हैं। व्याकरणके नियमके अनुसार ज्ञान गमन और प्राप्ति अर्थवाली 'ऋ' धातुसे योग्य अर्थमें 'ण्यत्' प्रत्यय होकर आर्य्य शब्द बना है।

अर्थकामियोंको जो अर्थ-प्राप्तिके अचूक साधन बतायें, धर्मके भक्तोंको धर्मका सच्चा स्वरूप समझा दे, कामके कामी कामका निर्दोष ज्ञान जिससे प्राप्त करें एवम् मोक्ष-मार्गियोंके लिये जो मोक्षके अचूक उपायोंको दिखाये तथा इन बातोंके लिए जो संसारकी एकमात्र शरण हो वह आर्य्य कहाया करता है।

संसारके किसी भी प्राणीको देख लीजिए चाहे वह किसी भी लोक या देशका क्यों न हो, उसके जीवनके सारे उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, इन्हीं चारों पुरुषार्थोंमें समा जायंगे।

प्रातःकालसे लेकर सायंतक मनुष्य जो कुछ काम करता है, वह इन्हीं चारोंकी चिन्तामें होता है। जो इनके सच्चे उपायोंको जानते हैं, वे सफल हो जाते हैं तथा जिन्हें इनके सच्चे साधनोंका ज्ञान नहीं है; वे निरन्तर प्रयत्न करते रहनेपर भी इन्हें नहीं प्राप्त कर सकते। जगत्‌की इस परिस्थितिमें जिसने इनका अचूक उपाय सबके सामने रखा वही जनताका ज्ञेय, गम्य और प्राप्य हुआ। जो सब इच्छाओंसे सकल व्यक्तियोंका ज्ञेय, गम्य और प्राप्य है, वही आर्य्य है।

ये सारे गुण मुख्य रूपसे परमात्मामें घटते हैं, क्योंकि वही सर्वप्रथम जगत्‌के लिये प्राप्तव्य प्राप्तिकर्ता, और प्राप्तिके साधनोंका उपदेश करनेवाला है।

ईश्वरने ऋषि-महर्षियोंको जीवनके उद्देश्य बताये हैं। उनसे फिर अखिल विश्वने जाना है। इस कारण ईश्वरके बाद इनकी गणना होती है। इनके वंशधर होनेके कारण इनकी सन्तानें भी आर्य्य कहलाती हैं।

दासताकी मान्यता उतने ही समय तक रहती है, जब तककि—उसका प्रभुत्व अपने ऊपर बना हुआ है। तोता बन्धनसे निकलते ही फिर कभी भी किसीकी स्मृति नहीं करता। पर जिन्होंने जगत्‌को सच्चे कर्तव्यका पाठ पढ़ाया है। जो मनुष्योंके सामने मानवताका स्वरूप रखनेके मुख्य कारण हुए हैं। जहाँसे चलकर मानवताका पाठ विश्वमें

फैला है; वे आर्य्य हैं। आर्योंका यही एक मानव-समाजपर महा उपकार है। उपकारोंसे उपकृत हुआ यह मानव-संसार ज्यों-ज्यों अपनी स्थितिको पहिचानेगा, त्यों-त्यों आर्य्योंके समीप आता चलेगा। ये उसके उतने ही ज्ञेय, गम्य और प्राप्तव्य हो जायंगे जितना कि—उसे अपने स्वरूपका परिचय होगा। इनके गुणोंके ही कारण विश्वने इन्हें आदरकी दृष्टिसे देखा था।

वसिष्ठने आर्य्यका लक्षण किया है कि—

कर्त्तव्यमाचरन् कामम् अकर्तव्यमनाचरन्।
तिष्ठति प्रकृताचारे स तु आर्य्य इति स्मृतः ॥'

संसारकी कोई भी शक्ति, जिसे कर्त्तव्य च्युत नहीं कर सकती एवम् जो कर्त्तव्य नहीं है; उसपर कोई भी नहीं चला सकती, जो अपनी स्वाभाविक कृतियोंपर सदा आरूढ़ बना रहता है? उसे आर्य्य कहते हैं।

जिनके कर्तव्य अनिश्चित रहते हैं, वे कालकी टक्करें खाकर कृतिहीन बन जाते हैं, पर जिन्हें अपनी सारी स्थितियोंके कर्त्तव्योंका पता है वे प्रति स्थितिका सामना कर सकते हैं। क्योंकि आर्य्य सनातनीसे अपने व्यवस्थित सामयिक कर्त्तव्योंको खूब समझते हैं।

आर्य्योंके कर्त्तव्य सामान्य और विशेष भावसे विभक्त हैं। इन्होंने कोई भी ऐसी परिस्थिति नहीं छोड़ी है, जिसका सामना करनेवाले कर्त्तव्य न बताये हों। एक प्राणीपर जितनी संभावनायें हो सकती हैं, उन सबोंमें जीवित रहनेके कर्त्तव्योंमें आर्य्य सदासजग रहते आये हैं। यही एक कारण है कि दूसरी जातियाँ आज इतिहासके पृष्ठपर ही रह गईं हैं पर आर्य्य-जाति वैसीकी वैसी ही बनी हुई है। दूसरे विपत्तियोंमें किंकर्त्तव्य-विमूढ़ होकर अपनेको नष्टकर लेते हैं; पर आर्योंके यहां समष्टि रूपसे सारे कर्त्तव्य निर्धारित रहते हैं। इस कारण वे किसी भी स्थितिमें विवेकशून्य नहीं हो पाते।

सारी श्रेष्ठताएं इनके भीतर निवास करती हैं। इन्होंने ही संसारको सभ्यताका पाठ सिखाया था। अन्यमें विवेकके समय तथा इनमें यह सहज रूपसे रहती हैं। इसी कारण वे आर्य्य हैं।

'सभा' से 'सभ्य' तथा 'सभ्य' से 'सभ्यता' शब्द बना है। इस कारण सर्वप्रथम हमें 'सभा' पर विचार करना होगा। इसके पीछे 'सभ्य' और इसके बाद सभ्यताका विचार आयगा।

जिसमें सब साथ प्रकाशित हों उसे सभा कहते हैं। यह एक स्थल भी हो सकता है; जहाँ सब इकट्ठे हों (२) ये एक सामान्य गुण भी हो सकते हैं, जो सबमें एकसे हों (३) यह एक स्थिति भी हो सकती है जिसमें कि सबमें समानता आ जाय। स्थिति शब्दके अनेकों भाव है। वे सब यहां संग्रहीत हो सकते हैं। ये सब सभा शब्दके भीतर गतार्थ हो जाते हैं।

मनुष्यमात्रमें कोई ऐसी बात आवश्य है, जिसके कारण वे सब मनुष्य कहला रहे है। मानवी आकृतिके अनुगत भाव, मानवोचित एक से कर्म तथा गुण और दूसरे प्राणियोंसे जो मनुष्योंमें विशेषाएं हैं; इन सब बातोंकी समानताओंको लेकर सब मनुष्य कहला रहे हैं।

यह मनुष्यताका नाता हमारा प्रत्येक मनुष्यके साथ है, चाहे किसी भी देश, काल और दशाका क्यों न हो। इस समानताकी कुछ विशेषताएं भी ऐसी हैं, जिनके कारण एक समाज दूसरे समाजसे, एक देश दूसरे देशसे; एक जाति दूसरी जातिसे और एक मनुष्य दूसरे मनुष्यसे अलग हैं।

इन दोनों बातोंमें जो समान चमक है; वही उनकी सभा है। उस बातमें वे समान हैं। जो जीवमात्रके साथ जीवोचित व्यवहार करता हो, मनुष्यके साथ मनुष्यताके व्यवहार करनेमें कुशल हो, अपने समाजके साथ अपनत्वके एवम् पर के समाजमें परोचित व्यवहारमें पटु हों।

सर्वत्र योग्य और अयोग्यका जिसे पूरा विचार हो, उसे सभ्य कहते हैं। सभ्यके भीतर जो विशेषताएं रहती हैं उसे सभ्यता कहते हैं।

यही एक ऐसी बात है, जिसके आधारपर उसका जीवन है। यही उसके आत्माका निर्माण करनेवाली वस्तु है। सभ्यके मनका निर्माण उसकी सभ्यता ही करेगी किसी भी सभ्यता का चाहे कोई भी सभ्य क्यों न हो, उसके सारे व्यवहार और वर्ताव उसी सभ्यता के अनुसार होंगे। मानव की सारी बातों का ढाँचा उसकी सभ्यता के द्वारा

ही निर्मित होगा। अतः किसी भी व्यक्ति को अपनी सभ्यता पर पहिले विचार करना चाहिये। अपने बालकोंको उनका स्वरूप समझानेके लिये सर्वप्रथम अपनी सभ्यताका पाठ पढ़ाना चाहिये। हम आर्योंको भी अपनी सभ्यताका पूरा ज्ञान रखना चाहिये, क्योंकि सभ्यता देश, धर्म और समाज के सारे व्यवहारोंकी निर्मात्री है। जो अपनी आर्य सभ्यता या आर्य धर्म से अनभिज्ञ है, वह स्वजीवनको उन्नत नहीं बना सकता है।

यदि हम समष्टि धर्मपर दृष्टि डालें, तो प्रतीत होता है कि यह धर्म दो प्रकार का है। स्वयंके लिये स्वयं करना तथा दूसरों के साथ व्यवहार में लाना। पहिले ये दोनों बातें राज्यके आधीन रहा करती थीं। जिस व्यक्तिके जो कर्त्तव्य व्यक्तिगत तथा दूसरों के प्रति करने के हैं, वे सब राज्य-व्यवाथा के अनुसार करने पड़ते थे। यही कारण है कि स्मृतियों में ये दोनों प्रकार के कर्तव्य मिलते हैं। दुख है कि हिन्दू शासन व्यवस्था के ढीले हो जाने पर जिसे जो अच्छा लगा, ले लिया। जिस पर मन न हुआ, उसको छोड़ दिया।

आज लोग कहते हैं कि धर्म से राजनीति को अलग रखो- पर मेरा कहना इससे विपरीत है कि शासन व्यवस्था का नाम ही धर्म है। यह हिन्दुस्थान है। इस कारण यहाँ की शासन व्यवस्था यहांके कानूनों से करो। योरुप, अमेरिका या हवश के कानूनमत लाओ।

ईस्ट इण्डिया कम्पनीने सबतो नहीं लियाथा जो लिया था वह प्रायः आर्योंकी शासन-व्यवस्थासे लिया था। यही कारण है कि नहीं अखरा था। पर जब अंग्रेजों के पैर जमे, तो फिर इस बातका ध्यान कम कर दिया। हम चाहते हैं कि-'आर्योंका शासन आर्य्य सभ्यताके अनूकूल हो।' विरुद्ध न हो।

आज की विभिन्न सभ्यताओंके रहस्यों को न जानने वाले लोग धर्म को मिटाने की चेष्टा करें; गलियों में धर्म की निन्दा करते फिरें। पर उनके सारे व्यवहार उसी धर्म के अनुसार चल रहे हैं जिसके बिना जाने वे उसकी निन्दा कर रहे हैं। उनका सारा जीवन भी उन्हीं नियमों से जकड़ा हुआ है।

काम और अर्थ पर फिर विचार करेंगे। मोक्ष के विषय में इतना ही वर्तमान में कहते हैं कि—इसी का नाम मजहब या मोक्ष मार्ग है। आज के लोग इसी का सन्देश लेकर आये हैं और अपने-अपने पन्थ चलाये हैं। यह उपासना आदिपर अधिकार करता है। पर चारित्र्य और धर्मका नित्य सम्बन्ध है। इस कारण धर्म के विषय में परतन्त्र और भावनामें प्राणी स्वतन्त्र है।

अनमोल वाक्य

१—क्षमा आत्माका स्वरूप है।

२—निर्भयता स्वन्तत्रताकी प्रथम श्रेणी है।

३—अभिमान न करो।

४—संतोषसे सुख प्राप्त होता है।

५—यदि जीवनसे प्रेम है तो समय नष्ट न करो।

६—दूसरोंके अवगुणोंको न देखो।

७—निन्दा करने वालोंसे बचो।

८—प्रत्येक समय अपने दोषोंपर विचार करो।

९—घृणा पापसे करो, पापीसे नहीं।

१०—आत्मासे शरीरको भिन्न समझो।

११—आत्मसम्मान मनुष्यके दुर्गुणोंको वशमें करनेका पहला उपाय है।



हिमालय और गंगा

ले०—श्री वासुदेव शरणजी अग्रवाल एम० ए० पी० एच० डी०

कालिदासने हिमालयके प्रदेशोंके लिये 'देवभूमि' नाम दिया है—

पितुः प्रदेशास्तव देव भूमयः
(कुमार सम्भवम् ५।४५)

वस्तुतः ये सुरम्य हिमजलोंसे सिञ्चित गिरिशृङ्ग और उनके लम्बे चौड़े तटान्त, दरी और द्रोणी रमणीयता में देवभूमि विशेषण पानेके योग्य हैं। आज ये देवभूमि भारतीय मानवके लिए आमन्त्रण लिये खड़ी हैं। उनका सारा सम्बन्ध शिथिल पड़ा हुआ है। हमारी नदियोंके स्रोत हिमालयकी गोदमें हैं, पर हम हिमालयकी ओरसे उदासीन हैं। नदियोंने हमारे विशाल मैदानोंको अपनी मिट्टीके वार्षिक तानेबानेसे करोड़ों वर्षोंमें रचकर हमें दिया है। उन विक्रमशीला नदियोंका पितृगृह गिरिराज हिमवन्त भारतीय भूमिका गोता और उसकी मौलिक समृद्धिका संरक्षक है। हमारी वृष्टि और ऋतुओंका सुन्दर चक्र परिवर्तन हिमालयकी कृपा पर निर्भर है। इसी हिमालयके १५०० मील लम्बे और २०० मील चौड़े विस्तारमें संसारका सबसे श्रेष्ठ सुन्दर और विभूति सम्पन्न भू-खण्ड है जिसके विषयमें हमारे देशवासियोंको अपने पैरोंकी सञ्चरणशीलतासे अधिक परिचय प्राप्त करना चाहिये। हमारे पूर्वजोंने हिमवन्तकी गोष्पद और अगोष्पद भूमियोंको छान मारा था। केदारखण्ड और मानसखण्ड हिमालयके दो प्रसिद्ध प्रदेश हैं। इन दोनों खण्डोंका विस्तृत भूगोल प्राचीन भारतीय साहित्यमें पाया जाता है। यमुना जिस पर्वतसे निकली है वह यामुन पर्वत बन्दर पूंछके नामसे अधिक प्रसिद्ध है, जहाँ कहा जाता है कि महाभारतकालीन भीमने त्रेतायुग के कपिराज हनुमन्तकी पूंछको हटाकर उनके बलकी परीक्षा लेनेका वृथा प्रयत्न किया था। उस यामुन पर्वतकी तलहटी में जौंसार बावरका सुन्दर इलाका है जिसके विषयमें लोकवार्ता शास्त्री अधिकाधिक जाननेकी अभिलाषा करते हैं। गङ्गाके उद्गमका क्षेत्र बदरी केदार खण्ड है। केदारनाथ से मन्दाकिनी और बद्रीनाथके अलकापुरी हिमगलसे अलकनन्दन निकल कर रुद्रप्रयागके सङ्गम पर मिलती हैं। उसके आगे गङ्गोत्रीसे आने वाली चञ्चल भागीरथी अपनी बड़ी बहिन धीरगति अलकनन्दासे देवप्रयागमें बड़े उछाहके साथ मिली है। यहाँसे दोनोंकी सम्मिलित धारा गङ्गाके नामसे आगे बढ़ती है और हृषीकेश होती हुई कनखलमें हिमाचलकी चट्टानी धरतीसे भूमि पर उतरी है जिसके लिए कालीदासने लिखा था:—

तस्माद्गच्छेरनुकनखलं शैलराजावतीर्णां
जन्होः कन्यां सगरतनय स्वर्ग सोपानपंक्तिम्।
(मेघदूते १।५०)

यह गङ्गा भारतीय भूमि और भारतीय संस्कृतिकी निर्मात्री है। गङ्गाका प्रस्रवण क्षेत्र गिरिराज हिमालयसे लेकर विन्ध्याचल तक फैला हुआ है। दो पर्वतोंके बीचमें भरी हुई महासागरकी जलद्रोणीको पाट कर गङ्गाकी धारा ने उत्तर भारतकी रौसली धरतीका हराभरा समतल मैदान तैयार किया है। इसी प्रदेशमें मनुष्योंकी किलकारी पीछे सुनाई दी और अनेक नगर, ग्राम, खेड़े, जन सन्निवेशके द्वारा अस्तित्वमें आ गये। कविने जन्हुकी कन्याका भी स्मरण दिलाया है। वस्तुतः जन्हु पुत्री जान्हवी हिमालयमें गङ्गाकी ही एक उपरली धाराका नाम है। और वह गङ्गोत्तरीसे कुछ मील नीचे भागीरथीमें मिली है। स्वयं उसका स्रोत हिमालयके भी उस पर जंस्कर पर्वतमालासे है जो सतलज और गङ्गाके बीचका जल विभाजक और भारतकी अन्तिम उत्तरीय सीमा है। जान्हवीका उद्गम टीहरी रियासतका सबसे ऊपरी छोर है। इस प्रकार अक्षाँशके हिसाब से जान्हवी गङ्गा प्रस्रवण क्षेत्रकी सबसे उपरली धारा है। इसी लिये यह उक्ति प्रसिद्ध है—"यावत् जान्हवी तावद् भारतवर्षम्" अर्थात् भारतकी सीमा वहाँ तक है जहाँ तक जान्हवी है। अलकनन्दा मन्दाकिनी भागीरथी जान्हवी इन चारोंके जलोंकी हवि पाकर गङ्गाके चतुरन्त कल्याणकारी

वपुका निर्माण हुआ है। यह गङ्गा वस्तुतः भारतका सौभाग्य है। हिमवन्तकी वर पुत्री गङ्गाकी लहरोंमें कवियों ने जो भारतीय त्रिलोकीकी कलकलका शब्द सुना वह जीवनके सत्यका प्रतिबिम्ब ही था। गङ्गा न हो तो भारतकी कल्पना खण्डित हो जाय। गङ्गाने भारतको संस्कृति प्रदान की है। प्राचीन भारतीय तीर्थ यात्री मानवने गङ्गाके दोनों तटोंकी पादचारी परिक्रमाका आयोजन किया था। परन्तु आज नये भारतका स्वतन्त्र पदसञ्चार भी क्या गङ्गाके साथ उसी प्रकार परिचित होना चाहेगा। गङ्गाकी शोभाके वर्णनके लिये भाषा शब्दोंका उपहार लिए खड़ी है। वह रत्नोंका थाल उसी बड़भागीके हाथ लगेगा जो अपनी आँखोंसे गङ्गाके तटान्त क्षेत्रोंका, उसके घने झाऊके जङ्गलोंका, उसकी अतुल जलराशिमें पड़ने वाली चचरी और रेतीका और उसको ढक लेने वाली वनस्पतिका स्वयं दर्शन करेगा, जो गङ्गाके बीहड़ कगारोंको स्वयं देख कर उनके लिये स्थान-स्थानमें प्रयुक्त शब्दोंकी खोज करेगा और जो यह जाननेका प्रयत्न करेगा कि कितने स्थानोंमें गङ्गाने अपने प्रवाहका परिवर्तन करते हुये बूढ़ीगङ्गाकी अनगिनत धाराएं यत्र तत्र छोड़ दी हैं। गङ्गाका पूरा छवि वर्णन कवि की कल्पनाके सम्भव है, न साहित्यिकके कुटी प्रविष्ट जीवन से। उसके लिए तो खुली हवा और धूपमें पनपने वाले शब्द चाहिये, वाततपिक शब्दावली ही गङ्गाकी छबीली शोभाका रूप खड़ा कर सकती है। अनेक वनोंको पार करती हुई, जङ्गलोंको छोड़ती हुई गङ्गाकी पूर्व सागर गामिनी धारामें कितने ही स्थानों पर गम्भीर दह पड़ गए हैं। ऐसे ही एक दह पर काशी बसी है जहाँ जलराशि कभी नहीं छीजती। राजघाट और अस्सी घाटके बीचमें भरे हुए इस दहका उल्लेख बौद्ध साहित्यमें आया है। गङ्गाकी घराट निरन्तर चलती हुई पहाड़ी ढोकों और खड़ पत्थरों को पीस कर गङ्गलोढ़ोंके रूपमें, और छोटी बटियोंको बालू-मिट्टीके रूपमें पीसती रहती है। गङ्गासागर तक पहुंचते पहुंचते गङ्गाकी महाघराटका यह पिसान बिल्कुल मैदा बन जाता है। यही मैदा प्रतिवर्ष रूप बदल कर धरतीको धान्य से पाट देता है। वर्षाकालमें गङ्गाका पाट फैलता हुआ दूर-दूर तककी भूमिको रजस्वला मिट्टीसे ढक देता है। इसी रौसली मिट्टीसे हमें खादका कीमिया प्राप्त होता है जो चावल और गेहूँके रूपमें चांदी और सोनेसे हमारे कोठारों को भर देता है। भारतीय मानवके लिये गङ्गाके उपकार का अन्त नहीं है। कितने फूल, कितने तृण, कितने वनस्पति गङ्गाके तटों पर उत्पन्न होते, फूलते फलते और मुरझाते हैं, इसका वार्षिक लेखा गङ्गाकी कीर्तिकथाका अङ्ग है। शरद्में जब उत्तरापथसे लौटे हुए हंस गङ्गाके तटों पर उतरते हैं तो उनसे भरे हुए नदी कूल, शारदीय आकाश का निर्मल चन्द्रहास और टकटक करते हुए तारे, एवं गङ्गाका निथरता हुआ जल ये प्रतिवर्ष घटने वाली सत्य घटनाएं हमारे लिये अद्भुत श्री और सौन्दर्यका सन्देश लाती हैं।

जिस प्रकार केदार बदरी खण्डमें गङ्गा यमुनाकी परली धाराओंका एक गुच्छा है, उसी प्रकार एक दूसरा गुच्छा कुमायूं और पच्छिमी नेपालमें है। सरयू काली कर्णालीका यह नदी गुच्छा हिमालयके मानसखण्डमें है और नन्दाकोट एवं गुरलामांधाताके प्रस्रवण क्षेत्रके जलों को लेकर खीरी गोरखपुरके बीचके मैदानोंको सींचता है। मैदानमें इसे शारदा, चौका, घाघरा कई नामोंसे पुकारते हैं। सरयू काली गोरी गङ्गा और धौली गङ्गा कूर्माचलकी प्रधान नदियाँ हैं। जैसे विशाला बदरीके रास्तेकी नाड़ी अलकनन्दा है, वैसे ही कैलाश मानसरोवरको अलमोड़ेसे जाने वाले मार्गकी नाड़ी काली नदी है। वही अलमोड़े और नेपालके बीचकी सीमा है जिसके किनारे कैलाशका यात्रापथ दूर तक चला गया है। इसके पूर्वमें कर्णालीका स्रोत राक्षसतालके दक्षिणमें है। पुराणोंका बिन्दु सरोवर यही राक्षसताल है। सरयू काली कर्णालीका सम्मिलित जल छपराके पास गङ्गामें मिल जाता है।

मध्य नेपाल और पूर्वी नेपालमें हिमालयसे उतरने वाले दो नदी गुच्छक और हैं जिन्हें सप्तगण्डकी और सप्तकोसी (संस्कृत सप्तकौशिकी) कहते हैं। सप्तगण्डकी और सप्तकोसीके बीचकी पतली पटरी वाग्मती और इसकी शाखा विष्णुमतीकी घाटी है जिसमें नैपालकी राजधानी काठमाण्डू है। वाग्मती और विष्णुमती भी गङ्गामें मिली हैं। कर्णाली गण्डकी, वाग्मनी और कोसीकी सम्मिलित चारदून या द्रोणियोंकी भौगोलिक संज्ञा नैपाल है।

नैपालकी उत्तर पूर्वी सीमाके पास तिब्बतसे सटे हुये

उसके सबसे ऊंचे हिमशृङ्ग गौरीशङ्कर और काञ्चनजङ्गा हैं। गौरीशङ्कर शिखरका उल्लेख वनपर्वके तीर्थ यात्रा पर्व में आया है जहाँ इस चोटीको महादेवी गौरीका त्रिलोक प्रसिद्ध शिखर कहा गया है।

शिखरं वै महादेव्या गौर्यास्त्रैलोक्य विश्रुतम्।
समारुह्य नरः श्राद्धः स्तनकुण्डेषु संविशेत्॥

इसीके पास पार्वतीके स्तनकुण्ड सरोवर हैं। शिवगौरी की काव्यमयी कल्पनाओंसे हिमालयके भौगोलिक नामकरण के कितने ही अध्याय लिखे गये हैं। गौरीके पिता हिमालय हैं और शिव उनके अतिशय प्रिय जामाता हैं।

काञ्चनजङ्गाका जल लेकर ताम्र नदी गौरीशङ्करका जल लेकर आई हुई अरुण नदीसे मिली है। ताम्रारुण सङ्गमका भी महाभारतकारने उल्लेख किया है। ताम्रारुण की संयुक्त धारा कोसीमें मिल कर फिर गङ्गा तक पहुंचती है और कविकी प्रसिद्ध उक्तिके अनुसार नदियोंके अनेक अम्बुवेग परस्पर मिलते हुये अन्तमें समुद्रमें जा मिलते हैं। यह अरुण नदी संसारकी सब नदियोंमें विलक्षण है। स्वीटजरलेण्डके दो पर्वतारोही हाइम और गंसेर १६३६ में कैलाश मानसरोवरकी भू गर्भ सम्बन्धी यात्रा पर गए थे। उन्होंने अपनी पुस्तक 'सेण्ट्रल हिमालय' में लिखा है कि अरुण नदीने पहाड़को चीर कर अपने लिए द्रोणी बनाई है वह संसारकी सब नदी घाटियोंमें गहराईमें अधिक है (डीपेस्ट ट्रेन्सवर्स गार्ज आफ अवर ग्लोब)। अपने इस विक्रमके कारण अरुण नदीको हमारी समाजमें अधिक ख्याति मिलनी चाहिये।

भारतवासी तीर्थयात्राके सम्बन्धमें अरुण नदी तक पहुंचते थे इसकी साक्षी महाभारतसे मिलती है। एवरेस्ट की ऊंची चोटीसे जहाँके वांक अरुण नदीको जन्म देते हैं, अरुण नदीकी भीमकाय तलहटी अठारह बीस हजार फुट गहरी है। इतना कटाव अरुण नदीकी तेज धारने किया है। हाइम गंसेरने यह भी कहा है कि उनसे पहले किसी वैज्ञानिकने इस नदी घाटीकी भू गर्भ यात्रा नहीं की थी। ताम्र, और अरुण आज तक अपने पुराने नामोंसे विख्यात हैं। वस्तुतः वे नेपालकी नदियां हैं पर प्राचीन भारतीय भूगोलका अङ्ग थीं।

"गीता और अहिंसा"

ले०—व्याकरणाचार्य श्री पं० विश्वप्रियजी शर्मा

[चतुर्विधवर्ण से परिपूर्ण भारत एक समय संसारका शिरोमणि राष्ट्र था। मानव सभ्यता और संस्कृतिका पाठ उसीने सबको पढ़ाया था, पर जब राष्ट्र निर्बल और निर्धन हो जाता है तब उसकी आध्यात्मिकता और दार्शनिकता एक ओर पड़ी रह जाती है। अतः अपने अतीतको पुनः प्राप्त करने के लिए हमारा कर्त्तव्य है, हम भगवान् श्रीकृष्णके उपदेशको अपने जीवनमें अक्षरशः परिणत करें तभी हमारी सर्वतोमुखी उन्नति होगी। इसी विषयका प्रतिपादन उक्त लेखमें बड़ी सुन्दरताके साथ विद्वान् लेखकने किया है —सम्पादक]

जिस मनुष्य ने संसार में पाञ्चभौतिक इस नश्वर देह को धारण कर एक बार संस्कृत साहित्य सुधा मानसरोवर के शीतल सुरभित सुधामधुर गीतापीयूष का पान किया है; वह व्यक्ति पाश्चात्य सभ्यताकी मरुमरीचिका या गन्दे नालेके कसैले दुर्गन्ध युक्त पानीसे अपनी प्यास बुझाना नहीं चाहता। यही कारण है कि आज श्री भगवत् गीता का नाम आबालवृद्ध सबकी जिह्वापर है। संसार में शायद ही कोई ऐसी अभागिनी भाषा होगी जिसमें इसका अनुवाद न हुआ हो। भिन्न भिन्न आचार्यों तथा व्यक्तियोंने गीताको विविध दृष्टिसे देखा है। किंतु गीता सर्वाङ्गपरिपूर्ण ग्रन्थ है। इसीके कारण महाभारतको भारतीय भक्तजन पाँचवाँ वेद कहकर पुकारते हैं। कोई कोई आचार्य तो इस गीताको प्रवृत्ति परक मानते हैं। और कोई निवृत्ति परक। परन्तु गीताने किस विषयका प्रतिपादन किया है इसका सर्वसम्मत कोई निर्णय अभी तक नहीं हो सका है। हां! श्री जगतगुरु शंकराचार्य गीताको ज्ञान योगपरक, श्री रामानु-

आचार्य भक्तियोगपरक, एवं स्वर्गीय लोकमान्य तिलक गीताको कर्मयोगपरक मानते हैं। महात्मा गांधीजीने अहिंसा परक माना है। इसलिए वे अहिंसावादी होते हुए गीताके उपासक थे। कोई किसीभी दृष्टिसे इसे देखे परन्तु गीता रहस्य संग्राह्य तथा उपोदय वस्तु है। पर इससे किसीको नकार नहींकि जिस प्रकार कुछ दिनपूर्व अभी जब यूरोपीय महायुद्धके विश्वानिदेव पर हिटलर और बृटेन नरसंहारके लिये तुल गये, उस समय महात्मा गांधीने दोनोंको अहिंसाके मार्गसे अपना निबटारा कर लेनेकी श्रेष्ठ सम्मति दी थी, चाहे वह कार्यरूपमें परिणत न हो सकी, और लचर समझकर छोड़दी गई थी। ठीक उसी प्रकार जब देश सहस्र हाथियों का बल रखने वाले अपनी तलवारके बलपर दुर्दान्त दुर्योधनने भगवान् श्री कृष्णके कहने पर पाँच ग्राम पाण्डवोंको देना स्वीकार न किया और "सूच्यग्रंनैव दास्यामि विना युद्धेन केशव" कहकर कोरा उत्तर भगवान्-को देदिया। विवश होकर भगवानको युद्धकी तैयारी करनी पड़ी और स्वयं अर्जुनके सारथी होकर कौरव सेनासे मुठ् भेड़ करनेके लिये कुरुक्षेत्रके विशाल मैदानमें उतरना पड़ा। समराङ्गणमें अर्जुनने जिस समय अपने समक्ष अपने भाई बन्धुओं तथा गुरुजनों को देखा, वे उद्विग्न हो उठे। और मोहसे ग्रसित होकर उन्होंने भगवान्से निवेदन किया कि—

गुरुन् हत्वाहिमहानुभावान् —
श्रयो भोक्तुं भैक्ष्यमपीह लोके
हत्वार्थ कामांस्तु गुरुनिहैव
भुञ्जीय भोगान् रुधिर प्रदिग्धान् ॥

हे जनार्दन! आप इस युद्धमें किस किसका हनन मुझसे कराते हो। सामने ही भाई-बन्धु तथा गुरुजन खड़े हैं, मैं गुरुजनोंको मारकर राज्य नहीं चाहता, जिस राज्य केलिये गुरुजनोंकी हत्या करनी पड़े वह राज्य ही क्या? इस राज पाटसे तो मैं भीख मांगना अच्छा समझता हूँ। इस लोकमें ही धर्म अर्थ कामके देने वाले गुरुओंको मारकर क्या मैं उनके रुधिरसे सिंचन किये भूभागों कोभोगूं? मैं ऐसा नहीं चाहता आपही लड़ लिजिये, मुझे यह राज्य नहीं चाहिये।

अपि त्रयलोक्य राज्यस्य
हेतो किन्नु महीकृते।
निहत्यधार्तराष्ट्रान्नः
का प्रीति: स्याज्जानार्दन ॥
पापमेवाश्रयेदास्मान्
हत्वैतानाततायिनः।
तस्मान्नार्हावयं हन्तुं
धार्त्त राष्ट्रान् स्वबान्धवान् ॥

हे जनार्दन! इस त्रिलोकके राज्यके हेतु भी कौरवोंको मारनेकी इच्छा मैं नहीं करता। इन सबको मारकर मुझको उलटा पाप ही लगेगा। इसीलिए हमाराकौरवों को मारना उचित नहीं और "विसृज्य सशरंचापं शोक संविग्न मानसः" इसप्रकार शोकसे व्याकुल हो, बाणके सहित धनुषको छोड़कर ,'रथोपस्थे उपाविशत्" रथ पर बैठ गया भारतको भी ठीक उसी प्रकार मोह प्राप्त हुआ है। धनजन वैभवके नाशसे उद्विग्नता दिखा भारत युद्धसे पराङ्मुख हो अहिंसा अहिंसा चिल्ला रहा है। आज भारतको भगवान्के उसी उपदेश की आवश्यकता है।

भगवान्ने वीर अर्जुनको आत्मा परमात्मा और प्रकृति के स्वरूपको नित्य तथा शरीर व वैभवोंको नष्ट होने वाला बतलाते हुये कहा—

यदृच्छया चोपपन्नं स्वर्गद्वारमपावृतम्।
सुखिनः क्षत्रिया पार्थ! लभन्ते युद्धमीदृशम् ॥

हे अर्जुन! जो तू इसको समझकर दूर भागता है, वास्तव में यह युद्ध नहीं है। यह तो स्वर्गका खुला द्वार है। और अकस्मात् ही तुम्हारे सौभाग्यसे तुम्हें प्राप्त हुआ है। इस प्रकारका श्रेष्ठतम् युद्ध तो सौभाग्यशाली क्षत्रिय वीरोंको ही प्राप्त हुआ करता है। इस संसारमें न कोई किसीका भाई है; न बन्धु, न माता है न पिता, यह तो इस नश्वर देहके साथ ऐहिक सम्बन्ध है, जो यहां ही रह जायगा। क्योंकि—

अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ता शारीरिणः।
अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत! ॥ (२-१८)

हे भारत अर्जुन! इस अविनाशी अप्रमेय शरीरी के ये सारे देह अन्तवाले हैं, नश्वर हैं, इनका नाश

अवश्यम्भावी है, इसीलिए तू युद्धके लिए कमर कस कर तैयार होजा।

य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम्।
उभौ तौ न विजानीतो, नायं हन्ति न हन्यते ॥ २।१९

हे वीरवर! जो इस अविनाशी आत्माको हन्ता अर्थात् मारने वाला समझता है, वे दोनों इसके वास्तविक रूपके समझनेसे परे हैं। वे इसके स्वरूपको नहीं जानते। बल्कि—

नैनंछिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहतिपावकः।
नचैनं क्लेदन्त्यापो, न शोषयति मारुतः॥

हे वीर इस आत्माको शस्त्र काट नहीं सकता, अग्नि जला नहीं सकता और पानी गला नहीं सकता और वायु सुखा नहीं सकता है। इसलिये इसके वास्तविक स्वरूपको पहिचान कर खड़ा हो जा। नपुंसकताको छोड़। आत्माका यह शरीर कपड़ा ही है। इस जन्ममें मनुष्य देह मिला है। बुद्धिका दिवाला निकाल इसे कलंकित मत कर। अतः रथ पर बैठ, शस्त्रोंको संभाल, क्योंकि क्षत्रियों का धर्म—

"अधर्म क्षत्रियस्येष, यच्छैया मरणं भवेत्"

शैया पर सड़कर मरना क्षत्रियके लिये इससे बढ़कर घोरतम अधर्म और कोई नहीं है।

"नगृहे मरणं तात क्षत्रियाणां प्रशस्यते।"

हे तात अर्जुन! क्षत्रियोंको घरमें मरना श्रेयस्कर नहीं। तू इन आततायी बान्धवोंमें रहकर गीदड़की मौत मरना चाहता है। तू सिंह है। माता कुन्तीने तुमको आज के ही लिये स्तनोंका दूध पिला कर पाला है। क्षत्रियोंकी युद्ध तो जीविका है। और तू क्षत्रियत्वको छोड़कर पीछे भागना चाहता है। सोचो और गहरी दृष्टिसे सोचो। क्योंकि—

हतो वा प्राप्स्यसिस्वर्गं, जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय। युध्दाय कृतनिश्चयः

हे रणबांकुरे वीर अर्जुन! यदि तू इस युद्धमें मारा गया, तो स्मरण रख स्वर्गका द्वार तेरे लिये खुला है। और यदि सौभाग्यसे जीत हो गई तो समस्त संसारका राज्य तुझे मिल जायगा। इस लिये युद्धका निश्चय कर उठ खड़ा हो।"

अर्जुन इस वीरतामय सान्त्वनापूर्ण उपदेशको ध्यान से सुनता रहा और सोच विचार कर शस्त्रोंको संभाल खड़ा हो गया, जिसका यह परिणाम हुआ कि अठारह अक्षौहिणी सेना केवल १८ दिनमें कट कर मर गयी।

अहिंसाकी मोहमयी मदिरा पिये हुए प्रमत्त, कर्तव्य पराङ्मुख भारतको आज इसी सुधारस अमरसंजीवनीकी आवश्यकता है।

आज अहिंसाका मार्ग सामयिक परिस्थितिसे देशके लिये चाहे कितना ही हित कारक क्यों न हो, परन्तु भगवान् कृष्ण इस सिद्धान्तको मानने वाले न थे। लोक में कहावत भी है "जिसकी लाठी उसकी भैंस" शक्तिके आगे सबका शरीर झुक जाता है। शल्यपर्वमें आया है—

मायाविन इमांमायां मायया जहि भारत।
मायावी मायया वध्यः सत्यमेतद् युधिष्ठिर

हे धर्मराज! मायावीकी इस मायाको मायासे मारो, मायावी मायासे मारने योग्य है। यही सत्य सिद्धन्त है! मनुस्मृतिमें भी आया है कि—

आहवेषु मिथोऽन्योन्यं जिघांसन्तो महीक्षिताः।
युद्धमानाः परं शक्त्या, स्वर्गं यान्त्यपराङ्मुखा॥

आवह (युद्धस्थल) में वीरमहीक्षित लोग एक दूसरेके हननकी इच्छा करने वाले, परम शक्तिसे युद्ध करते हुए अपराङ्मुख हुए, स्वर्ग धामको प्राप्त होते हैं।

रणक्षेत्रमें क्रोधाविष्ट वीरोंके समक्ष मारने-काटनेके अतिरिक्त अहिंसाका नाम भी नहीं आता। अहिंसासे हो भी क्या सकता है? क्रोधीकी क्रोध ज्वाला तो क्रोधसे शान्त होती है। शान्तिका उपदेश काम नहीं देता।

राजनीतिमें रोटीका प्रश्न है। या कम से कम आज-कल प्रकृतिके उपासकोंने इसे विशेष रूपसे रोटीका प्रश्न बनाया है। अंग्रेजोंका भारतके बिना पेट नहीं भर सकता। महात्माके बिना रोटी, बिना डण्डेके दूसरा कौन देगा? और वह भी भूखा रह कर।

महाभारतके शान्तिपर्वके ७०६ अध्यायमें ['यः स्यादहिंसा युक्तः स धर्म इति निश्चयः'] द्वारा वेद-निष्ठ भगवान् व्यासजीने धर्मको अहिंसायुक्त माना है।

परन्तु भगवान्का अभिप्राय तो राजर्षि भगवान् मनुके कथनानुसार था।

आहवेषु मिथोऽन्योन्यं जिघांसन्तो महीक्षिताः।
युद्धमानाः परं शक्त्या स्वर्गं यान्त्यपराङ्मुखाः॥

रणभूमिमें वीर योद्धा परम शक्ति लगाकर एक दूसरे को मारकर युद्धसे अपराङ्मुख हुए स्वर्गको प्राप्त होते हैं।

भगवान् कृष्णने तो ऐसा माना है, पर प्राचीन स्मृतियाँ तो इससे और भी आगे बढ़ गई हैं; उन्होंने तो यहाँ तक कहा है।

"शस्त्रं द्विजातिभिर्ग्राह्यं धर्मो यत्रोपरुध्यते'

अर्थात् धार्मिक कृत्योंमें विघ्न-बाधायें तथा अत्याचार देखकर द्विजातिमात्रको शस्त्र उठा लेना चाहिये।

महाभारतमें जहाँ ब्राह्मणोंका परम धर्म दान, आदान, अध्यापन और तप बतलाया है। वहाँ पर—

ब्राह्मणानां यथाधर्मो दानमध्ययनं तपः।
क्षत्रियाणां तथा कृष्ण! समरे देहपातनम्॥

हे कृष्ण! जिस प्रकार ब्राह्मणोंका धर्म दान, अध्ययन, तप है, ठीक उसी प्रकार क्षत्रियका धर्म समरभूमिमें लड़कर मरना है।

भगवान् भी ["स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः" के अनुसार अपने धर्मके अनुकूल वर्तनमें यदि मौत भी हो जाय तो श्रेयस्कर समझते थे।

यह था भगवान् कृष्णका आदर्श जिसको हम सहस्त्रों वर्षसे भूल बैठे हैं।

भारत सन्तति आज पाश्चात्य सभ्यता तथा प्रकृतिकी मोह-मायामें फंसकर अपनेको भूल गई है। भले ही वह भगवान्के शस्त्र-प्रयोगको भूल जाये; परन्तु श्रीमद्भगवत गीताका निर्माण तलवारकी धार पर ही हुआ है। भगवान् ने हिमालयकी कन्दराओंमें अखण्ड ब्रह्मचर्यका परिपालन कर वर्षों तक शस्त्र विद्याको सीखा था। भगवान् ने स्वयं स्वमुखारविन्दसे अश्वत्थामाको कहा था कि हे अश्वत्थामा! तू इस सहस्त्र आरको क्या चलाना चाहता है, मैंने बारह वर्ष तक घोर ब्रह्मचर्यका पालन कर हिमालयकी कन्दराओंमें रहकर इसको सीखा है। यह था भगवान्की शिक्षाका आदर्श,

अहिंसामयी भावनाओंके बीच भी स्व० रामप्रसाद बिस्मिलने क्या ही सुन्दर शब्दोंमें कहा था कि—

क्या ही लज्जत है कि
रग-रग से यह आती हो सदा,
दम न ले तलवार जब तक
जान 'बिस्मिल' में रहे।
बिस्मिल की दिले आग
बिस्मिल में रहगई;
तलवार खिंच के खञ्जरे
कातिल में रह गई॥

तत्त्वकी बात

अपरिचित व्यक्तिसे भी आकर्षण हो जाता है। वनस्पति-विज्ञान न जानने वाला व्यक्ति भी पुष्पकी सुगन्धका पूरा आनन्द प्राप्त करता है, पाक-विज्ञानसे अनभिज्ञ मनुष्य भी मोहनभोगका आस्वाद पूरा ले लेता है, इसी प्रकार मनुष्य भगवान्की भक्तिको भगवान्के पूर्ण परिचयके बिना भी कर सकता है।

१—गाँवमें रहने वालेको गँवार कहना ठीक नहीं। सत्यको व्यर्थ गँवाने वाला ही असली गँवार है।

२—संसारका विश्वास अपने ऊपरसे उठ जानेसे पूर्व संसारसे उठ जाता है।

३—जिन्हें चाट खानेकी अत्यधिक चाट पड़ जाती है उन्हें वह चाट ही चाट जाती है।



दीपमाला का वैज्ञानिक रहस्य

प्राचीन भारतमें दीपावली और लक्ष्मी पूजनका स्वरूप

ले०—श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य

हमारा प्रत्येक त्यौहार आर्य संस्कृति और भारतके उज्ज्वल इतिहासको जीवित रखनेका प्रधान साधन है। त्रिकाल दर्शी महर्षियोंने प्रत्येक पर्व त्यौहारकी रचना लोक कल्याणके लिए वैज्ञानिक आधार पर की थी। यदि इन त्यौहारोंके वास्तविक रूप को समझ कर उन पर आचरण किया जाय तो संसारका बहुत कुछ कल्याण होसकता है। पारतन्त्र्य दोषके कारण हमने इन पर्वोंके वास्तविक रूप को भुला दिया था, किन्तु अब स्वतन्त्र भारतके प्रत्येक नागरिकका कर्त्तव्य है कि वह अपने पुण्य पर्वोंके वैज्ञानिक रहस्योंको भली भाँति समझ कर अपने पूर्व गौरवको पुनः प्राप्त करे।

दीपमाल या लक्ष्मी पूजनका यह पर्व हमें भौतिक एवं आध्यात्मिक सभी दृष्टियोंसे उत्कर्ष और प्रकाशकी ओर ले जाने वाला है। वैसे तो संसारके अनेकों भागोंमें दीपमाला या रोशनी करनेके उत्सव भिन्न २ रूपोंमें प्रचलित हैं, किन्तु जिस वैज्ञानिक व आध्यात्मिक गूढ़ तत्वको लिए हुए हमारा यह दीपावली उत्सव अनादि कालसे चला आ रहा है वैसा संसार में अन्यत्र कहीं नहीं मिलेगा।

दीपमाला और लक्ष्मी पूजनका वैज्ञानिक स्वरूप

आश्विन मासमें कन्याका सूर्य जब सात अंश पर जाता है, उस दिन (ता० २१ सितम्बरको) सूर्य विषुवद्वृत्त (इक्वेटर) पर रहता है। अतः इस दिन संसारमें सर्वत्र दिन रात बराबर होते हैं। ज्योतिषकी परिभाषामें इस दिन को शरत्सम्पात दिन वा विषुव दिन भी कहा जाता है। अतः यहींसे उत्तर गोलके भूभाग पर दिन क्रमशः छोटे और रात्रियां बड़ी होने लगती हैं। ध्रुव प्रदेशमें छः मास का दिन और छः मासकी रात्रि होती है। यह उत्तरध्रुव प्रदेश आर्योंका महत्वमेण्डित स्थान है। इसे दिव्य लोक या देवलोक भी कहा जाता है। एतदर्थ हमारे एक सौर वर्षको 'देवताओंका एक दिव्य अहोरात्र' नाम दिया गया है। इस उत्तर ध्रुव प्रदेशमें सूर्योदय सायन मेष संक्रांति (२१ मार्च) को होता है और ठीक छः मास बाद २१ सितम्बरको सायन तुला संक्रान्तिमें सूर्यास्त हो जाता है। दिन और रात्रिके सन्धिकालको ही सन्ध्या समय कहते हैं। इसी वैज्ञानिक तत्वके आधार पर आज भी भारतमें कन्या के सूर्यमें (आश्विन शुक्ल पक्ष नवरात्रोंमें) कुमारी कन्याएं सायंकालके समय घरके आंगनमें दीवारों पर गोमयसे भगवती गौरीकी मूर्ति बनाकर भाँति भाँतिके सुन्दर पुष्पो से सन्ध्या (सांझी) पूजती हुई सरस्वती रूपा महाशक्ति का आवाहन करती हैं। महाशक्ति जगदम्बा रात्रि रूपा हैं और जगत् पिता महेश्वर दिवा रूप हैं—

"रात्रि रूपा यदा देवी दिवा रूपो महेश्वरः"

अत इस दिव्य रात्रिके प्रारम्भमें ही (प्रथम नवरात्रि वा आश्विन शुक्ल प्रतिपदासे ही) जगदम्बाके पूजार्चन द्वारा भारतीय आर्य जनता 'श्री राष्ट्रालोक' की निम्न कारिकाके अनुसार—

राष्ट्रकली राष्ट्रलक्ष्मी तथा राष्ट्र सरस्वती।
सेवीनया प्रयत्नेन भोग मोक्ष प्रदायिनी ॥

अपने राष्ट्रको सर्वविध शक्ति सम्पन्न एहलौकिक एवं पार लौकिक सुखको प्राप्त करते थे। क्योंकि शक्तिके बिना कोई भी राष्ट्र या प्राणी जीवित नहीं रह सकता। और तो क्या अखिल ब्रह्माण्ड नायक भगवान् 'शिव' शक्तिके बिना 'शव' रूप हो जाते हैं। इसी लिए शक्तिकी महिमा बताते हुए वे स्वयं कहते हैं—

शक्तिं बिना महेशानि! सदाऽहं शवरूपकः।
शक्ति युक्तो यदा देवि! शिवोऽहं सर्वकामदः ॥

शक्ति पूजा द्वारा शक्ति संचयके लिए भी कोई खास समय होता है। जिस प्रकार ठीक समय पर बोया हुआ बीज ही पूर्णरूपेण फली भूत होता है, उसी प्रकार समय

पर की हुई शक्ति पूजा ही राष्ट्रकी शक्ति सम्पन्न बना सकती हैं। भारत ज्ञान-शक्ति प्रधान अध्यात्मिक राष्ट्र रहा है। अतः सर्व नवरात्रोंमें राष्ट्र सरस्वतीके रूपमें जगदम्बाके पूजन द्वारा – 'विद्यासमस्तास्तव देवी भेदा' के अनुसार निखिल ज्ञान विज्ञान रूपिणी विद्या शक्तिका संचय किया जाता था, फिर कार्तिक कृष्ण ८ अहोहीको दुष्ट दमन कारिणी भैरवी शक्तिके रूपमें भगवती महाकालीका पूजन करके जगदम्बाके शब्दोंमें—

"गर्ज गर्ज क्षणं मूढ़! मधुयावत् पिवाम्यहम्।
मयात्वयि हतेऽत्रैव गार्जिष्यन्त्याशु देवताः॥

इस असुर संहार कारिणी शक्तिका वरदान प्राप्त कर राष्ट्रोंको सब प्रकारकी आपत्तियों से बचाते थे।

इसके अनन्तर कार्तिक कृष्ण अमावस्याकी महानिशा (मोह रात्री) में राष्ट्र लक्ष्मी के पूजन द्वारा अपने राष्ट्र की सर्वविध शक्त, श्री सम्पन्न बनाकर यह राष्ट्रिय प्रार्थना करते थे—

ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषां
तेषां यशांसि नचसीदतिधर्म वर्गः।
धन्यास्त एव निभृतात्मज भृत्यदारा
येषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना॥

कार्त्तिक में ही दीपमाला क्यों?

यह हम आरम्भमें ही बता चुके हैं कि—आश्विनमें ध्रुव प्रदेश वा दिव्यलोकका सन्ध्याकाल होता है और दीपककी आवश्यकता सूर्यास्तके अनन्तर पड़ती ही है। एतदर्थ नवरात्रिसे ही शक्ति स्थानों (देवालयों) में घृत तैल दीपक, आकाश दीपदान आदि द्वारा शारदीय उत्सव प्रारम्भ हो जाते हैं। सन्ध्याके अनन्तर कार्त्तिकी अमावस्या की मोह रात्रिमें घनान्धकार होना स्वाभाविक ही है। इस अविद्या व अज्ञानरूप प्रगाढ़ अन्धकारको मिटानेके लिए दीप स्तम्भ व दीप पंक्तियोंकी आवश्यकता होती है। इसी वैज्ञानिक तत्वके आधार पर कार्त्तिक कृष्ण अमावस्याके दिन भारत के घर घर में भगवती महालक्ष्मीके स्वागतार्थ दीपमाला एवं लक्ष्मीपूजन महोत्सव मनाया जाता है। वर्षा ऋतुमें सूर्यका प्रकाश पूर्णरूपमें न पड़नेसे घरोंमें अनेक प्रकारके रोगाणु उत्पन्न हो जाते हैं। तथा अनियमित वृष्टिके कारण न तो सीलसे भरे हुए घरोंकी सफाई सम्भव होती है और न प्रकाश कान्ति भाव ही होता है। इसी प्रकार अत्यधिक शीत पड़ने पर भी स्वच्छता उतनी नहीं हो सकती। और न शीत वातावरणमें दीपक ही अबाधितगतिसे प्रज्ज्वलित रह सकते हैं। इन्हीं सब वैज्ञानिक तत्वोंके आधार पर हमारे क्रान्तिदर्शी महर्षियोंने ग्रीष्म, वर्षा या हेमन्तमें यह दिवाली महोत्सव न रखकर कार्त्तिक मासमें दिव्य सन्ध्याकालके अनन्तर रखा है।

वैश्य प्रधान त्यौहार क्यों?

कार्त्तिक कृष्ण अमावस्याको सूर्य चन्द्रमा आकाशमें तुला राशि पर होते हैं। सूर्य संसारकी आत्मा और चन्द्रमा मन है। संसारके वाणिज्य व्यवसाय संचालन का मापदण्ड तुला (तराजू) है और वाणिज्य व्यपार आदिका कार्य स्वभावतः वैश्य वर्गके हाथमें है।

"कृषिगोरक्ष्यवाणिज्यवैश्य कर्म स्वभावजम्"

कार्त्तिक अमावस्याको संसारकी आत्मा और मन (सूर्य और चन्द्र) तुला राशिमें होनेसे इस लक्ष्मी पूजनका विशेष सम्बन्ध वैश्य वर्गसे है। जिस प्रकार लक्ष्मी पूजनके अमान्तकालमें ज्योतिगणनानुसार सूर्य चन्द्रमा तुला राशि के बराबर समान अंशकला पर रहते हैं, उसी प्रकार संसार के छोटे-मोटे व्यापारियों एवं धनपतियोंको न्यायकी तुलासे राष्ट्रका सन्तुलन व्यवस्थित रखते हुए उदार बनना चाहिए। इसीमें उनका एवं राष्ट्रका कल्याण है। चोर बाजारी, अनुचित मुनाफाखोरी आदिसे अन्याय मार्गद्वारा राष्ट्रका शोषण करके यदि वे लक्ष्मी पूजन करते हैं तो राष्ट्र लक्ष्मी कभी उन पर प्रसन्न नहीं होगी। राष्ट्र लक्ष्मीकी वास्तविक पूजाके अधिकारी हम तभी हो सकते हैं जबकि घरकी सफाईके साथ साथ अपने अन्तःकरणकी भी शुद्धि करें और राग, द्वेष, ईर्ष्या, छल, कपट, कुटिलता, कलङ्क व कालुष्यको काट कर प्राणीमात्रके प्रति प्रेम एवं प्रभुपद प्रीतिकी प्रभासे अन्तर्जगत्को भी आलोकित करदें।

लक्ष्मी पूजन नवनिर्माण का दिन है

पुराणोंमें कथा आती है कि वेनकालमें एक बार पृथ्वीने सब प्रकार की औषधियां और घृत, दुग्ध, रत्नादि

समस्त पदार्थोंको निगल कर संसारको श्रीविहीन बना दिया था। अर्थात् पृथ्वी पर अन्न, वस्त्र, घृत, दुग्ध, औषधियां एवं स्वर्ण रत्नादि पदार्थोंका बिलकुल अभाव सा होगया था। तब महाराज पृथुने कार्त्तिक कृष्ण अमावस्याके दिन उक्त सभी वस्तुएं पृथ्वीसे प्राप्त करके नवनिर्माण योजनासे संसार को पुनः श्री सम्पन्न बनाया था, अतः इसी दिन से श्री पूजन प्रारम्भ हुआ। आज भारत स्वतन्त्र होते हुए भी श्री विहीन (घृत, दुग्ध, सुवर्ण, रत्नादि पदार्थ अदृश्य) होता जा रहा है। अतः राष्ट्रके कर्णधारों एवं धनपतियों का प्रधान कर्तव्य है—कि वे महाराज पृथुकी भांति अपने उत्तरदायित्वको समझकर इस पवित्र दिनसे नवनिर्माण योजनाको कार्यरूपमें परिणत करते हुए भारतको पुनः श्री शोभा एवं समृद्धिसे समुन्नत बनायें, तभी हमारा लक्ष्मी पूजन सार्थक होगा, अन्यथा घरोंकी सफाई करके अन्तर्जगत् (मन) की शुद्धि किये बिना ही बिजलीके लाटुओं और आतिशबाजीके चकाचौंधमें बनस्पति घीकी बनी हुई मिठाइयोसे भगवती लक्ष्मी पूजाके नाम पर चांदीके टुकड़ों पर अङ्कित एक अंग्रेजकी मूर्त्ति या आभूषणोंकी पूजा का आडम्बर या नकल करनेसे अपना तथा राष्ट्रका कोई हित न होगा। रुपया, पैसा, आभूषणादि वस्तुएं तो भगवती राष्ट्र लक्ष्मीका प्रसादमात्र हैं। राष्ट्र लक्ष्मीको प्रसन्न किए बिना केवल प्रसादकी पूजा करना निरर्थक है। राष्ट्रमें उद्योग धन्धोंका विकास करके प्रत्येक व्यक्तिको पूर्ण सुखी और समृद्ध बनानेका प्रयत्न करते हुए जब हम—

सर्वे वै सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु माकश्चिद्दुःखभागुभवेत् ॥

इस उदात्त भावनासे लक्ष्मी पूजन करना सीखेंगे तभी हम अपना तथा विश्वका कल्याण कर सकेंगे।

ज्योतिष का आरम्भिक शिक्षण

ले०—श्री पं० बलदेवजी ज्यौतिषाचार्य

वर्तमान समय में अन्य शास्त्रो की भांति ज्यौतिष शास्त्र का भी प्रारंभिक शिक्षण स्वतन्त्र है, अर्थात आरंभ से ही लोग फलित ज्यौतिष के बाल बोध, शिशुबोध, शीघ्र बोध, मुहूर्तचिन्तामणि आदि ग्रन्थ पढ़ने लगते हैं। ज्यौतिषशास्त्र की यह विशेषता है कि जितना भी अंश इस शास्त्र कापढ़ा जाये सब उपयोगी होता है। बालबोध शीघ्रबोध तक पढ़ने वाला छात्र भी मुहूर्त्त देखने के योग्य हो जाता है। नीलकण्ठी केशवी, जातकालंकार तक पढ़ने वाला जन्मपत्र, वर्षफल बना लेता है और कुण्डली का फल भाषण करता है। उसके आगे गणित पढ़ने वाला व्यक्ति गणितज्ञ होता है और सिद्धान्त ग्रन्थ पढ़ने वाले पूर्णज्यौतिषी होते हैं।

ज्यौतिषशास्त्र व्यवहारोपयोगी है इस लिये अनेक व्यक्ति प्रारम्भिक अंश को पढ़ कर व्यवहार कार्य में लग जाते हैं और आगे अध्ययन नहीं करने पाते। ज्यौतिष के आरम्भिक अंश का पढ़ा हुआ व्यक्ति भी व्यवहार कार्य में पटु होने के कारण पूर्ण ज्यौतिषी के रूप में ही संबोधित होता है। इस प्रकार अत्यल्प यत्न से भी बहुत बड़े यश को प्राप्त कर लेता है। इस विषय को बहुत अल्प लोग जानते हैं कि ज्यौतिष शास्त्र त्रिस्कन्ध है, फलित विषय तो ज्यौतिष का केवल एक अंश मात्र है और फलित विषय भी स्वयं एक प्रकाण्ड विषय है इसके अन्तर्गत यात्रा, शकुन जातक, स्वरोदय, रमल, ताजक सामुद्रिक, वास्तु, संहिता आदि अनेक प्रकरण हैं, जो एक-एक समुद्र के सदृश हैं, तथापि केवल यात्रा या जातक या उसके अंशमात्र का ज्ञाता भी व्यवहार दशा में अपने को पूर्ण ज्यौतिषी कहता है यह विशेषता इसी शास्त्र में है।

बहुत स्थानों में ऐसा भी देखने में आता है कि कुण्डली देखकर अच्छा फल कहने वाला व्यक्ति लग्न, ग्रह नहीं बना सकता तथापि जितना ही ज्ञान उस व्यक्तिमें है उसका अच्छी तरह से वह उपयोग करता है और अपनेको ज्यौतिषी कहाता है।

यद्यपि एक दृष्टि से वर्त्तमान शिक्षण भी उपयोगी है, क्योंकि जितना ही ज्ञान जिज्ञासु प्राप्त करता है उसका उपयोग करता है किन्तु तत्वदृष्ट्या इस शिक्षण में बहुत दोष हैं; इसलिये इस शिक्षण में संस्कार (सुधार) होने की आवश्यकता है। प्रथम दोष यह है कि ऐसे शिक्षण से शिक्षित व्यक्ति संस्कृत व्याकरण ज्ञान से रहित होते हैं। संस्कृत विषयका विद्वान होना और साधारण संस्कृतके नियम से अपरिचित रहना बड़ा दोष है, इस लिये संस्कृत शिक्षित विद्वानों में ज्योतिषी और वैदिकों का स्थान नीचे रहता है क्योंकि सामान्यतः ये लोग संस्कृत व्याकरण ज्ञान विहीन रहते है जिस से सभा में बोलने योग्य नहीं होते। ज्यौतिष के बड़े आंचार्य श्री भास्कराचार्य ने व्याकरण ज्ञान विहीन ज्यौतिषियों की बड़ी निन्दा की है:—

"वाग्मी व्याकरणं विनैव विदुषांधृष्टः प्रविष्टः सभाँ
जल्पन्नल्पमतिः स्मयात पटु वटु भ्रु भङ्ग वक्रोक्तिभिः
हीणः सन्नुपहासमेति गणको"

अर्थात सभा में बिना व्याकरण जाने कोई शास्त्रार्थमें प्रवृत्त होता है तो व्याकरणज्ञ छात्रके भ्रु भङ्ग वक्रोक्तिसे लजित होकर उपहासको प्राप्त करता है, इस लिये व्याकरण ज्ञान आवश्यक है। पुनः दूसरे स्थानमें वे ज्योतषच्छात्र को उपदेश देतेः—

द्विविध गणित मुक्तं व्यक्तमव्यक्तयुक्तं
तदवगमननिष्ठः शब्द शास्त्रे प्रतिष्ठः
यदि भवति तदेदं ज्यौतिषं भूरिभेदं
प्रपठितुमधिकारी सोऽन्यथा नामधारी

अर्थात् व्यक्त अव्यक्त दो प्रकारके गणित हैं, उनको जाननेवाला तथा व्याकरण शास्त्रमें अत्यन्त पटु व्यक्ति ही इस ज्योतिष-शास्त्रके भूरिभेदके जाननेका अधिकारी है। इस प्रकार व्याकरण ज्ञान ज्योतिषीके लिये परमावश्यक वस्तु है। ततः पर गणित ज्ञान भी ज्योतिषीके लिये बहुत आवश्यक है, चाहे वह ज्योतिषी फलितज्ञ ही क्यों न हो। ऐसा भी देखनेमें आया है बिना व्याकरण ज्ञानका भी छात्र यदि किसी सुबोध व्याकरण ज्ञान संपन्न ज्योतिषीसे पढ़ता है तो शुद्ध उच्चारण, शुद्ध अन्वय अर्थ पढ़नेके कारण वह छात्र कुछ दिनमें व्युत्पन्न हो जाता है क्योंकि ज्योतिष तो एक प्रकारका साहित्य ग्रंथ है इसलिये शुद्ध शुद्ध पढ़नेसे भी छात्रमें सुबोधता आती है और व्याकरणज्ञ गुरु उस छात्रको व्याकरण ज्ञानका भी संकेत देते ही हैं इसलिये वह छात्र सुबोध हो जाता हैं, किन्तु जहाँ तहाँ जिस किसी ज्योतिषीके पास पढ़नेसे बोध बढ़ता तो है नहीं केवल अशुद्धियोंका अभ्यास हो जाता है, इसलिये सबसे अच्छी बात यह है कि प्रारंभिक व्याकरण ज्ञान प्राप्त करके तब ज्योतिष ग्रंथोंको पढ़े। प्रारंभिक व्याकरण ज्ञानका अभिप्राय यह नहीं है कि लघुकौमुदी, सारस्वत चन्द्रिका, मुग्धबोध या कलाप व्याकरण सीखे किंतु शब्द रूप, धातुरूप, सन्धि स्त्री प्रत्यय, कारक समास, परस्मैपद, आत्मनेपद प्रक्रिया आदि विषयोंका अन्यथा भी ज्ञान प्राप्त करले तो वह प्रारंभिक व्याकरण ज्ञान संपन्न व्यक्ति कहलावेगा।

लघुकौमुदी सारस्वत आदि ग्रन्थोंको आरंभमें पढ़नेसे एक दोष यह उपस्थित होता है कि पुनः ऐसे छात्र ज्योतिष नहीं पढ़ते व्याकरण ही पढ़ने लगते हैं। परीक्षा लेनेवाली अनेक समितियाँ सब शास्त्रोंकी परीक्षामें पहले लघुकौमदी आदि ग्रन्थोंको रखती थीं किंतु इसका कुपरिणाम यह होने लगा कि ज्योतिषकी परीक्षा ही कोई न दे, तब वे सब समितियाँ अपने नियमोंको परिवर्तित कर रही हैं। हां व्याकरणका साधारण रूपसे ज्ञान जिस किसी प्रकारसे कर लेना आवश्यक है।

गणित ज्ञान विहीन ज्योतिषीको पहला कष्ट तो यह है कि वह कुण्डली आदिको निर्माणमें अक्षम है, यदि किसी प्रकार इस कामको करेगा तो उसमें अशुद्धि होनेकी पूरी संभावना है जिसका बड़ा बुरा फल होगा, पीछे ऐसा भी हो सकता है कि लोगोंको ज्योतिःशास्त्र परसे ही विश्वास उठ जाय इसलिये गणितमें प्रौढ़ि प्राप्त करना आवश्यक है जिससे गणनामें भूल न हो। इसलिये व्याकरण गणितज्ञ ज्योतिषाध्यापकके पास पढ़नेसे ये सब दोष मिट जाते हैं, अतएव ऐसे ही सुबोध ज्योतिषीके यहाँ पढ़ना चाहिये। एक बात और ध्यान योग्य यह है कि बहुत गणितज्ञ व्याकरणज्ञान संपन्न ज्योतिषियोंमें फलित ज्योतिषकी ओर प्रवृत्ति नहीं रहती, वे इस विषयमें अनपेक्षा दिखलाते हैं

राष्ट्र का शत्रु वनस्पति घी

ले०—श्री पं० गणेशदत्तजी 'इन्द्र' विद्यावाचस्पति

स्थूलतः और मूलतः संसार में तीन प्रकार के चिकने पदार्थ पाए जाते हैं। (१) घृत (२) तेल और (३) वसा। प्राणियों के दुग्धवर्ग से जो चिकनाई प्राप्त की जाती है उसे घृत कहा जाता है। वृक्ष वनस्पतियों और भूगर्भ से जो चिकनाई प्राप्त होती है वह तैल कहलाता हैं। और प्राणियों के मांस अस्थि आदि से प्राप्त होने वाली चिकनाई को वसा कहते हैं। वसा को कोई भी प्राणिजन्य घृत अथवा ऐसे ही अन्य नाम से सम्बोधित ही करता है। और न कोई घृत को, प्राणिजतैल' अथवा 'स्तनजवसा' नहीं कहता। फिर क्या कारण है कि तेलों के परिवर्तित रूप को आंज "वनस्पति घी" नाम से पुकारा जाता है? यदि यह कहा जाय कि वह घी के समान रंगरूप और स्वाद में, सफेद तथा सर्दी पा कर जमने वाला और उष्णतासे पिघलने वाला होनेके कारण घी नाम से पुकारा जाता है तो वसा (चर्बी) भी समान रंगरूप और स्वभाव में घृत जैसी होने पर घी नाम से आज तक क्यों नहीं सम्बोधित हुई? इस विवेचन से यही परिणाम निकलता है कि तेल को घी की सूरत शक्ल में परिवर्तित कर उसे 'घी' नाम देकर बाजार में बेचना खुल्लमखुल्ला जनता को धोका देना है, ठगी है, कपट हैं, छल है, बेईमानी है बदमुआशी है और है धूर्तता। सरकार की दृष्टि में, कानून के क्षेत्रमें यह एक अपराध होना चाहिए। यह एक अक्षम्य अपराध है। समझ में नहीं आता कि जनताके साथ इस प्रकार खुले मैदान धोका और बेईमानी करने वाले—जनता के स्वस्थ्य के साथ इस तरह खिलवाड़ करने वाले लोगोंके प्रति आज तक सरकार ने कानूनी कार्यवाही क्यों नहीं की? तेलको वैज्ञानिक पद्धतिसे जमा कर घीके नामसे बाजारोंमें बेचना सरासर धोका है। चोर बाजारी है और भयंकर भ्रष्टाचार है। ऐसे नकली घी के उत्पादकों के मन में यदि जनताके प्रति ईमानदारी है तो वे उसे जमा हुआ तेल, 'शुद्ध तेल' आदि नाम से क्यों नहीं पुकारते। अथवा 'वनस्पती घी' से रूपरंग में मिलता हुआ तथा गुणों में उससे श्रेष्ठ "खोपरे के तेल" (Coconut Oil) को वे वनस्पतिके घृत क्यों नहीं कहते। जो त्रिकालमें भी घृत नहीं माना जा सकता उसे घृत कह कर बाजारों में खुले आम पहुंचाने वालों पर सरकार को, अथवा जनसेवकों को धोकेबाजी का मुकद्दमा चलाकर सजा दिलाना चाहिए।

वनस्पति नाम घी के साथ जोड़देने से सर्वसाधारण क्या अच्छे पढ़े लिखे लोग भी भ्रम में पड़ जाते हैं। वे इसे अत्यन्त पवित्र, विविध बनस्पतियों से निर्मित, स्वास्थ्य-वर्द्धक और उपयोगी मानते हैं। उनके मनमें असली घी से भी अधिक गुणों से युक्त होना निश्चय हो जाता है। क्योंकि वह बनस्पतियोंसे बना है। विविध बनस्पतियोंको खाने वाली बकरी के दूध को जिस प्रकार गुणप्रद माना है उसी तरह इस "वनस्पति घी" नाम से इस दूषित पदार्थ को भी वे अधिक गुणदायक वस्तु समझते हैं। उन बेचारों को यह पता नहीं कि यह किन वस्तुओं से किस प्रकार बनाया जाता है। वास्तवमें यह बनस्पतियोंसे बनने वाला या उन में से निकाला जाने वाला घृत नहीं है बल्कि तेलों को वैज्ञानिक रूप से जमा कर बनाया हुआ एक पदार्थ है, जिसे धोका देने के लिए इसके निर्माताओं ने घी नाम से बाजार में बेचना शुरु कर दिया है।

अंग्रेजों के शासन काल में यहां इसके कारखाने खुले और वनस्पति घी के नाम से यह जमाया हुआ तेल बाजारों में बिकने लगा। जन सेवकों ने इसका विरोध किया परन्तु पूंजी पतियों के दांव पेचोंने उनकी एक न चलने दी।

और स्वयं गणित सिद्धान्तके विचारमें मस्त रहते हैं, परन्तु यह भी उचित नहीं है। ऐसे ज्ञान संपन्न ज्योतिष विद्वानोंके लिये भी यह आवश्यक है कि वे इस फलित विद्याकी ओर भी दृष्टि डालें, क्योंकि फलित ही तो व्यवहार दशामें अभिलषित वस्तु है। इसलिये त्रिस्कन्ध ज्योतिष विद्याके अभिज्ञ व्यक्तिसे पढ़नेसे ही प्रारंभिक ज्योतिष शिक्षा पठन सफल हो सकता है।

सरकारने इतना अवश्य किया कि इस बनस्पति-घीको रंग मिलाकर बेचनेकी योजना मंजूर कर ली। परन्तु आज तक यह नकली घी सफेद ही बिक रहा है—किसी प्रकारका कोई रंग इस में नहीं मिलाया गया। आज हमारा शासन है परन्तु दो वर्षोंमें इस नकली घीके रोक की कोई कार्यवाही नहीं हुई; बल्कि यह सुन कर आश्चर्य हो रहा है कि इस घी के निर्माण के लिए अनेक नए-नए कारखाने विविध स्थानों पर खुल रहे हैं। सरकार इस घीके सम्बन्ध में जाँच करानेके कार्य में व्यस्त हैं, और इस प्रकार समय निकलता चला जा रहा है। पिछले पार्लीमेंटके अधिवेशन में श्री जयरामदास दौलतरामने कहा था कि सरकार बनस्पति घीके गुणावगुणके सम्बन्धमें जांच करवा रही है।

इस ढील का परिणाम यह हो रहा है कि देश में इस नकली घीका उत्पादन जोरों से हो रहा है। सन् १६४८ में लग-भग एक लाख तीस हजार टन यह बनस्पति घी हमारे देशमें बनाया गया था जो लोगोंके पेट में पहुंच गया। यद्यपि लोग इसे हानिकारक मानते हैं तथापि इसमें बनी वस्तुओंको, हलवाइयोंकी मिठाइयोंके रूप में धड़क्के से काममें लाते हैं। हाँ, घरोंमें रोटियाँ चुपड़नेके लिए लोगोंको थोड़ा यत्न अवश्य है। इसके लिए वे दुग्धजन्य शुद्ध घीकी ढूण्डमें अवश्य रहते हैं, परन्तु दूकानदार पैसेके लोभसे शुद्ध घीमें इस बनस्पति घीका मिश्रण करके खूब पैसे कमा रहे हैं! देहातोंमें भी इस नकली घी का प्रवेश और प्रयोग आरम्भ हो गया है। गावों से ही शुद्ध घी में यह नकली घी मिलकर अब बाजारों में आने लगा है। आज छोटे देहातोंसे लगाकर बड़े-बड़े शहरों तक में शुद्ध घी अलभ्य होगया है। धार्मिक कृत्य, यज्ञयागादि में भी आज शुद्ध घी नहीं होता। देहातियों और व्यापारियों की नैतिकताका पूर्ण पतन हो चुका है। आज लोग अधिक कीमत देकर भी शुद्ध घीकी खोजमें घूमते दिखाई पड़ते हैं, परन्तु वे बेचारे ठगे जाते हैं और बनस्पति घी मिला हुआ घी उन्हें असली कह कर दे दिया जाता है। आप यदि घी लेना चाहें और मक्खन लेकर उसकी शुद्धता पर भरोसा करें तो वह भी ठीक नहीं; क्योंकि किसानोंने इसे मक्खनमें मिलानेकी तरकीब भी सीख ली हैं।

नकली घीके देशमें इस अबाध प्रचारका प्रभाव पशुपालन पर भी हो रहा है, जब नकली घीसे अपनी आवश्यकताएं पूरी की जा सकती हैं तो फिर व्यर्थ पशुओं के पालनेके झगड़ेमें कौन पड़ेगा। क्योंकि नकली घीके मुकाबलेमें, बाजारमें उन्हें दाम भी नहीं मिलेंगे। जनता का विश्वास भी उठ गया—वह किसी भी घीको शुद्ध नहीं मानती। और उसका यह संदेह निराधार भी नहीं कहा जा-सकता। ऐसी हालत में खुले आम नकली घी मिश्रित घी बाजारोंमें अच्छे दामोंपर बिक रहा है। पशु पालनपर इसका बुरा प्रभाव पड़ा है और इसका एक दिन यह परिणाम होगा कि बाजारमें एक दिन असली घी नहीं रहेगा।

सरकारने इसकी जांचकी योजना बनाकर, इस विषयको जानबूझकर चक्करमें डाल दिया जान पड़ता है। जब उसके बनानेकी विधि, उसका परिणाम. उसके द्वारा स्वास्थ्यकी क्षति आदि बातें स्वयं पुकार पुकारकर हमें सावधानीके लिये कह रही हैं तब यह जांचकी उलझन ही क्यों? हाइड्रोजनसे जमाये हुए तेलकी पोषकता अपोषकताका प्रश्न ही व्यर्थ है। अगर बनस्पति घी न खाकर शुद्ध तेल ही काममें लाया जाय तो इस नकली घीसे लाख दर्जे श्रेष्ठ, गुणदायक और स्वास्थ्यकारक होगा। हाइड्रोजन से तेलको घी बना कर खानेमें ही क्या मजा है? यह समझमें नहीं आता। तेल न खा कर नकली घी खानेकी इच्छा करना बुद्धिका दिवालियापन है। हाइड्रोजनसे जमाए जाने पर तेल गुण रहित और हानिकारक बन जाता है, फिर उसे घीकी शक्लमें देख कर खानेमें ही क्या विशेषता है? क्या अश्वत्थामाके बचपनकी दूध वाली घटनाकी भांति यह बात नहीं है?

'भारतीय पशु चिकित्सा अनुसन्धान शाला' ने इस घीका परीक्षण किया और यह परिणाम निकाला कि "गाय के घीसे इस नकली घीमें १५ से २५ प्रतिशत तक पाचन शक्ति कम है। और इस घीसे केलशियम खनिज द्रव्य और फासफोरस अथवा दाहक पदार्थोंका शरीरमें शोषण भी कम होता है।" बङ्गाली खुराकमें ५ प्रतिशत बनस्पति घी मेकरिसनके सुझावके अनुसार मिला कर लोगों पर प्रयोग करके देखा गया तो, इससे लोगोंमें अनेक रोग पैदा

हो गए जैसे, पक्षाघात, लकवा, मूत्रकृच्छ्र, दृष्टिमान्द्य, मूत्र सम्बन्धी रोग, बालोंका झड़ना, शरीरका वजन कम होना, पाचन शक्ति घट जाना, उदर सम्बन्धी दूसरे रोग, पाचन-शक्ति कम होना इत्यादि अनेक बीमारियां लोगोंमें पाई गई जबकि दूसरे शुद्ध घीके प्रयोग करने वालों पर कोई भी रोग अपना प्रभाव न जमा सका। यह सिद्ध हो चुका है कि वनस्पति घीमें किसी प्रकारके पौष्टिक तत्त्व नहीं है। यह अन्य खुराकके केलशियम और फासफोरसकी शक्तिको घटा कर विविध रोग उत्पन्न करता है।

इन सब बातोंसे यह सिद्ध हो जाता है कि वनस्पति घी एकदम अव्यवहार्य वस्तु है। इसे जितने दिन तक और खायजायगा उतने ही रोगोंकी वृद्धि करेगा और भारतीय जनता के स्वास्थ्यको चौपट कर देगा। सरकारका प्रथम कर्त्तव्य है कि जनताके स्वास्थ्यकी रक्षाकी ओर शीघ्र ही ध्यान दे। अपने शासनमें भी अस्वास्थ्यकर भोजन जनताको मिले यह एक बड़ी ही लज्जाजनक बात है। नकली घीके द्वारा लोग अपनी खाद्य सामग्रीको चिकनाई पहुँचानेकी कुप्रवृत्ति पूरी करते हैं, शासनके लिये यह कम लज्जाकी बात नहीं है। सरकार इसके उत्पादकोंके साथ क्यों रिआयत कर रही है? क्यों नहीं इसका बनना रोकती है? क्यों नहीं इसे गैर-कानूनी घोषित करती? जनताके स्वास्थ्यके साथ यह आंख मिचौनी क्यों खेली जा रही है। एक दिन भी इसकी रोकमें देरी करना जनताके स्वास्थ्यको नष्ट करनेका अपराध करना है।

महात्मा गान्धीने इस नकली घीके विषयमें अपने भाषणों में तथा 'हरिजन सेवक' में बहुत कुछ कहा सुना है। इसके बाद भी हमारी राष्ट्रीय सरकार बापू के आदर्शों पर चलने तथा उनके चरण चिन्हों पर कदम रखने का रात दिन उपदेशका ढिंढोरा पीटनेमें तत्पर, इस वनस्पति घीके विरुद्ध अपना कदम उठानेमें क्यों देरी कर रही है? किसी भी नेतासे, वैज्ञानिकसे, विद्वान्से अथवा साधारण बुद्धि वाले व्यक्तिसे पूछ देखिए सभी इस नकली घीको हानिकर कहेंगे फिर सरकारने इसकी जाँचका यह नाटक क्यों खड़ा कर रखा है? "घी सम्मेलन" का शिकोहाबाद में उद्घाटन करते हुए माननीय कैलाशनाथ काटजूने कहा था—"वनस्पति घी, जानवरों और मनुष्योंका अर्थात् राष्ट्र का शत्रु है। पिछले ६ वर्षोंमें इसका उत्पादन ४०० गुना अधिक बढ़ गया है। पिछले साल यह एक लाख अस्सी हजार टन पैदा हुआ था। इसका घातक प्रभाव घीके उत्पादन और मनुष्योंके स्वास्थ्य पर बुरा पड़ रहा है। यह तेलके रूपमें बिके तो हानि नहीं परन्तु उसे घीका रूप देकर बेचना दोष है। इसके बनानेमें कॉस्टिक सोडा और निकल धातुका उपयोग होता है। ये चीजें जहरीली हैं और स्वास्थ्य के लिये हानिकारक हैं। जर्मनी और अमेरिकाके प्रयोगों से यह सिद्ध हो चुका है कि वनस्पति घी पच कर शरीर में मिलता नहीं बल्कि वैसे ही बाहर निकल जाता है। पञ्जाब और बम्बईकी सरकारोंने विदेशी विशेषज्ञों द्वारा इसकी जाँच कराई है। डा० थामस आई० एम० एस० और कर्नल एफ० ए० निकी तथा हिन्दू विश्वविद्यालयके डाक्टर गोंडवालेने घोषित किया है कि यह स्वास्थ्यके लिये हानिकारक है।"

क्या अब भी इस मसलेकोकोई बहाना बना कर टालना उचित है। अफीम और शराबकी भांति यह वनस्पति घी भी जनताके लिये एक भयानक अभिशाप बन कर उसे नष्ट करनेमें लगा है। यह वनस्पति घी मनुष्योंका ही नहीं बल्कि राष्ट्रका शत्रु है इसके उत्पादन और प्रयोग पर शीघ्र ही वैधानिक प्रतिबन्ध लगानेकी आवश्यकता है।

अनमोल वाक्य

* * *

बिना भोजनके शरीरकी भाँति, ज्ञानके बिना हृदय निर्बल होता है, ज्ञानको प्राप्त करनेका सर्वोपरि साधन पुस्तक है। जिस घरमें पुस्तकें नहीं वह घर नहीं किन्तु वह निर्जन खण्डहरकी ही भाँति है।

—विलियम सेक्सपियर

ज्योतिष का वैज्ञानिक स्वरूप

ले०—श्री पं० कन्हैयालाल 'मत्त'

आधुनिक विज्ञान-युगके पूर्वार्द्ध-कालमें मानव संसार में एक ऐसा दल बन चुका था जो सीधे साधे प्रकृतिवाद [Materialism] पर ही विश्वास करता था और विचित्रताओं तथा चमत्कारोंके अस्तित्वको भ्रामक समझता था। किन्तु जब उन्हींके पथ-प्रदर्शकों—आजके वैज्ञानिकोंके अनेकानेक चमत्कार पूर्ण अन्वेषण प्रकाशमें आये तो उनके इस विश्वास की नींव हिलने लगी और आज तो यह दशा है कि जन-समाज स्वयं इन वैज्ञानिकों से बड़े-बड़े चमत्कारों की आशा करने लगा है। केवल एक परमाणु के टूटने से सम्पूर्ण सृष्टि के परमाणुओं का विच्छेद हो जाना, चन्द्रलोक से यातायात का सम्बन्ध स्थापित करना, रैडार [Radar] तथा रौकिट विमानों [Rocket planes] आदि २ कल्पनाएं एवं अन्वेषण इसी ओर संकेत करते हैं। आजकी कल्पना भविष्य में क्या रूप लेगी— यह कहना आज कठिन है!

इन आविष्कारोंसे हमारे साहित्यको बड़ा बल मिला है। अभी कल तक जो लोग रामायण और महाभारत काल की घटनाओं एवं तत्कालीन आविष्कारोंको 'गपोड़ा' कह कर उपेक्षणीय समझते थे वे अब यह विश्वास करने लगे हैं कि ये पश्चिमी विचार-धारासे स्फूर्त वैज्ञानिक हमारे प्रायः सभी पौराणिक गपोड़ोंका पुनरुद्धार करके संसार को चकित और हमें लज्जित कर देंगे। वृक्षादिकोंमें जीवन मरण और खान-पान-पोषण होने की हमारी कल्पना अब एक वैज्ञानिक सत्य बन गई है। यहाँ यह कहना उचित न होगा कि केवल भारतीय वैज्ञानिक ही इस दिशा में सोच सकता है। पश्चिमके विचारकने भी अपने अनुसंधान द्वारा इस बात को सत्य सिद्ध कर दिया है कि पाञ्चभौतिक शरीरोंमें क्रिया-कलाप जीव-शक्ति [Life force] के अस्तित्व पर निर्भर हैं। जीव-शक्तिका अस्तित्व जीवन और उसका अनस्तित्व मृत्यु है। पण्डित प्रवर आइन्स्टीनकी तो यह धारणा है कि जो पदार्थ है वही शक्ति है। इसका अभिप्राय हुआ कि इन वैज्ञानिकों ने प्रकृतिके अतिरिक्त किन्तु उससे अभिन्न "जीव" के अस्तित्वको तो आज सिद्ध कर दिया और संभव है कि वह एक दिन "ब्रह्म" के अस्तित्वको भी स्वीकार करके भगवान् शंकराचार्यकी भाँति "सर्वं खल्विदं ब्रह्म" कह उठें। तब फिर विज्ञानवाद और अध्यात्मिक वादमें क्या अंतर रह जायगा।

तब क्या हम यह समझ कर निश्चिन्त हो जायें कि पश्चिमी ज्ञान (अथवा आधुनिक विज्ञान साहित्य) हमारे उपलब्ध ज्ञानसे अभी बहुत पीछे है, अतः हमें इस दिशा में कुछ नहीं करना है? यह माना कि हमारे पूर्वजों का ज्ञान साहित्य से कहीं ऊंचा था किन्तु यह मानना पड़ेगा कि उस में सार्वजनिक अभिव्यक्ति की कमी थी। प्राचीन कालमें प्रायः कठिन तपस्या एवं दीर्घकालीन संयत अध्ययन तदुपरान्त गुरु-जनोंकी कृपा तथा दैवी आराधना द्वारा ज्ञान प्राप्त होता था। ऐसी दशा में उस पर शंका करना अथवा 'ननु नच' लगाना अयुक्त समझा जाता था। इस मूक स्वीकृतिका आगे चलकर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा और फिर लगातार अनेकों राजनीतिक भूकम्पों के धक्कोंसे वह ज्ञान लुप्त-सा ही हो गया। उस लुप्तप्राय ज्ञानको पुनर्जीवित करनेके लिये तदनन्तर प्रयत्न भी हुए किन्तु अधिकतर उसमें भिन्न भिन्न मतों की छाप लगती चली गई और इस प्रकार वह पुनर्जीवित ज्ञान मौलिक ज्ञानका विरूप हो गया। कहीं कहीं तो इन व्यक्तिगत टिप्पणियों ने मूल-ज्ञान की हत्या कर डाली। फलित ज्योतिषका उदाहरण इस प्रकारका है। जैसा जिसके जी में आया वैसा ही उसने अपनी सम्मति दे डाली और तदुपरान्त उसके अंध श्रद्धालुओंने अपने प्रचार द्वारा उसे समूल नष्ट करनेके भी प्रयत्न किये—चाहे इस कार्यमें उन्हें सफलता ही नहीं मिली। यह एक प्रकारसे बड़ा भारी अनर्थ हुआ और इसका मूल कारण था हमारी सामाजिक विशृंखलता। जिस जातिका समाज-संगठन एक सूत्र में बंधा होता है उसकी प्रज्ञात्मक चेष्टाएं भी सूत्रबद्ध होती हैं—उनमें समष्टि

की अभिव्यंजना होती है। बिखरे हुए समाजकी चेष्टाएं व्यक्तिगत तथा अधूरी होती हैं।

इस प्रकार अध्यात्मवादियों एवं दिव्य-द्रष्टाओं द्वारा प्राप्त ज्ञान अलौकिक, अतर्क्य—अथवा, दूसरे शब्दोंमें 'ईश्वरीय देन'—बन गया। इस ज्ञान-भण्डारमें सर्वोच्च स्थान वेदोंको प्राप्त है। केवल अभिजातिके लिये ही नहीं अपितु समस्त मानव-जातिके लिये यह अद्भुत है। इस दिव्य-ज्ञानको बोधगम्य बनाने के लिये बाद में 'वेदाङ्गो की सृष्टि हुई और उन छः अंगोंमेंसे एक प्रमुख स्थान ज्योतिष' को प्राप्त हुआ। सिद्धाँत शिरोमणिके प्रेणता भास्कराचार्यके शब्दों में:—

वेदचक्षुःकिलेदं स्मृतं ज्योतिषं मुख्यताचांग
मध्येऽस्यतेनोच्यते
संयुतोऽपीतरैः कर्णनासादि भिश्चक्षुषांङ्गन
हीनो न किञ्चित्कर:।

ज्योतिष वेदके चक्षु हैं अतः वेदके सम्पूर्ण अङ्गोंमें उसका प्रमुख स्थान है यदि कोई चक्षु-विहीन व्यक्ति किसी वाटिकाकी सैरको निकले तो कान, नाक आदि अवयवों के होते हुए भी क्या वह उसका सत्यानुभव कर सकता है? आज वेदों पर अनेकानेक समीक्षाएं उपलब्ध हैं और ऐसे भी कितने ही व्यक्ति मिलेंगे जो वेदोंके कुशल भाष्यकार होनेका दावा करते हैं! परन्तु उनमें से ऐसे कितने होंगे जिन्हें वेद के सम्पूर्ण अङ्गोंका ज्ञान प्राप्त है? और ऐसा व्यक्ति कदाचित ही कोई मिलेगा जिसने ज्योतिष जैसे महत्वपूर्ण अङ्गका पारायण किया हो! तो फिर इस ज्योतिर्विहीन अर्थात् अन्धे ज्ञानसे हमारा क्या उपकार हुआ? "अन्धेनैव नीयमानाः यथान्धाः" वाली कहावत चरितार्थ हो रही है और इस प्रकार संसारका बड़ा भारी अपकार हो रहा है। एक ओर तो हम वेदोंको ज्ञानका परम-स्रोत मानते हैं, दूसरी ओर हम उन्हें केवल "धार्मिक अध्ययन" की वस्तु बनाते जा रहे हैं। क्या इस ज्ञान-महासमुद्र में विज्ञान; गणित, फलित, चिकित्सा, अर्थ शास्त्र, राजनीति आदि विषयोंकी दो-चार बूंदें भी सम्मिलित नहीं हैं! यदि हैं तो उन पर प्रकाश क्यों नहीं डाला जाता? किसलिये ज्योतिष जैसे प्रमुख ज्ञानाङ्गकी उपेक्षा करके ज्ञानको अंगविहीन बनाया जाता है?

ज्योतिष शास्त्रीय ज्ञान है—साहित्यका एक अनुपम एवं अपरिहार्य अङ्ग है। उसमें प्रवञ्चनाकी कल्पना करना सत्यको धोखा देना है। लोक-संग्रहको उरुके विरुद्ध उभारना व्यर्थ है—आत्मघात है। हम आज स्वतन्त्र हैं—हमारा साहित्य भी स्वतंत्र देशोंके जैसा पुष्ट और बलिष्ट होना चाहिए। आज इस बातकी बड़ी भारी आवश्यकता है कि इस दीर्घकालीन उपेक्षित ज्ञान में पुनर्जीवन डालें। इंगलैंड, फ्राँस, अमेरीका आदि स्वतन्त्र देशोंमें तो ऐसे अनेकों विषयों पर इतना साहित्य-भण्डार उपलब्ध है जिसकी हम भारतीयोंको स्वप्नमें भी कल्पना नहीं हो सकती। वहां किसी विषयको गर्हित एवं ढोंग-मात्र कहकर उपेक्षा नहीं की जाती। प्रायः प्रत्येक विचार-धाराके व्यक्तियों की वहां सभाएं स्थापित हैं और बड़ी बड़ी प्रकाशन संस्थायें चावसे तत्सम्बन्धी साहित्यके प्रकाशनमें भाग लेती हैं। फलित ज्योतिषकी ओर भी आज उनमें अधिक से अधिक रुचि उत्पन्न हो रही है। संसारका कोई भी ऐसा देश नहीं जहाँ फलित, हस्तसामुद्रिक, प्रश्नतन्त्र आदि-आदि विषयोंमें प्रचुर मात्रामें साहित्य न हो। इस विषय में वहां की जनता को बड़ा चाव है और वह ऐसे लेखकों को प्रोत्साहन देती है। उपर्युक्त विषयोंमेंसे प्रत्येक पर वहां इतना साहित्य है कि उसकी तुलनामें इन सारे विषयों पर प्राप्त हमारा साहित्य कुछ भी नहीं है। वहां के यशस्वी लेखकोंने संसार-भरका भ्रमण किया है और तब अनेक प्रकारके गवेषणा-पूर्ण ग्रन्थोंकी रचना की है। पुस्तकों के प्रकाशनको बड़े सुन्दर और चित्ताकर्षक ढंग से हुए हैं। इसके विपरीत हमारे देश में प्रकाशित हुए ग्रन्थोंकी दशा बड़ी हीन है। न उनकी टीकाएँ ही योग्यता पूर्वक लिखी गयी हैं और न प्रकाशन ही अच्छे हुए हैं। बड़े-बड़े सिद्धान्त ग्रन्थोंकी टीकाएं अटपटी, बेतुकी और दुर्बोध हुई हैं जिनसे ऐसा ज्ञान होता है मानो ये टीकाकार स्वयं भी उस विषयको नहीं जानते। जो जिसके जी में आया लिख मारा। छपाई तो नितान्त भद्दे कागज पर होती है। इन सारी बातों को देखकर बड़ा दुःख होता है। इसका

सामुद्रिक शास्त्र विज्ञान

ले०—श्री पं० बलदेवजी मिश्र, ज्योतिषाचार्य

हस्त रेखाओंको देखकर भाग्य बताना सामुद्रिक शास्त्र है, ज्योतिषके फलित विभागोंमें यह एक मुख्य विभाग है। भारतीय ज्योतिषमें रमल, केरेल, स्वरोदय, ताजिक इत्यादि जो अनेक विभाग प्रश्न फल निकालनेके लिये हैं उन्हींमें सामुद्रिक एक विभाग है। सामुद्रिक शास्त्र कहलानेके लिये दो कारण हैं, एक तो हस्तलिखित रेखाओंसे जो स्वरूप बनते हैं उनमें अधिकांशोंके नाम समुद्रीय वस्तु हैं, जैसे शङ्ख, मत्स्य, चक्र, कच्छप आदि। सामुद्रिक वस्तुके नाम पर फलादेश होनेके कारण इसका नाम सामुद्रिक पड़ा तथा इस विषयके सबसे पहले ग्रन्थकार समुद्र नामके एक आचार्य हुए हैं इसलिये यह उन्हींके नामसे सामुद्रिक शास्त्र कहलाता है। यह विद्या बड़ी प्राचीन है, क्योंकि पुराणोंमें किसी-किसी राजकुमारके वर्णनमें ऐसा लिखा है कि अमुक-अमुक प्रसिद्ध रेखायें इनके हाथमें हैं जो उनका चक्रवर्ती राजा होना तथा दीर्घायु होना सिद्ध करता है, इससे बोध होता है कि प्राचीन समयमें भी लोग इन रेखास्थ चिह्नोंसे भाग्यका अनुमान करते थे। और मनुस्मृतिमें 'नक्षत्राङ्ग विद्यासे' जिस अङ्ग विद्याकी चर्चा है वह अङ्ग विद्या सामुद्रिक ही अनुमित होती है। जैसे जन्मकालमें जिस प्रकारकी ग्रहस्थिति तथा लग्नस्थितिमें उत्पन्न होनेवाला जातक उस ग्रहस्थिति तथा लग्नके अनुसार अपने जीवनमें शुभाशुभ फलको प्राप्त होता है, उसी प्रकार जिन हस्तरेखाओंको लेकर मनुष्य उत्पन्न होता है तदनुसार जीवनमें शुभाशुभ फल पाता है, और जैसे लोगोंके जीवनमें भिन्न भिन्न समयमें ग्रहदशाकी विभिन्नताके कारण भिन्न-भिन्न फल होते हैं उसी प्रकार मनुष्यके जीवनमें हस्तरेखाओंमें परिवर्त्तन होता रहता है कभी कोई प्राचीन रेखाकी उत्पत्ति होती है और तदनुसार फलमें भी अन्तर पड़ता है। सामुद्रिकमें तीन स्थानोंकी रेखायें देखी जाती हैं। हाथ पैर और कपालपरकी रेखाओं परसे विचार किया जाता है। इस विद्याके द्वारा वर्तमान तथा जन्म कालिक मास, पक्ष तथि इत्यादिका भी ज्ञान होता है। जन्मकालिक ग्रहस्थिति भी मानी जाती है।

रेखाओंकी समाप्तिसे छत्रध्वज, चामर इत्यादि स्वरूप बनते हैं जिन स्वरूपोंका भिन्न-भिन्न फल होता है एक स्थानमें लिखा है:—

आतपत्रं करे यस्य दण्डेन सहितो भवेत्।
ध्वजो वा चामरयुग चक्रवर्ती स जायते॥

अर्थात्—जिसके हाथमें दण्डके सहित छत्र हो अथवा ध्वजा या दो चामर रेखा हो तो मनुष्य चक्रवर्ती होता है।

शतं सहस्रं लक्षं वा कोटिर्द्ध्युर्यथाक्रमम्।
मीनादयः करे स्पष्टा छिन्नाभिन्नादयोऽल्पदाः॥
मत्स्ये शतं विजानीयात् मकरे तु सहस्रकम्।
पद्मे लक्षेश्वरश्चेति शङ्खे कोटीश्वरो भवेत्॥

मीन, मकर, कमल और शङ्ख रेखा यदि स्पष्ट हों तो क्रमसे सौ, हजार, लक्ष और करोड़ संख्यक धन और छिन्न भिन्न हों तो अल्प धन देती हैं।

जिस प्रकार हस्तरेखाका फल कहा गया है उसी प्रकार ललाट रेखा देखकर भी फल कथन है।

ललाटे लिखितं धात्रा रेखा चिह्नं शुभाशुभम्।
तद्ज्ञात्वा पुरुषो लोके त्रिकालज्ञो भवेद् ध्रुवम्॥

जिन-जिन विषयोंका फल कथन कुण्डली देखकर जातकशास्त्रमें कहा गया है उन सब फलोंका विवरण सामुद्रिक शास्त्र से भी रेखाओं द्वारा किया गया है। सामुद्रिक शास्त्र पर अनेक पुस्तकें हैं। अनेक पुस्तकें हिंदी

सारा उत्तरदायित्व जनता पर ही नहीं वरन् उन लोगों पर भी है जो इस व्यवसाय द्वारा धर्मोपार्जन करते हैं अथवा जो इस साहित्यके प्रतिपादक व प्रचारक समझे जाते हैं। उनका यह कर्त्तव्य है कि वे जागरूक होकर देशकी जनता की रुचिके मानदण्डको ऊंचा उठावें और इसे लोक-साहित्यका रूप दें। जिस वस्तुको जनता अपना लेती है राज्य भी उसे प्रश्रय देता है और तभी वह संसार में फल-फूल सकती है।

गोपालका गोपालन

ले०—श्रीदीनानाथ शर्मा शास्त्री सारस्वत, विद्यावागीश, विद्यानिधि, विद्याभूषण

* * *

परमात्माने वेद द्विजोंको दे दिया, द्विजोंने वेदोक्त धर्मका प्रचार भी संसार में कर दिया। परन्तु श्रव्य काव्य का उतना प्रभाव जनता में नहीं पड़ता, जितना दृश्य काव्य का। 'सत्यं वद' (तैत्ति० उ० १।११।१) इस प्रकार सत्य बोलनेकी आज्ञा वेद ने दे दी। परन्तु श्रव्य काव्यकी इस आज्ञा का साधारण जनता पर क्या प्रभाव पड़ सकता है? जब वही बात दृश्य-काव्य द्वारा—अभिनय द्वारा—'सत्य हरिश्चन्द्र' नाटक रूपमें दिखलाई जाए; तो उसका प्रभाव साधारण जनता पर खूब पड़ता है तब जनता भी उस पर आचरण करनेके लिए उत्कण्ठित हो उठा करती है।

परमात्माने भी यही किया। हमें केवल अपना श्रव्य काव्य (वेद) ही नहीं सौंपा, किन्तु उसका अभिनय करके भी हमें दिखला दिया। वेद द्वारा परमात्माने हमें दिखलाया कि—'**गोस्तु मात्रा न विद्यते**' (यजुः वा० सं० २३।४८) अर्थात् गायके समान अन्य नहीं हैं। वही बात भगवान्ने गोपालनके विषयमें भी की। परमात्मासे नन्दनन्दन रूपमें अवतीर्ण होकर गोपाल बन गये। गोपाल बन कर उन्होंने गौओंका पालन किया। इस अभिनय को करके उसने हमें दिखलाया कि तुम लोग भी गोपालन करो; गायकी पूजा करो, गायका उपयोग लो। इस प्रकार करने से जहां देव पूजा होगी वहां तुम लोग बलवान् भी बनोगे। माखन खाओ, तुम्हारे पास न हो तो दूसरे से लो। दूसरा न दे; राजा अत्याचार करके सारा माखन छीन रहा हो; तो चुराकर—दूसरेसे छीन कर खाओ, राजाके नाकके बाल बने हुए उनको लूट लो, इससे स्वावलम्बी बनोगे। स्वराज्य तुम्हारे चरणोंमें लोटेगा। यदि ऐसा न करोगे; गायके भक्त न बनोगे, गायकी उपेक्षा करोगे; तो तुम लोगोंका शरीर क्षीण हो जायगा, बल कम हो जायगा। तुम लोगोंको निर्बल जान कर सब तुम्हें पैरों तले रौंदेंगे। तुम लोग परमुखापेक्षी बन जाओगे। देवता लोग भी तुम्हारी सहायता छोड़ देंगे।

पाठक गण! क्या यह ऐसा नहीं? आज गोवंशका जिस प्रकार भीषणता से ह्रास हो रहा है, उसके फलस्वरूप हम भी तो मर रहे हैं। आज हम दूध, माखन, घी आदि के लिए उत्कण्ठित हैं और कीजिये गोमाताकी उपेक्षा! दूध-घीके तो अब स्वप्न ही आ सकते हैं। खाइये अब बनस्पति घी; पीजिये ग्लैक्सो दूध। तब सन्तानें उत्पन्न कीजिये अपनेसे भी निर्बल, प्रतिदिनकी अस्वस्थ, तब भारत क्यों न परमुखापेक्षी हो? देवगण हम पर कुछ क्रुद्ध क्यों न हों? क्रुद्ध होकर हमारा पराभव क्यों न करें? इसी बातको प्रतिवर्ष याद दिलाने के लिए 'गोपाष्टमी' आया करती है कि—ऐ भारतीयों! चेत जाओ, अब भी गौवों का पालन, पूजन तथा सम्मान करना सीखो। गाय के तिरस्कारमें अपना तिरस्कार समझ कर प्राणोंकी बाजी लगा दो। तभी पूर्ण 'हिन्दु' बने रहोगे। 'हिन्दु' शब्द हमारी जातिने गोवर्णन-परक वेदमन्त्रसे लिया है।

हमारी जाति गोभक्त है, गोभक्तिके कारण ही इसने 'हिन्दु' नाम धारण किया है। 'अथर्ववेद' तथा 'ऋग्वेद'में एक मन्त्र आया है—

तथा संस्कृत भाषामें प्रकाशित भी हो गई हैं जिनके अवलोकनसे इस विद्याका भलीभाँति ज्ञान होता है।

युरोप देशमें भी लीओ आदि ग्रन्थकारोंने हस्तरेखा पर बहुत विचार किये हैं और भारतीय रीतिसे यद्यपि उनकी पद्धति भिन्न हैं तथापि फलादेश उन्होंने भी सब विषयोंका किया है, इस बातकी आवश्यकता है कि हस्तरेखा पद्धतिके जानकार व्यक्ति दोनों रीतियोंका सम्पर्क अभ्यासकर समन्वयका प्रकार निकालें। आजकल फलित ज्योतिषकी ओर अङ्गरेजी तथा हिंदी शिक्षित लोगोंकी दृष्टि विशेषरूपसे पड़ी है इससे यह आशाकी जाती है, कि शीघ्र इस सामुद्रिक विद्याकी ओर भी लोग अध्यवसायी होकर इस विद्याकी उन्नतिमें भी मनोयोग देंगे।

हिं कृण्वती वसुपत्नी वसूनां वत्समिच्छन्ती मनसाभ्यागात् 'दु हामश्विभ्यां पयो अघ्न्या इयंसा वर्धतां' महते सौभगाय —(ऋ० १।१६४।२७, अथर्व ६।१०।५)

यह गोवर्णनपरक मन्त्र है; इसके पूर्वार्ध का आदिम वर्ण 'हिं' है और उत्तरार्धका आदिम वर्ण है 'दु'। गोभक्त हिन्दु जातिने 'हिन्दु' यही अपना नाम स्वीकृत किया है। जैसे एक वेदसे 'अ' दूसरेसे 'उ' तथा तीसरे वेदसे 'म्' लेकर 'ओम्' बनाया गया है; देखिये इस पर 'मनुस्मृति' (२।७६) वैसे ही वेदके गोवर्णनपरक एक ही मन्त्रके पूर्वार्ध तथा उत्तरार्धके आदिम वर्णको. लेकर 'हिन्दु' इस प्रकारका यह नाम वैदिक कालसे चला आ रहा है, (देखिये इस पर स्पष्टतार्थ सिद्धांत काशीके ६वें वर्षके अङ्कोंमें) मेरा लेख—अस्तु।

गोपाष्टमीमें गोपाल बनकर भगवान्ने हमें सिखलाया कि—तुम्हारी गौवोंको चुराने वाला ब्रह्मा भी क्यों न हो; उसको वह पाठ पढ़ाओ कि फिर वह तुम्हारे पैरों पर आ गिरे। कोई दैत्य गुप्त होकर अथवा भिन्न वेष धारण करके तुम्हारी गौवें चुरा ले; उसके मारनेमें भी पांव पीछे न रक्खो। यही भगवान्ने गोपाल बनकर हमें दिखलाया; और प्रतिवर्ष 'गोपाष्टमी'में यही बताती है। अभी भी चेत जाइये; नहीं तो पीछे हाथ मल-मलकर पछतानेके अतिरिक्त कुछ हाथ न लगेगा।

वेदमें देवपूजन पर बहुत बल दिया गया है। यह जगत् देवताओंके आश्रयसे ठहरा है; अतः जागतिक पुरुषोंके विविध प्रकारके होनेसे देवपूजाके भी विविध प्रकार रखे गये हैं। जैसे आयुर्वेदमें विविध रोगियोंकी चिकित्साके अवसरमें मुख्यतया रोग बीज रूप दूषित मलके निकालनेके लिए विविध औषधियें स्वस्व प्रकृत्यनुकूल दी जाती हैं; अथवा दूषित मल निःसारणार्थ भिन्न भिन्न उपाय वमन, विरेचन, मलद्रवीकरण, मलक्वथन, अनीमा आदि हुआ करते हैं; वैसे ही शास्त्रोंमें देवपूजाके भी विविध उपाय बताये गये हैं; जिनसे मुख्यतया मानसिक मल दूर किया जाता है। उनमें एक प्रकार है महायज्ञों द्वारा देवगणकी तृप्ति; अथवा साधारण यज्ञों द्वारा देवगणका पूजन। इसमें देवताओंके मुख स्थानीय अग्निको द्वारीकृत करके देवपूजन किया जाता है।

अन्य उपाय है मूर्ति पूजन। इसमें किसी प्रस्तर आदिकी मूर्तिमें वेद मन्त्रोंसे देवताओंको प्रतिष्ठापित करके उसके द्वारा देवपूजन किया जाता है। अन्य प्रकार है तीर्थका सेवन। इसमें तीर्थको द्वारीभूत करके देवताओंको प्रसन्न किया जाता है। अपर प्रकार है वेद विद्वान् ब्राह्मणों का दान-मान आदि द्वारा सत्कार। यहाँ पर ब्राह्मणको माध्यम बनाकर उसके द्वारा देवपूजन किया जाता है। अन्य भी देवपूजनके बहुतसे प्रकार हुआ करते हैं; उनमें यह भी एक विशिष्ट प्रकार माना गया है कि—गोपूजासे उसमें व्यापक सब देवताओंका पूजन किया जाय।

वेदमें कहा है—'गोस्तु मात्रा न विद्यते' (यजुः वा० सं० २३।४८) यहां पर गायको अनुपमेय माना गया है। अथर्ववेदकी 'पैप्पलादसंहिता'के 'गोपथ-ब्राह्मण'में कहा है—'यद् गां ददाति, वैश्वदेवी वै गौः, विश्वेषामेव तद् देवानां तेन प्रियं धाम उपैति, (२।३।१९) यहां पर गायको वैश्वदेवी—सब देवताओंसे उपजीव्य कहा है। (यं देवास्तस्यां (गवि) प्राणन्ति, (१०।१०।७) इस 'अथर्ववेद संहिता' (शौ० सं०) के वचनमें गायमें देवताओंका निवास स्वीकृत किया गया है। न केवल यहीं पर प्रत्युत 'अथर्ववेद'का एक सम्पूर्ण सूक्त (९।१२।७) ही इस प्रकारका है; जहां पर गायके प्रत्येक अवयवमें भिन्न-भिन्न देवताओंका निवास माना गया है। यह जो आक्षेप किया जाता है कि—"सनातन धर्मके सिद्धांतमें तेतीस करोड़ देवता माने गये हैं, और उनकी पूजा भी मानी गयी है, तब यदि प्रत्येक देवता के लिए दो-तीन अक्षत भी चढ़ाये जाएं, तब तदर्थ कई मन चावल चाहियें। एक-एक जलकी बून्द भी प्रत्येकके लिए समर्पितकी जावे; तो उसके लिए भी कई गागर पानी चाहिए। एक-एक बादाम भी नैवेद्य रूपमें एक-एक पर चढ़ाया जाय; तो कई मन बादाम चाहिए। एक-एक पैसा भी दक्षिणा चढ़ाई जाए, तो कई सौ रुपये खर्च पड़ें, यह है संक्षिप्त पूजा का हाल, षोडशोपचार पूजन तो प्रत्येक का असम्भव हो जाय।" इस आक्षेपका उत्तर सब देव-

ताओंको अपनेमें व्यापक रखे हुए गाय दे रही है। उसीकी पूजासे सर्व देव पूजा अनायास हो जाती है। इसी कारण ही भगवान्ने गोप बननेमें अपना गौरव समझा।

जहां गाय शास्त्रीय दृष्टिसे उपासनीय है; वहाँ लौकिक एवं वैधानिक दृष्टिसे भी उपासनीय है। गायकी वस्तुओं को रसायन, पथ्य, बलप्रद, आयुःप्रद, त्रिदोषनाशक तथा हृदय रोगके दूर करने वाला कहा गया है। जिस घीका 'आयुर्वै घृतम्' इस प्रकार आयुरूप माना है; उसी घृतकी माता गायकी सेवा करके भगवानने हमें यह शिक्षा दी है कि - उसको सन्तुष्ट रखनेसे प्राप्त हुआ दुग्ध ही हमारी सर्वविधि कामनाओंको पूर्ण करने वाला है, **सर्वान् कामान् यमराज्ये वशा प्रददुषे दुहे। अथाहुर्नारकंलोकं निरुन्धानस्य याचिताम्** (अथर्व. शौ. सं. २।४।३६) इस मन्त्र में गोदान करने पर दाता की सब कामनाओंका यमराज्य में पूर्ण होना कहा है। उसकी याचना करने पर रुकावट डालने वालेको नरक लोककी प्राप्ति कही है। 'ब्राह्मणेभ्यो वशां (गां) दत्त्वा सर्वान् लोकान् समश्नुते' (अथर्व० १०।१०।३३) यहां पर ब्राह्मण को गोदान देनेका बहुत फल बताया गया है। 'यां ते धेनुं निपृणामि यमु ते क्षीर ओदनम्' (अथर्व. १८।२।३०) इस मन्त्र में मृतकके उद्देश्यसे गोदान तथा खीरका विधान किया गया है।

आजकल छुवाछूतको निर्दयतासे हटाया जा रहा है, जो लोग बाजारका कुछ नहीं खाना चाहते; और स्वादिष्ठ पदार्थ भी खाना चाहते हैं; उनको चाहिए कि—घरमें गाय रखें और उसकी सेवा करें; उनकी इच्छा पूर्ण होगी। गाय ही दूध, माखन घी, खोया, रबड़ी, मलाई सब देती है। इस प्रकार के फलोंको देख कर भगवान् ने दृश्य काव्य के रूपमें स्वयं गोपाल बन कर गोपालन किया; हमें इस दृश्य काव्यको मन लगा कर देखना चाहिए। और उस पर मनन करना चाहिए तभी गोपाष्टमीको हम सफल बना सकेंगे।

सत्य और सुन्दरमें विरोध

गीता एक ऐसी पुस्तक है जिसने बड़ी बड़ी जातियोंको मार्ग दिखाया है। शंकर, तिलक, रामदास और गांधीने गीताके आधार पर ही संसारको मुक्तिका मार्ग बताया है। हमारी विषम परिस्थितियोंमें गीता ही एक ऐसी पुस्तक है जिससे हमें मुक्ति मिल सकती है। गीताने सबको सेवाका पाठ पढ़ाया है मनुष्यकी देह तो एक साधन मात्र है। जैसे चरखेमें तेल लगानेसे चरखा चलता है उसी प्रकार शरीरको भोजन देकर उससे मनुष्यमें जो परमात्मा और आत्मा है उसकी सेवा करनी चाहिए। देहको कर्तव्य निष्ठ बनानेके लिए उसे भोजन देना आवश्यक है।

जीवनका जो ध्येय है वह हमें इसी जीवनमें भोगनेको मिलता है। मरनेके बाद किसीको पता नहीं क्या होना है। गीतामें हमारे जीवनको सफल बनानेका मार्ग बताया कि हम कर्म करें किन्तु कर्मके फलको आशा पर छोड़ दें। यदि समाज समझेगा कि आप उसके लिए उपयोगी हैं तो समाज समझेगा कि आप उसके लिए उपयोगी हैं तो समाज आपकी रक्षा करेगा। जो मनुष्य दूसरोंकी सेवा करता है अपनी सेवा देता है वह देवता हो जाता है। जो मनुष्य अपनी चीजोंको गाड़ता है अपने उपयोगके लिए रक्षा करता है वह राक्षस हो जाता है। हमें गीताको प्रत्यक्षाचरणमें लाना चाहिए।

—संतविनोबा

महापुरुष कौन ?

महात्माजी या नेताजी ?

(लेखक—दर्शनाचार्य श्रीरामदासजी भादुरी एम० ए०, पी० एच० डी०)



महात्माजी



नेताजी

वर्तमान युगमें जिन महापुरुषोंने भारत-हृदयको आलोडित किया उनमेंसे स्वामी विवेकानन्दजी, नेता सुभाषचन्द्रजी तथा माहात्मा गांधीजीका नाम विशेषतया उल्लेखनीय है। इन तीन महापुरुषोंने वर्तमान भारतको तीन विशिष्ट मार्ग प्रदर्शित कराये हैं। उक्त तीन महापुरुषोंसे प्रदर्शित मार्गत्रयमें कहाँ साम्य है—और कहाँ वैषम्य है, इस बातकी "श्री मोहितलाल मजूमदार"ने स्वलिखित "जयतु नेताजी" नामक पुस्तकमें सुस्पष्ट रूपमें आलोचनाकी है।

उक्त समालोचकजी ढाका विश्वविद्यालयमें बंगला भाषाके प्रोफेसर रह चुके हैं, तथा बंगलाकी 'नवयुग' नामक पुस्तक लिखकर अपनी सर्वतोमुखी प्रतिभाका पूर्ण परिचय देकर न केवल बंगालको ही अपितु सम्पूर्ण भारतको गौरवान्वित कर चुके हैं। इनकी भाषामें प्राञ्जलताके साथ-साथ अर्थ गाम्भीर्य, एवं विश्लेषण पूर्णरूपेण विद्यमान है। श्री मोहितलालसे सुचिन्तित तुलनाके विद्युदालोककी सहायतासे हम इस प्रबन्धमें देखेंगे कि स्वामीजी नेताजी गांधीजीके मतमें कहाँ ऐक्य तथा कहाँ पार्थक्य है।

देश विदेशके बहुत सारे विद्वानोंने स्वामीजीकी वाणीकी व्याख्या की है। इनमेंसे मुझे 'भगिनी निवेदिता' मोतीलाल राय एवं मोहितलाल मजुमदारजीकी रचना सर्वापेक्षया उत्तम प्रतीत हुई। मैं सोचता हूँ कि मोहितलाल जी के अतिरिक्त कोई भी साहित्यिक स्वामीजीको ऐसे गम्भीरभावसे पर्यवेक्षण नहीं कर सका। बंगलाका 'नवयुग' एवं बंगालीका महत्व समझनेमें श्री मोहितलालजी ही स्वामीजीके विशिष्टस्वरूपको ग्रहण कर सके, वे कहते हैं—"स्वामीजीके समान सन्यासी अथ च देशप्रेमी महापुरुष इससे पहिले नहीं हुआ"।

बंगालियों की प्रतिभाने ही भारतीय साधना के विचित्र और बहुमुखी प्रयासको आत्मसात् कर वर्तमान समयमें जो नूतन वाणीकी घोषणा की उसमें—"जीव और

ब्रह्म, इह और पर, स्वमोक्ष और परमोक्ष; आर्थिक और पारमार्थिकका भेद दूर हो गया। इस मन्त्रने ही स्वामी विवेकानन्द जी की अपार्थिव मुक्ति पिपासाको पार्थिव मुक्ति पिपासाके साथ अभिन्न कर दिया था। "आत्म बन्धन तथा देहबन्धन ये दोनों ही समान हैं, इसमें देहबन्धन दशा पहिले मुक्त करनी होगी।" इस महावाणीका स्वामी जी ने ही पहिले पहल मुक्त कण्ठसे प्रचार किया। स्वामी जी के स्वदेशप्रेमके अलौकिकत्वको- उनकी जीवनी लेखक विदेशी 'रोमा रोला'तथा 'भगिनी निवेदिता' भी समझे थे। रोमा रोला कहते हैं—"मातृभूमि भारतकी सर्वांगीण नग्नमूर्ति और सर्वप्रकारकी शोचनीयता स्वामीजीके चित्तगोचर थी, अतिशयहीनशय्याशायिनी एवं सर्वाभरण-रिक्ता राजेन्द्राणी (भारतमाता) के देहको स्वामीजी ने स्वदृष्टिगोचर एवं हस्तस्पर्श किया था, अर्थात् दर्शनेन्द्रिय और स्पर्शनेन्द्रियसे जान लिया था"। भगिनी निवेदिता कहते हैं—'स्वामीजी आजन्मसे प्रेमी थे, प्रेम ही उनका जन्मगत संस्कार था, मातृभूमि थी उनके हृदय की आराध्य देवता, स्वदेशके किसी भी दोषको वे अक्षम्य समझते थे, इतना तक कि वे स्वकृत संसार त्यागको भी गुरुतर दोष जानते थे। कारण कि वे स्वजातिके सभी दोषोंको स्वीयत्वेन जानते थे।

मोहितलालजी और भी कहते हैं—स्वामीजीने जातिकी व्याधिको यन्त्रणाकी भाँति ही निज देह और आत्म में अनुभव किया था, इस युगमें और किसीने ऐसा अनुभव नहीं किया। यही सत्य सर्वप्रथम सर्वदा स्मरण रखना होगा। स्वामीजीने व्यक्तिगत मुक्तिसाधनाको नगण्य समझ कर स्वदेश प्रीति, और स्वजातीय प्रेमको भारतवर्षमें नूतन जन्म दिया। यह स्वदेश प्रेम अध्यात्म पिपासाका एक रूपान्तर है, यह बात भारतवर्षमें ही सम्भव है। देशके असह्य दारिद्रयको सोचते सोचते स्वामीजी अवाक् निस्पन्द और अश्रुप्रवाहपातके साथ-साथ रुद्ध कण्ठ हो जाते थे। किन्तु उनकी हृदय वेदनाका उच्छ्वास रोदनरवमें प्रकाशित नहीं हुआ था। स्वामीजी अभिशप्त शय्याशायी और मृतकल्प जातिके शिरके पास बैठ उसके वक्ष और बाहुमें बलाधान करनेके लिए कर्णमें सतत मृतसञ्जीवनी (तत्वमसि) महावाक्यका उच्चारण करने लगे थे। स्वामीजीका दृढ़ विश्वास यह था कि जातिके हृत्-पिण्ड की क्रिया स्वाभाविक होनेसे ही समस्त दुर्बलता और उपसर्ग अपने आप दूर हो जायेंगे। इसलिए उन्होंने वेदान्तवाणी और सेवाधर्मका प्रचार किया।

महाराष्ट्रके स्वामी रामदास तथा पञ्जाबके गुरुगोविन्द सिंहजीने जिस विचारधाराका सूत्रपात किया था, उसे स्वामीजीने ही पूर्णतया कार्यान्वित किया। बंकिमचन्द्र जीने जिस वस्तुको स्वप्नमें पाया था स्वामीजीने उसी वस्तुको ध्यानसे प्राप्त किया। मोहितलालजीने यथार्थ कहा है कि—"बंकिमचन्द्रने जिस जातीयताके मन्त्रका प्रचार किया था वही जातीयता धर्म स्वामीजीकी ध्यान दृष्टिमें और भी विशुद्ध एवं गाम्भीर्य रूपमें परिणत हुआ।" जातिके हृदयमें स्वामीजीने ही वास्तविक महाभारतके बीजका वपन किया था। जिससे उन्होंने संकुचित सीमामें स्थित भारतको महाभारत रूप दे दिया था। स्वामीजी थे युगाचार्य, जातिके जागरण मन्त्रके ऋषि स्वामीजीने जिस वस्तुको चित्तगोचर किया था उसी वस्तुको दृष्टि गोचर करने के लिए अनेकों विवेकानन्दोंका आविर्भाव होगा, इस भविष्यवाणीको उन्होंने अपने अन्तरङ्ग शिष्योंको महाप्रयाणसे प्रथम मन्द-मन्द स्वरमें बता दिया था। मोहितलाल जी और भी कहते हैं—"विवेकानन्दजीने जिस वस्तुको तत्वरूपमें प्रत्यक्ष कर आसन्न भविष्यत् प्रयोजनकी सिद्धिके लिए चतुर्दिक् भूमिमें वपन किया था उसीका एक बीज अनतिविलम्ब अंकुरित होकर 'नेताजी' नामक विशाल महीरूह रूपमें परिणत हुआ।"

मोहितलाल जी और भी कहते हैं—"जातिकी आत्म-रक्षा व आत्मप्रतिष्ठाके लिए पाश्चात्यके निकटसे बंकिमचन्द्र जीने जो यज्ञकी सामग्री संग्रह की थी एवं भारतीय रीतिसे शोधन कर उसमें जो अग्न्याधान किया था उसी अग्निमें ही स्वामीजीने नवपुरुष यज्ञके मन्त्रोच्चारण पूर्वक आहुति प्रदान की। भारतकी उसी प्राचीन मुक्ति साधनाको ही उन्होंने ऋषियोंके आरण्यसे, योगियोंकी गुहासे तथा भक्तों के आश्रमसे उद्धार कर जाति और समाजकी जीवन समस्या के साथ संयुक्त कर दिया। आहुत्यनन्तर उसी अग्निसे जिस महापुरुषका आविर्भाव हुआ, उसी वाणीने जो मूर्त्ति धारणकी उसीका लौकिक नाम 'नेता जी सुभाषचन्द्र' है।

मनीषी मोहित लाल जी कहते हैं—"एतदर्थ नेताजी स्वामी जी के उत्तर साधक, मन्त्र शिष्य, या मानसपुत्र हुए।" स्वामी जी का देशप्रेम मन्त्र ही नेता जी की साधना द्वारा वास्तवमें परिणत हुआ। जिस भारतको स्वामी जी ने ध्यानगम्य किया था उसी भारतको नेताजी ने मूर्तरूप दे दिया। स्वामीजीके हृदयमें जो वस्तुएं बीजरूपमें थीं उन्हीं वस्तुओंने नेताजीके जीवनमें वृक्ष रूप धारण किया।

स्वामीजीका प्रभाव नेता जी के जीवनमें बाल्यकाल से ही पड़ गया था। रामकृष्ण विवेकानन्द साहित्य नेता जी के लिए अनुप्रेरणाका दिव्यसन्देश था। उसी आदर्श को अपने जीवनमें परिणत करनेके लिए वे चिरकुमार (बाल ब्रह्मचारी) थे। 'वेलूड़' मठमें सम्मिलित होनेके लिए एक बार वहां भी गए थे। विदेशसे 'उद्बोधन' पत्रिकाके सम्पादकके लिए लिखित एक पत्रमें नेताजीने विवेकानन्द जीको गुरुरूपमें स्वीकार किया है। सुतरां मोहितलालजी का सिद्धान्त सत्य है। हिन्दुधर्मका जो सनातनस्वरूप महाभारतमें मिलता है उसीको स्वामीजीने वर्तमान युग में पुनरुद्धार पूर्वक बृहत्तर महाभारतके स्वागतार्थ गाया। गुरुकृपासे स्वामीजीने भारतीय धर्मको मध्ययुगीय संकीर्णतासे मुक्त कर युगोपयोगी बनाया। मोहितलाल जी के मतसे—भारतकी स्वजाति साधनामें धर्मका प्रयोग कर बंगाली आधुनिक भरतमें एक नव धर्मका गुरु बना है। इस धर्मके आदि द्रष्टा बंकिमचन्द्र जी हैं। उसके बाद स्वामी विवेकानन्द तथा नेताजीके जीवनमें इस धर्म की स्फुटतर और पूर्णतया अभिव्यक्ति हुई। स्वामीजी और नेता जी में जो वैशिष्ट्य था वह भी मोहितलालजीकी सूक्ष्म दृष्टिसे बहिर्भूत न था, वे कहते हैं—'स्वामी जी थे प्रथम वेदान्तिक सन्यासी, ततः देशप्रेमी; और नेताजी प्रथम देशप्रेमी ततः देशसेवार्थ सन्यासी।' जिस देशप्रेम को स्वामीजीने ज्ञानसे प्राप्त कर कर्मरूप देना चाहा था, नेताजीने उसीको ज्ञानसे भी नहीं, ध्यानसे भी नहीं अपितु विश्वासवायु रूपमें प्राप्त किया, शक्ति के उपासक नेताजी को आत्मबलिदानके लिए एक देवी की आवश्यकता थी; वह देवी ध्यान कल्पना, या कवित्वकी नहीं अपितु साक्षात् मृण्मयी मूर्तिकी, देशमातृकाकी, भूलुण्ठिता राजराजेश्वरी मूर्तिने उन्हें पागल बना दिया था। उसीके प्रेमसे वे सर्वत्यागी सन्यासी हुए और जीवन तथा यौवनको उसीको समर्पित किया। ऐसा सर्वत्यागी और कोई नहीं हुआ। प्रजा तथा देशके दुःख उन्हें कितना व्यथित और अभिभूत किया इसको सोचनेसे पाषाण हृदय भी पसीज जाता है। मार्गसे रोगव्याकुल दरिद्रबालकको उठा वक्षः स्थलमें रख घरमें लाकर उसकी शुश्रूषा किया करते थे। राजपुत्र सिद्धार्थक द्वारा आहत पक्षीकी सेवाकी नाईं यह समवेदना अद्भुत है। भग्नस्वास्थ्य नेता जी जब मद्रास जेलमें पाकस्थली के कठिन रोगसे मरणासन्न तथा आहार त्यागी थे, तब भी प्रतिदिन अपने हाथसे कुछ-न-कुछ खाद्य बनाकर जेलके तृतीय श्रेणीके बन्दियोंको आह्वान कर खिलाते थे और सुयोगमें उन्हें मीठे वचनोंसे सदुपदेश भी दिया करते थे। स्वदेशीय नर नारी उनके लिए सहोदर तथा सहोदराके तुल्य थे। वास्तविक देशात्मबोध जगनेसे मनुष्यके मनमें ऐसी ही समवेदना जागती है, जिसमें दूसरे के दुःखको इस प्रकारसे स्वदुःख समझते हैं। स्वामीजी की नाईं नेताजीने देशके दासत्व और दुर्गतिका मर्म-स्पर्शी अनुभव किया था। यह बात निम्नोक्त घटनासे स्पष्ट रूपेण ज्ञात होती है।

सिंगापुरके विशाल प्रांगणमें सुसज्जित सेना वाहिनी तथा समवेतजनसमुद्रके सम्मुख मञ्चोपरि योद्धा वेष परिहित नेताजी देवसेनापति कार्तिकेयकी भाँति शोभायमान थे। मातृभूमिकी दासत्व शृंखला मोचनके लिए वे सर्वस्व त्यागके शपथ पत्रको पढ रहे थे। देशके चालीस करोड़ नर नारीकें दारिद्र्य तथा दुर्गतिकी वेदना उनके हृदयमें क्षणभरमें ही पुञ्जीभूत हुई। पुञ्जीभूत वेदनाके विद्युत्स्फुरणसे उनकी देह निस्पन्द और प्रस्तर वत् संज्ञा-शून्य और नेत्र भी अपलक हो गए। वे भावाविष्ट तथा समाधिस्थ हुए। प्रायः बीस मिनट या आध घण्टे वे इस प्रकार वाह्यज्ञानशून्य अवस्थामें रहे, ऐसा देशात्मबोध वास्तविक दुर्लभ है इस प्रकारका गम्भीर देशप्रेम भारतमें ही संभव है, अन्यत्र नहीं।

मोहितलाल जी कहते हैं—"नेताजीके उस विराट विशाल हृदयमुकुरमें भारतवर्ष आज अपनी आत्माके प्रतिबिम्बको देखकर उठ बैठा और इस प्रकार उसका नवजन्म हुआ।" पचास वर्ष तक बंगालियोंने जिस

स्वाधीनताकी साधना की है उसीके फलस्वरूप नेताजी का आविर्भाव बंगाल में ही सम्भव हुआ। वे वर्तमान भारतके वर्तमान युगके मुख्य प्रतिनिधि हैं। उपरोक्त निर्देश पूर्वक मोहितलालजीने नेताजीके जीवन व्रतको सुन्दर रूपसे व्यक्त किया। मोहितलालजीने नेताजीको विवेकानन्द जीवनके ज्वलन्त भाष्यरूपमें देखा है। उनके मतसे स्वामीजीको न समझनेसे नेताजीको भी नहीं समझा जायगा, एवं नेताजीको न देखनेसे स्वामीजी का दर्शन लाभ भी न होगा। मोहितलालजी समझते हैं नेताजीके आविर्भावसे स्वामीजीकी भविष्यवाणी सफल हुई। नेताजीके न होने से स्वदेश प्रेमी सन्यासी स्वामीजीको कौन समझते? कौन उनके असमाप्त कार्य को समाप्त करते? मोहितलालजीकी वही भविष्यवाणी जो इतनी शीघ्र फलवती होगी, कौन जानता था? पुनः वही सन्यासी! वही त्याग! वही प्रेम! वही कौपीनमात्र सम्बल होकर पुनः देशके लिए देशत्याग! उस समय जगद्धर्म महामण्डली में जय २ रव, इस समय जगत् महा-कुरुक्षेत्र में "जयहिन्द" रव। उस समय स्व शरीरमें प्रत्यागमन, इस समय अशरीरसे प्रत्यागमन।

महात्माजी और नेताजी

उपरोक्त आलोचनासे पाठकोंको विदित हो गया होगा कि स्वामीजी तथा नेताजीके अन्दर पार्थक्य या सादृश्य क्या है। अब महात्माजी और नेताजीके अन्दर साम्य या आदर्शगत वैषम्य क्या है? यह आलोच्य विषय रहता है। नेताजीके जीवनका मूलमन्त्र है—पहिले स्वाधीनता ततः अन्य सब कुछ। जो पराधीन की वेदना बंकिम, विवेकानन्दजीकी साधनामें मानुषी मूर्तिमें प्रकाशित हुई थी उसीने नेताजीमें वास्तविक रूप धारण किया है। मोहितलालजीके शब्दोंमें "सुभाषचन्द्र केवल युद्धनायक नेता नहीं हैं; अंग्रेजके साथ युद्ध और उस युद्धमें जयलाभ ही उनकी साधनाका शेष फल नहीं है, वे केवल शत्रुञ्जय नहीं है, वे इससे भी और परे दिखाई देते हैं। वे स्वयं मृत्युञ्जय होकर इस जातिके मृत्यु-भयहारी हैं। जिस वीर्यसे विनतानन्दन गरुड़ जी ने स्वर्गसे स्वाधीनताका अमृत सोमहरण किया था ये उसी वीर्यके अवतार हैं; उसी वीर्यको उसी अमृत पिपासाको उन्होंने अपने वक्षःस्थलसे समस्त जातिके वक्षःस्थलमें सञ्चारित किया है। वे विवेकानन्दजीके उत्तर साधक हैं।" मोहितलालजी कहते हैं—"आधुनिक भारतमें 'नेताजी के सिवाय और किसी का भी अंग्रेज-मोह भंग नहीं हुआ है, एवं उन्होंने स्वदेशकी वास्तविक मूर्त्तिको अपरोक्ष किया है, उसी एक मुक्तजीवके अपूर्व उत्साह और उल्लासने करोड़ों जीवोंको बन्धन-मुक्त किया है। एक क्षुद्रशलाका जैसे कोष्ठव्यापी बहुशताब्दि स्थायी अन्धकारको निमेशमात्रमें नाश करती है, वैसे ही नेताजीके मुक्तिलाभसे अखिल भारतका मोह भंग हुआ है। जिस मूर्त्तिको उन्होंने अपने हृदयमें प्रत्यक्ष किया था उसीको चाक्षुष प्रत्यक्ष करना ही उनका जीवनव्रत था।

उसी व्रतके उद्यापनमें उन्होंने तिल-तिल प्राण-पात किया है इसलिये उनमें इतना अधैर्य, इतना उत्साह, इतनी उन्मत्तता थी। नेताजी नहीं मरे वे अमर हैं, उनकी मृत्युसे कोटि-कोटि जीवन जाग्रत हुए हैं। वे जिस महा-त्यागके दृष्टान्तको रखकर गये हैं वही आज करोड़ों नर-नारियोंके हृदयमें दिव्य दीपशिखाकी भांति जल रहा है। देशकी पराधीनता मोचन जिस महाजीवनकी एक मात्र साधना थी वह कभी व्यर्थ जा सकती थी? देशकी स्वाधी-नताके लिए प्राणोत्सर्गकर वे अग्रणी हुए हैं। सरदार तो 'शिर-दार' ही हो सकता है। मोहितजी कहते हैं—नेताजीका पन्था क्या निष्फल हुआ है? महात्माजीका पन्था क्या सफल हुआ है? इन दो प्रश्नों के उत्तर जो लोग स्थिरतासे सोचेंगे वे लोग कहनेको बाध्य होंगे कि नेताजीकी निष्फलताने भी जो अखिल भारतका कल्याण-साधन किया है, महात्माजीकी अधुना विघोषित तथाकथित सफलता, उस कल्याणको भी विषण्णावस्थामें डालनेके लिए हुई है। बाहरकी सफलता या निष्फलता महत्वकी कसौटी नहीं हो सकती। मोहितजीके मतसे इति-हास या कालका कुछ लग्न वही लग्न है। यदि इस तरहके जीवनमें युक्त होता है तो महात्माजीकी नाईं पुरुषका अभ्युत्थान होता है। यदि लग्न अनुकूल न हो तो इससे भी महत्तर व्यक्ति इतिहासके अगोचर हो जाया करते हैं। नेताजीका देहत्याग, सम्बन्धी नाना प्रकारसे प्रचार करने पर भी अनेक लोक नाना प्रकारसे अभी उनकी

आगमन प्रतीक्षा क्यों कर रहे है ? वे जो मरे हैं इस बातका लोग विश्वास क्यों नहीं करना चाहते ? इसके उत्तरमें मोहितजी कहते हैं—अब भारतवासियोंकी मानसिक अवस्था बंकिमचन्द्रजीके 'विषवृक्ष'में लिखित कुन्दनन्दिनीकी भांति है "पिताके अतिरिक्त जिसका कोई नहीं है, वही मरणासन्न पिताके शिरके समीप बैठी है। गम्भीर रात्रिमें उसके पिताके प्राणवायु जनहीनकक्षमें बहिर्गत हो गये फिर भी क्षीण दीपालोकमें उनके मुखकी ओर जोह रही है। पिताकी मृत्यु होगई है यह विश्वास वह किसी भी भांति नहीं करेगी। कारण उसका पिताके अतिरिक्त कोई नहीं है, क्या ऐसे सर्वनाशका विश्वास हो सकता है ? इसलिये कुन्दनन्दिनी मृतपिताको जब तक हो सकता है जीवित समझकर उसी महाभयको दूर करना चाहती है।" नेताजी जीवित हैं या नहीं—यह विश्वास भारतवासियोंके लिए तद्रूप है। उसका और कोई नहीं, किसीके हुंकार करनेसे क्या होगा। नेताजीके साथ महात्माजीका जो विरोध है उसको समझनेसे ही उभयके अन्दर वैशिष्ट्य दृष्टिगत होगा।

नेताजीकी नीतिने गांधीवादके प्रतिवाद रूपमें आत्म-प्रकाशन किया था। गांधीवादके अन्धधर्म मतकी नाई जनसाधारणके चित्तोंको अधिकृत किया है, यह मध्ययुगीय आध्यात्मिकताका ही नवरूप है, यह अन्ध विश्वासका धर्म है। इसमें युक्ति विचारके लिये स्थान नहीं है। जिस मध्ययुगीय संकीर्णता और भावप्रवणतासे विवेकानन्द प्रमुख आधुनिक धर्माचार्यगण हम लोगोंके धर्मको मुक्त कराना चाहते थे, महात्माजीने उसीका ही प्रचार तथा पोषण किया है। परिणाम क्या हुआ कि कांग्रेस भी उनके नेतृत्वमें साधनताके संग्रामको भूलकर अध्यात्मवादमें अन्धविश्वासी हुई, अतः लक्ष्यको भूलकर उपलक्ष्यको प्रधान स्थान दिया एवं देश भक्तिसे अधिक गांधीभक्तिको स्थान दिया। जिस बंगाल देशमें अतीतके द्वारको सबलतासे तोड़कर अत्युग्रवर्तमानने प्रवेश किया एवं जिस देशने स्वाधीनताके प्रथम स्वप्नको देखा और स्वाधीनताको ध्यानसे प्राप्त किया, तथा जिस बंगालने स्वाधीनताके आन्दोलनको जन्म दिया, उस बंगाल जागरणको महाराष्ट्रके लोकमान्य बाल गङ्गाधर तिलकके अतिरिक्त अन्य कोई भी देशनायक प्रीति चक्षु से नहीं देख पाया। इतना तक कि महात्माजी भी नहीं। इसीलिये महात्माजीके साथ जैसे देश बन्धु चित्तरञ्जनका मतभेद हुआ था वैसे ही नेताजीके साथ भी विरोध हुआ। परिणाममें अवस्था चक्रमें पड़ एवं विवश होकर कांग्रेसने देशबन्धु या नेताजीके मतको ही प्रकारान्तरसे ग्रहण किया है। कांग्रेस द्वारा मन्त्रित्व ग्रहण एवं 'भारत छोड़ो' आंदोलनके द्वारा यह बात निःसन्देह प्रमाणित होती है। नेताजी जब द्वितीय बार राष्ट्रपति निर्वाचित हुए तब महात्माजीने भग्न हृदय और गम्भीर आक्षेपके साथ कहा था "सुभाषकी जयसे मेरी ही पराजय है।" इसीसे महात्माजी प्रमुख कांग्रेस नायकका क्या मनोभाव प्रकाशित हुआ है यह बात पाठक-पाठिकाओंके बतानेके लिये आवश्यक प्रतीत नहीं होती।

खिलाफत आन्दोलनके सहयोगी होकर महात्माजीने जो राजनैतिक बुद्धिहीनताका परिचय दिया था उसे पूर्वतन नेतागण समझकर भविष्यत्के विषयमें हताश हो गये थे। मोहितजी कहते हैं—"गाँधीजीने प्रथमसे ही भारतकी हिंदु मुसलमान समस्याको वही गुरुत्व दिया था जो कि बृटिश सरकारके पास अतिशय सुविधाजनक था। गाँधी-काँग्रेसने उसी समस्यासे भयभीत होकर उसकी शक्ति और दुलङ्घता को ऐसा विद्ध किया था कि अवशेषमें उसीने तार-पेडोका रूप धारणकर कांग्रेसकी सुबृहत् रणतरीको जलमग्न कर दिया।' गांधीनीतिके प्रतिवाद स्वरूप नेताजीने जो व्यवहार किया है उसको मोहितजीने कुरुक्षेत्रमें भीष्मके साथ अर्जुनके संग्राम सदृश माना है। काँग्रेस अंग्रेजका विश्वास करती है, मुसलिमलीगसे डरती है इसके विपरीत हिंदूमहासभा तथा नेताजीको शत्रु समझती है। अंग्रेज प्रीति अभी भी कांग्रेस पन्थि देशनायकोंके अन्तरमें विद्यमान है। अंग्रेज मोहके न टूटनेसे स्वाधीनता लाभ होनेपर भी पं० जवाहरलाल प्रमुख कोई भी देशनायक बृटिशसम्पर्क छिन्न करनेकी बात साहसपूर्वक अभी तक नहीं कह सकते। अथ च नेताजीने बहुतपूर्व अनेकबार इसी बातको मुक्तकण्ठसे कहा है। इसी अंग्रेज प्रीतिका अन्यतम फल-स्वरूप सुभाष नीति है। परिणाममें नेताजीको काँग्रेस बहिष्कृतकर ही महात्माजी निश्चिन्त हुए। त्रिपुरी पदच्युत करनेकी कलंक कहानी ही अभ्रान्त प्रमाण है कि गाँधीपन्थी

सुभाषके लिये कितनी दूर तक बद्धपरिकर हुए थे। नेताजी गाँधी चरित्रको अशेष श्रद्धा चक्षुसे देखते थे, किंतु वे गांधी नीतिको स्वाधीनताकी परिपन्थिनी समझते थे। सुभाषका हृदयगत विश्वास था कि युद्धयात्राके समयमें सेना वाहिनीके अन्दर जैसे सब व्यवधान विलुप्त होता है उसी प्रकार जो लोग स्वाधीनताके लिए आकुल हैं उन लोगोंको संग्राममें नियुक्त करनेसे ही उन लोगोंके अन्दर जातीयतादि भेद शीघ्र तिरोहित हो जायगा। स्वाधीनता लाभका आग्रह ही जब जातीयता और ऐक्य बोधको उत्पन्न करेगा तब हिंदू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई प्रभृति साम्प्रदायिक भेदबुद्धि मिट जायगी। "आजाद हिंदफौज"का गठनकर उन्होंने अपने विश्वासको कार्यमें परिणत किया था। उनकी नीति कितनी अभ्रान्त थी यह इसका अकाट्य प्रमाण है, किंतु महात्माजीने अहिंसा नीति और सहयोग नीति क्यों छोड़ी? मोहितजीने गांधीवादका निम्नलिखित रूपमें गम्भीर विश्लेषण किया है।

"महात्माजीका इस मनोभावके मूलमें उनकी जातिगत, वंशगत और समाजगत संस्कार निहित हैं। असाधारण चरित्र शक्तिमान् पुरुष होनेके कारण यह सब संस्कार उनके अन्दर पूर्णरूपमें प्रकटित हुआ था।" पहिले तो भारतीय संस्कारकी अध्यात्म प्रीति, इसके अतिरिक्त जैन धर्मका प्रभाव तथा इसके भी अतिरिक्त रक्तगत वैश्यबुद्धि।"

इनमें से कोई भी सांसारिक व्यापारमें पार्थिव आदर्शनिष्ठाके अनुकूल नहीं है। जैन धर्म बौद्ध धर्मका प्रायः सगोत्र है। उसमें सर्व प्रकार हिंसा ही पाप है, अहिंसा ही धर्म है। शक्तिके विरुद्ध शक्तिके प्रयोगसे आत्मदमन ही या निष्क्रियताका प्रतिरोध ही कल्याणकर है। यह भी स्मरण रखना होगा कि यही तत्व भारतीय मनीषा, या साधनाका एकमात्र तत्व नहीं, यह एक आंशिक तत्व मात्र है, और प्रधान विचारधाराका विरोधी है। गाँधीजीने वणिक् मनोवृत्तिके वशीभूत होकर आदान-प्रदान, लेन देन पारस्परिक मिलाप, इनको ही सर्वविध उपार्जन क्षेत्रमें श्रेष्ठनीति समझ लिया। राष्ट्रीय स्वाधीनता लाभ उनके विचारमें चिरकालसे गौण हैं। लोक हित साधनकी स्वाधीनता ही उनके निकट वास्तविक स्वाधीनता थी, यही गांधीवादका सार तत्व है। महात्माजी उन्नीसवीं शताब्दिके मनोभावोंको लेकर बीसवीं शताब्दीमें वास करते थे। सुतरां उनकी नीति बीसवीं शताब्दीके नवीन भारतके उपयोगिनी कैसे हो सकती है? वे बाल्यकालमें जैन प्रभाव एवं यौवन कालमें टाल्स्टाय (रूसी लेखक) के प्रभावसे लालित पालित हुए थे। जिस काठियावाड़में उन्होंने बाल्य अतिवाहित एवं 'दशवीं श्रेणी पर्यन्त शिक्षा प्राप्त की थी उस स्थानमें जैन प्रभाव अभी भी प्रबल है। काठियावाड़ी हिंदू बालक गणकी नाई गांधीजी भी जैन प्रभावके हाथसे न बच सके। जो जैन धर्म पिपीलिकाओंको शर्करादन, एवं खटमलोंको मनुष्यका रक्तपिलाना धर्म साधना समझता है उसमें हिंस्र शत्रुका दमन भी बड़ा पाप है। इस लेखके लेखकने काठियावाड़ प्रवास कालमें अपनी आंखोंसे देखा है कि जैन बालकगणकी भाँति हिंदू बालक गण भी वहाँ पिपीलिका, खटमल, और सर्पादि जब दंशन करने आते हैं तो उन्हें निहत या आहत करनेसे पीछे हट जाते हैं। खटमलकी अहिंसाके अन्दर जो मानव हिंसा निहित है इस बातको वे लोग नहीं समझते। वैसे ही महात्माजीने मुसलमानोंके प्रति-प्रीति प्रदर्शनकेलिए नेताजी प्रभृति कितने हिन्दुओंके प्रति विद्वेष प्रकाशित किया है, इस बातको वे समझते हुए भी नहीं समझे। जैनधर्म भारत धर्मका आंशिक विकास मात्र, एवं अवैदिक है। बौद्ध धर्मकी भाँति यह भी वेद विरोधी है, इसलिये शंकराचार्यजीने वैदिक धर्मका प्रचारकर दोनोंके प्रभावको ध्वंसकर दिया था। इसी कारण भगवान् श्रीकृष्णने भी अर्जुनको क्लैव्य त्यागकर युद्धमें नियोजित किया था। एवं इसीलिये ही भगवान् श्रीरामचन्द्रजीने रावणके विरुद्ध अस्त्र धारण किया था। गाँधीवाद बौद्ध या जैनधर्मका संस्करण मात्र है, यह विशुद्ध हिन्दूधर्म या वैदिक धर्म नहीं है।

मोहितजीकी यह तुलनामूलक आलोचना मौलिक है। वे और भी कहते हैं—"गाँधीजीकी प्रेरणा सम्पूर्ण (मौरल) नैतिक हैं; और नेताजीकी प्रेरणा एकान्त रूपसे आध्यात्मिक है। एकमें हैं सङ्कल्प विकल्पात्मक मनके ऊपर धर्माधर्म बोधका कठिन शासन, और दूसरेमें है 'बुद्धेः परतस्तु यः' अर्थात् जो बुद्धिसे भी गम्य नहीं ऐसी आत्मा। उसी आत्माकी सर्व बन्धन मुक्ति, अकुण्ठित प्रसार, असीम स्फूर्ति। गाँधीजी धमकी देते हैं भर्त्सना करते हैं, नेताजी छातीसे

आलिङ्गन करते हैं। गाँधीजी कहते हैं—„तुम लोग दुर्बल हो पापचित्त हो मैं क्या कर सकता हूँ ? नेताजी कहते हैं—'कोई भयका कारण नहीं है तुम लोगोंके अन्दर अनन्त शक्ति निहित है विश्वास करो ! मुझे देखो ! तुम लोगोंके लिए कोई भी वस्तु असाध्य नहीं। गांधीजी नियमित भजन द्वारा आत्म शुद्धि या पाप मोचनका उपदेश देते हैं। नेता जी भगवान्‌का नाम नहीं लेते मनुष्यका नाम ही लेते हैं। उनका धर्म भगवान्‌में भक्ति नहीं मनुष्यके प्रति प्रेम है, जिस प्रेममें पापकी चिन्तामात्र भी नहीं। विवेकानन्दजीकी वाणी है "जो लोग जीवसे प्रेम करते हैं वे ही मनुष्य ईश्वरकी सच्ची सेवा करते हैं।" इस वाणीने नेताजीके जीवनमें मूर्त रूप धारण कर लिया था।

विदेश गमन समय जहाजमें भारतनिन्दासे उन्मत्त किसी पादरीको जिस कारण स्वामीजी क्षणमात्रके लिए स्वीय सन्यासधर्म भूल कर मातृभूमिके सम्मान रक्षार्थ प्रहार करनेके लिए उद्यत हुए थे, उसी कारण नेताजीने भी स्वदेशकी स्वाधीनता लाभके लिए अस्त्र धारण किया था। श्रीकृष्ण, रामचन्द्र, और विवेकानन्दजीके अन्दर जो भारतीय आदर्श साकार हुआ था, उसीने नेताजीमें आत्मप्रकाश किया था—'और किया देशको पराधीनतासे मुक्त करनेके लिए। नेताजीकी युद्ध घोषणाको जो लोग हिंसा नीति कहते हैं वे लोग भारतीय साधनाके मूलतत्त्वसे नितान्त अपरिचित हैं। गाँधीवादमें 'जीवन धर्म' का स्थान नहीं इस लिए महात्माजी बचाना नहीं जानते मरने का उपदेश देते हैं, गांधीवादका मूलमन्त्र है आत्मसम्वरण आत्मसङ्कोच, या आत्मसम्मोहन। नेताजीका धर्म है आत्म विकास, आत्म प्रसारण।

मोहितजी कहते हैं—"महात्माजी और नेताजीका लक्ष्य भी एक नहीं है। एक मांगते हैं यथासम्भव देशके जनगणकी दुर्गतिका लाघव, तो दूसरे मांगते हैं देशकी बन्धन मुक्ति।" नेताजी आभ्यन्तरिक ब्रह्म वाक्यकी भांति विश्वास करते थे कि मुक्तिके सिवाय देशकी दुर्गतिके नाशका उपायान्तर नहीं है, वे और भी कहते हैं "गांधीजी महात्मा होने पर भी महापुरुष नहीं हैं वे अनेकों भूल करते हैं और आगे भी करेंगे। महात्माकी भांति वे भूलको भी मान लेते हैं। महापुरुषकी भांति उसे रोध नहीं कर सकते। नेताजी स्वयंमुक्त, नित्यमुक्त हैं, उनके मुक्त स्वभावका जो प्रयास है वह स्वतः स्फूर्त और द्विधाहीन है तत्वानुसन्धान नहीं। किसी रूप फलाफलके ऊपर उस प्रयासकी सत्यता निर्भर नहीं करते। उनके मनमें कोई सन्देह नहीं, उनकी दृष्टि भी अभ्रान्त है। उनका पथ भी लक्ष्य पर पहुँचनेका पथ है, आविष्कारका पथ नहीं। स्वयं पहुंचे हैं इस लिये वे जानते हैं कि किस मार्गसे सबको पहुँचना होगा।" गांधी नीति भ्रान्त है, अतः उसके अनुसरण करनेसे कांग्रेस विफल होगी—इस भविष्यवाणीको नेताजीने बहुतपूर्व बारम्बार कहा था। उनकी भविष्यवाणी जो अक्षरशः सत्य हुई है उसको आज देशके बालक बालिकाएं भी समझते हैं। जिस प्रकार सांपको चूहा मिल जाय किन्तु उसे निगलनेमें असमर्थ रहे उसी प्रकार आजस्वतन्त्रता मिलने पर भी देशकी दुर्गति मोचनमें कांग्रेस असमर्थ है। महात्माजी धर्म गुरु हो सकते हैं, देशनायक नहीं। महात्माजीकी पारस्परिक मिलाप नीति का परिणाम यह हुआ कि पञ्जाब, सिन्ध, नोआखालीमें हिन्दुओंकी ध्वंसलीला और पाकिस्तान सृष्टि। मोहितजीने सच कहा है—नेताजीकी नाईं विचारशील, तीक्ष्णधी और दूरदृष्टि सम्पन्न जननायक आधुनिक भारतमें अन्य नहीं देखे जाते। इसके संख्यातीत प्रमाण उनके चरित्र, विचार और कार्यावलीमें मिल सकते हैं। कांग्रेस उनको नेतृपदसे च्युत नहीं करती तो देश इस दुर्गतिको प्राप्त नहीं होता। अहिंसा व्यक्तिविशेषकी जीवन नीति हो सकती है, वह एक विशाल जातिकी जीवन नीति या (प्रिन्सिपल) मूलसिद्धान्त किस तरहसे हो सकेगी ? महात्माजी अपने जीवनमें यह साधना कर सकते हैं किन्तु देशके तीस कोटि नरनारीको इसके अभ्यासार्थ कहना बातूलता मात्र है। कांग्रेस यदि अहिंसाको राजनीति (पौलिसी) के रूपमें ग्रहण करे तो कोई आपत्ति नहीं, क्योंकि जनसाधारण तमोगुणाच्छन्न है, वह सहसा सत्वगुणमें किस प्रकार उठ सकता है। उन लोगोंको प्रथमरजोगुणी बनाना होगा। इस लिए स्वामी विवेकानन्दजीने कहा है—"जब शत-शत सबल शत्रुओंको पददलित करनेमें समर्थ होंगे तभी तुम उसको क्षमा कर सकते हो, तभी अहिंसाका अभ्यास भी सम्भव है, दुर्बलको क्षमा अशोभनीय और अकल्याणकर है।" यदि अहिंसाका इतना

माहात्म्य गांधीजी समझते थे तो वे सुहरावर्दीको इतनी चेष्टा करने पर भी क्यों नहीं सुधार सके ? समग्र जातिको अहिंसा धर्ममें दीक्षित करनेकी चेष्टा करके महात्माजीने जो देशका सर्वनाश किया है उसके चिन्तनसे हृत्कम्प हो जाता है। नेताजीने स्वामीजीकी भांति जातिको वीर्यवान, तथा राजसिक करना चाहा था, इसी लिए उनके कम्बुकण्ठमें सदा रण-भेरी निनादित होती थी। कांग्रेसने जब उनके लिये द्वार रुद्ध कर दिए तब वे कार्यान्तर न मिलनेके कारण (हल-श्रोयेल मूमैण्ट) संक्रान्त एक आन्दोलनकी सृष्टिकर उसमें कूद पड़े थे। उसी आन्दोलनके कारण कारारुद्ध होकर उन्होंने अशेष मानसिक यन्त्रणाका भोग किया था। तब उन्होंने लिखा था "वर्तमान अवस्थामें मुझे जीवन धारण करना असह्य प्रतीत होता है इस जगत्में सभी नश्वर है केवल उच्च आदर्श, उत्कृष्ट तत्व, तथा महती कामनाका विनाश नहीं है।" इस प्रकारके एक आदर्शके लिए यदि कोई आत्मोत्सर्ग करे, तब उसकी मृत्युसे सहस्र जीवन उज्जीवित होंगे।" नेताजीने स्वकीय भविष्यत्को ही इङ्गित किया—परिणाममें वे देश त्यागी होनेके लिये बाध्य हुए इसके लिये किसका दायित्व है और कौन दोषी है इस बातको सब कोई समझ सकते हैं।

——:——

क्या सामुद्रिक (हस्तरेखा) शास्त्र पाखण्ड है ?

ले०—श्री प्रो० के० धर्मदेव रञ्जन बी० एस० सी०

[इस लेखके विद्वान् लेखक अंग्रेजी हस्तरेखा विज्ञान (पामिस्ट्री) के विशेषज्ञ माने जाते हैं। देश-विदेशके एतद्विषयक अंग्रेजी पत्रोंमें आप प्रायः लिखते रहते हैं। 'श्रीस्वाध्याय' की लोकप्रियतासे प्रभावित होकर अब आपने राष्ट्र भाषा हिन्दीमें लिखना प्रारम्भ किया है। आपके खोजपूर्ण सचित्र लेख 'श्रीस्वाध्याय' में निरन्तर प्रकाशित रहेंगे। जो सज्जन इस विषयमें कुछ विशेष जानना चाहें वे लेखक से (प्रो० के० धर्मदेव रञ्जन बी० एस० सी०, गांधी चौक, बीकानेर) इस पते पर पत्र व्यवहार करें। —सम्पादक]

वर्तमान कालमें जब तक कोई चीज वैज्ञानिक रूपसे सिद्ध न की जावे उसको तथाकथित शिक्षितसमाज पाखण्ड मानता है, यह युग तर्कका युग है, इसी कारण सामुद्रिकशास्त्र पर से भी लोगोंका विश्वास उठता जा रहा है क्योंकि इस प्रश्नका उत्तर "कि हाथकी अमुक रेखा क्यों एक विशेष शारीरिक अवस्था या अन्य घटना प्रतीत करती है ?" नहीं मिलता, और इसका उत्तर न मिलने पर इस शास्त्रको ही कृत्रिम शास्त्र मान लिया जाता है, परन्तु वास्तवमें ऐसी बात नहीं है, इसके लिए St. German सैंट जर्मनने अपने अनुसंधान द्वारा बताया है कि वातावरणसे कुछ अणु मनुष्यके शरीरमें प्रवेश करते हैं और अपने चिन्ह हाथों पर छोड़कर मस्तकमें पहुंच जाते हैं, उसके वास्तविक शब्द निम्न लिखित हैं

"A vital fluid which permeats the external world & which panetrates man's body leaving its mark on the palm runs up to the brain"

Dr. Messiner डा० मैसीनर ने १८५३ ई० में अपनी Corpuscls Theory कारपुसल थिओरीको संसारके सामने रखा था, उसके सिद्धान्तके अनुसार Corpuscls अर्थात् अणु हाथमें एक विशेष रूपसे फैले हुए हैं; यह अणु लाल रंगकी रेखाओंमें अधिक पाए जाते हैं और पृथक-पृथक् रेखाओं पर इनका निवास स्थान रहता है। इनके कारण रेखाओंमें एक प्रकारकी Vibrations गति होती रहती है और उस गतिका घटना बढ़ना प्रत्येक व्यक्तिके लिए अलग-अलग होता है, और जीवनकी घटनाओंसे शरीरके अंगों पर जो प्रभाव पड़ता है या पड़ने वाला होता है उनके अनुसार यह गति घटती बढ़ती रहती है इन अणुओंकी गतिविधिकी ध्वनि सुनी भी जा सकती है, परन्तु साधारण मनुष्य इसको सुन नहीं पाता, पैरिसमें एक ऐसा व्यक्ति था जो कि जन्मसे अंधा था परन्तु उसकी सुननेकी शक्ति बहुत ही तीव्र थी और वह प्रत्येक मनुष्यके अणुओंकी गति (हरकत) को सुनकर पहचान लेता था और केवल सुनकर ही यह बता देता था कि किसी अमुक व्यक्तिको कोई रोग है या वह स्वस्थ है और यदि कोई रोग है तो वह कब अच्छा होगा।

Corpuscls अर्थात् अणुके सम्बन्धमें नये नये आविष्कार होते गए, १८७४ ई० में Sir charles Bell चारलस बैलने यह सिद्ध किया कि प्रत्येक नाड़ी (Nerve) के अन्त पर एक एक पुसल होता है, इसने यह भी सिद्ध किया कि मस्तिष्कका प्रत्येक भाग हाथकी रेखाओंसे सम्बन्ध रखता है और विशेषकर अंगुलियोंके अगले भागसे अर्थात् पौरोंसे प्रत्येक मनुष्यका मस्तक भिन्न-भिन्न प्रकारका होता है और इस प्रकार प्रत्येक व्यक्तिके पौरे अलग-अलग बनावटके होते हैं। इसी सिद्धान्तके आधार पर सब देशोंकी पुलिस अपराधियोंकी अंगुलियों और अंगूठेके चिन्ह (निशानि) लेती है और साहूकार लोग भी जो रुपया उधार देते हैं, वह हस्ताक्षरकी अपेक्षा अंगूठा लगाना अधिक अच्छा समझते हैं Physiojanomy अर्थात् मनुष्यके मुंखके चिन्ह देखकर और बनावटका निरीक्षण करके उसके विषयमें कुछ बतानेकी विद्याको तो संसारका शिक्षित समाज सच्चा मानता ही है। इस विद्या

के प्रसिद्ध पंडित Sir Thomes Browne सर टामस ब्राऊनने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'Religis Medice' रीलीजो मैडीसी में लिखा है—

Now there are besides there characters in our faces certain mystical figures in our hand, which I dare not call mere dashes or stroks at random because deti neated by a pencil that never works in vains and have I take more particular notice because I carry that in mine own hand which I could never read nor discover in another "

Sir Thomes Browne

अर्थात् मुखके इन चिन्होंके अतिरिक्त हमारे हाथमें कुछ रहस्यमय चिन्ह हैं जिनको मैं व्यर्थके चिन्ह कहनेका साहस नहीं कर सकता, क्योंकि वे भगवान्‌के लिखे हुए हैं और उसकी लेखनी व्यर्थ कुछ नहीं लिखती, इसका अधिक महत्व इस कारण है कि जो कुछ मैं अपने हाथमें देखता हूँ वह किसी दूसरे हाथमें नहीं देख पाता।

Klma जो कि मनुष्यकी अंग विद्यापर अनुसंधान करते रहे—उन्होंने जो सिद्धान्त बनाए हैं, संक्षेपमें उनके शब्द ये हैं—The lines upon the hands and feet of men are the immediate result of nervous reflex action. Under the skin of the palms of hand and soles of the feet there are millions of tingy eyes which are Connected to the brain..."

अर्थात् रेखाएं नाड़ियोंके प्रभावसे बनती हैं, इन पर लाखों नाड़ियोंके समाप्तिके चिन्ह होते है और इनका सम्बन्ध मस्तिष्कसे होता है।

वह हाथको Brain Indicater ब्रेन इन्डीकेटरके नामसे पुकारता है, अर्थात् मस्तिष्ककी बातें बताने वाला इसके अतिरिक्त नाखून आदिका वर्णन जो कुछ इस शास्त्र में दिया गया है और रोग आदिके सम्बन्धमें लिखा गया है—वही बात आधुनिक कालके डाक्टर बताते हैं और सब अंगोंके विषयमें जो कुछ इस शास्त्रमें लिखा है वही Morphology Science मौरफोलोजी साइन्समें सिद्ध हुआ है।

इतने प्रमाण होते हुए भी संसारमें ऐसे लोग हैं जो इसको पाखण्ड समझते हैं और यहाँ तक कि पाकिस्तान सरकारने इस पर प्रतिबन्ध लगा दिया है—यह वही कदम है जो इंग्लैंडने उस समय उठाया था जब कि वह अशिक्षित और असभ्य बराबर समझा जाता था इंगलैंडमें भी Anti Palmisty Law हस्तरेखा विरोधी बिल पास हुआ था।

(Count-Hamon 'Cheirro') काउण्ट हैमन 'चीरो' ने ठीक लिखा है कि "Provrdence places many posts and warnings in our paths but human nature is either too blind or too self confident to notice them until it is too late.

अर्थात् ईश्वरने हमको सावधान करनेके लिए बहुतसे यत्न हमारे मार्गमें रखे हैं परन्तु मनुष्य या तो इतना अंधा है कि उनको देख नहीं पाता या उसको अपने आत्मविश्वास पर इतना गौरव है कि उनको देखनेकी चेष्टा नहीं करता यहाँ तक कि अवकाश हाथसे निकल जाता है।

ब्रह्मचर्य ही जीवन है

* * *

१—ब्रह्मचर्यका मार्ग स्वर्गका मार्ग है और स्वर्गका राज्य केवल ब्रह्मचारियोंके लिये ही है। इसके द्वार पर प्रदीप्त अक्षरोंमें लिखा हुआ है। जो शक्तिहीन है वे भीतर न आवें"

—टी० एल० वास्वानी

गृहस्थ अधीर क्यों ?

ले०—राजवैद्य श्री पं० अमरदत्तजी मिश्र, एल० एम० ए० एण्ड एम० डी० एच०

संसारमें मनुष्योंको जीवन व्यतीत करनेके लिये चार आश्रम बनाये हैं। ब्रह्मचर्याश्रम गृहस्थाश्रम और वानप्रस्थाश्रम। ब्रह्मचर्याश्रममें रहा विद्याध्ययन करके मनुष्य योग्य बन जावे, पुनः गृहस्थाश्रममें प्रवेश करे तत्र गृहस्थाश्रमका द्वार पाणीग्रहण संस्कार है। उत्तम और गुणवान पत्निके सुयोगसे प्रत्येक गृहस्थीका गृहस्थधर्म सानन्द कहा जायगा। किन्तु पतिपत्नियोंके बीच यदि सन्तान है तो वह घर या गृहस्थी अपनेको सौभाग्यशाली मानता हुआ अपने गृहस्थधर्मको व्यतीत करेगा। अन्यथा वह उस गृहस्थधर्ममें अधीर ही रहता है। क्योंकि उसके सामने यह उपदेश सदा उसे बिना संततिके बाधता है—यथा "अपुत्रस्य गतिर्नास्ति" अंग्रेजीमें कहा है कि Without children a home is designated as a burial ground or samsana or cementry "No heaven or moksha" इस प्रकार गृहस्थ बिना संततिके अधीर है—क्योंकि पुं नाम नरकात् त्रायते- इति पुत्रः और, "त्रयाते इति पुत्रीः" अतः अब पाठकोंकी सेवा में संतान उत्पन्न होनेमें जो प्रधान बाधककारण हैं और उनके प्रतिकारके आयुर्वेद शास्त्रानुसार विवेचन किये जायेंगे। पाठक इससे लाभ उठावें। पुरुषोंमें वीर्य और स्त्रियोंमें रज ये दोनों संतानोत्पत्तिके मूल हैं यदि ये दोनों विशुद्ध और निर्विकार हैं तो संतान अवश्य होती है।

विशुद्ध शुक्र (वीर्य) के लक्षण—

"स्फटिकाभं द्रवं स्निग्धं मधुरं मधुगन्धिच।
शुक्रमिच्छान्ति केचित्तु तैलक्षौद्र निभंवरम्॥

विशुद्ध रजके लक्षण—

खरगोश के रक्तके समान लाल, और लाखके रसके समान वर्णवाला जो पांचवे दिन शांत हो जाय वेदना दाह रहित हो वस्त्र पर दाग धोने पर हट जाय वह आर्तव शुद्ध होता है स्त्रियोंमें होने वाली व्याधियोंमें जिन कारणोंसे संतान नहीं होती है उनमें अनियमित मासिक धर्म, प्रदर और बीस प्रकारके योनि रोग हैं। इनमें बन्ध्या रोग भी आ गया है- वैसे तो इसका विवेचन एक एक स्वसंत्र ग्रन्थ में भी सम्यक नहीं किया जा सकता। यह पर्याप्त लम्बा चौड़ा विषय है, परन्तु यहाँ प्रधान करणोंका संक्षेपमें विवेचन करते हुए लेखमें संतानोत्पत्तिके सहायक साधनोंका सामयिक वर्णन करनेका भरसक प्रयास किया गया है। जिनके निम्न लक्षण विद्यमान हैं। उसके लिए प्रयास करना निष्फल है। जिस स्त्रीके निम्न लक्षण विद्यमान हों उसे कृत्रिम बांझ समझें (१) गर्भाशयमें वायुका भरजाना (२) मेद और मांस बढ़ जानेसे गर्भ स्थिति नहीं होती (३) पेड़ू Protest भागमें एक प्रकारके कृमि हो जाने पर (४) गर्भ धारक तंतुओंमें शीतलता या उष्मा से शिथिलता आगई हो (५) आसात्म अग्निसे गर्भाशायमें उष्माका बढ़जाने पर (६) गर्भाशय अपने स्थानसे हट जाने पर (७) प्रदरादि घोर व्याधियोंके होनेसे (८) अधिक व्यायामसे गर्भाशय शिथिल हो जानेसे इन ८ लक्षणों के अतिरिक्त ऋतुधर्म के बाधक निम्नचार कारण भी संतान उत्पन्न होनेमें बाधक हैं। १. भास्कर, २. रक्तमात्रा, ३. षष्ठी ४. जनकुमार

(१) भास्कर—में देह भारी होती है नाभी प्रदेशके अधः शूल एवं उपरिभाग (Protest) में भी शूल होता है, रक्त प्रभाव अधिक होता है—ऐसी स्त्रियोंको ऋतुधर्म २-३ मास तक रुक २ कर आता है। शरीर सूख कर कृश हो जाता है यकृत तिल्ली आदिर रक्त पोषक अंग और पाचक अंग अपने २ कार्य अनियमित रूपसे करने लगते हैं, जिससे अग्निमाँद्य होकर शरीर व्यधि सा बना रहता है।

(२) रक्तमात्रा—इसमें प्रारम्भमें कटिमें कटिके नीचे दोनों पार्श्वोंमें, स्तनोंमें, जंघाओंमें स्फोटन्वत् पीडा और

शूल होता है। इस रोगसे रुग्णा लगातार दो मास तक रजस्वला नहीं होती है।

(३) षष्ठी—इसमें सारे शरीरमें दाह, योनीमें भी दाह, नेत्रोंमें हाथ पैरके तलवोंपर जलन तथा शरीरमें संताप आदि लक्षण होते हैं, इसमें रजोधर्म दो समय एक मासमें होता है।

(४) जनकुमार—में शूल, रक्तस्राव, अल्प मात्रामें होता है सदा शरीरमें दाह बेचैनी आदि रहती है, ऐसी स्त्रियों को गर्भ रह भी जाय तो ४-५ माह बाद गिर जाता है, फिर अन्य उपद्रव शाँत हो जाते हैं।

ये बांझपनकी चिकित्साके खास रोग हैं, वैसे तो यह बड़ा विस्तृत विषय है जो एक स्वतंत्रपुस्तकमें भी पूरा नहीं हो सकता।

स्त्रियोंकी भांति पुरुषोंमें भी २० प्रकारके प्रमेह ५ और ७ प्रकारकी नपुंसकता होती है, यही संतान न उत्पन्न होनेके कारण हैं, यदि स्त्री स्वस्थ है तो।

प्रमेहके कारण—

अधिक लिखने वालोंको, अधिक बैठे रहने वालोंको अधिक दहीके पदार्थोंका सेवन करनेसे, ग्राम्य जीवों एवं जलजीवोंका माँस खानेसे, अधिक दुग्ध का सेवन करने वालोंको जो परिश्रम शील न हों, नवीन अन्न और नवीन पान-गुड़ राव और कफ करने वाले सब पदार्थ प्रमेहकारी हैं। कफ अधिक बढ़ कर मूत्राशयमें रहने वाले मेद माँस क्लेद इन सबको दूषित करके प्रमेह को उत्पन्न कर देता है। कफसे १० प्रकारके पित्तसे ३ प्रकार के और वायुसे ४ प्रकार के प्रमेह उत्पन्न होते हैं।

नपुंसकता और उसके भेद कारण सहित

(१) अति व्यायामसे मनुष्यकी इन्द्री नीचे झुक जाती बिना इच्छा पर मैथुन करनेसे भी नपुंसकता आ जाती है, क्योंकि बिना इच्छासे करने पर मनमें अवसाद उत्पन्न होकर स्नायुमण्डल पर आघात पहुंचाता है। अधिक दिन तक संभोग न करनेसे भी नपुंसकता आ जाती है। यदि वीर्यपात हो जाय तो उसे मानसिक नपुंसिकता आ जाती है क्योंकि लज्जासे मन पर आघात पहुँचता है उस आघात से स्नायुमण्डल निर्बल होकर इन्द्री में चेतनाकी शक्तिको बंद कर देता है। इसे मानसिक नपुंसकता कहते हैं।

(२) पित्तज नपुंसकता—अत्यन्त तीक्ष्ण खट्टे, गरम खारी पदार्थोंका विशेष सेवन करनेसे पित्त बढ़कर वीर्यका स्राव अधिक हो जानेसे नपुंसकता आजाती है।

(३) वीर्यवहन करने वाली नसोंके छिद जानेसे भी नपुंसकता आजाती है।

(४) जो मनुष्य अधिक क्षीण होजाने पर भी वाजीकरण वीर्यवर्धक पदार्थोंका सेवन नहीं करते इस कारण उनकी कामेन्द्रियमें शिथिलता आजाती है–इसे वीर्यक्षय जन्य क्लीवता कहते हैं, इसे ध्वज भंग भी कहते हैं।

(५) शिश्नमें किसी रोगके कारण अथवा गुदामैथुन तथा हस्थमैथुन आदिसे इन्द्री टेढ़ी कृश हो जाती है और रक्त बहन करने वाले स्त्रोतोंमें पानी भर जाता है जिससे इन्द्रीमें क्षणिक उत्तेजना आकर इन्द्री शिथिल हो जाती है।

(६) अधिक दिनों तक ब्रह्मचारी रहनेसे भी इन्द्रियां अपने विषयको भूल सी जाती हैं जिससे भी नपुंसकता आजाती है इसे शुक्रस्तम्भजन्य क्लीवता कहते हैं।

(७) सातवीं नपुंसकता जन्मजात नपुंसकताको कहा है, ऐसे पुरुष वीर्य रहित होते हैं। यह सर्वथा असाध्य है, और शेष ६ साध्य हैं।

अब स्त्री और पुरुषके उत्पादक अंगोंकी चिकित्सा कहते हैं, वैसे तो चिकित्साका विषय बहुत लम्बा है किन्तु यहाँ विशेष अनूभूत प्रयोगोंका ही विवेचन किया जायगा जिससे प्रयोग करने वालों को वृथा ही झंझट में न पड़ना पड़े। यदि कोई नं० २ और ५ का रोगी है तो उसे लगातार दो मास तक औषधिका प्रयोग करना चाहिये अन्यथा पूर्व लाभ नहीं होगा। सर्वप्रथम स्त्रियोंके लिए चिकित्सा लिखते हैं।

स्त्री रोगों की अनूभूत औषधि

पीपल, बबूल बोरड़ीबेरी टाइली इन चारों वृक्षों की अंतरछाल समान भाग ले १६ गुना जल डालकर मध्यम अग्नि देवें, जब जल चतुर्थांश रह जावे तब उतार कर शीतल होने पर छान लेवें। इसे बारीक कपड़ेसे बांध धूपमें रखकर जलको सुखा देवें और घनभाग लेलेवें या फिर मंद मंद अग्नि पर इसे पका लेई जैसी हो जाय तब उतार लेवें और निम्न औषधियोंका कपड़छन चूर्ण इसमें मिला देवें तवाखीर, जायफल, सुपारी दक्षिणी, माजूफल, छोटी हर्र छोटे एलाबीज, जावत्री, नागकेशर, केशर इनका बारीक चूर्ण मिलाकर (ऊपर वाली में) झड़ बेरके समान गोलियाँ बना लेवें। मात्रा २-२ गोली प्रातः सायं एक रंग वाली बच्छड़े वाली गायके दुग्ध साथ लेवें। दो तीन मास तक सेवन करें इससे बाँझपन कष्टार्तव नष्टार्तव प्रदर कमजोरी आदि सारी बीमारियाँ मिट जाती हैं प्रयोग अनूभूत है।

पुरुषोंके प्रमेह आदि रोगों पर अनूभूत प्रयोग

आमलकी रसायन ६ माशा मिश्री ६ माशा बंगभस्म २ रत्ती, रौप्य भस्म १ रत्ती, ये सब एक मात्रा है। ऐसी २ मात्रायें दिन में २ बार लेवें, ऊपर से मिश्री मिला गायका दूध गरम करके शीत किया गया हो सेवन करें। लगातार १-२ मास तक इस प्रयोगको चालू रखें। अवश्य ही समस्त प्रमेह शीघ्रपतन वीर्यका पतलापन, स्वप्नदोष आदि रोग नष्ट होंगे। अनूभूत शास्त्रीय औषधि है।

हस्तमैथुन या गुदामैथुनजन्य नपुंसकता पर अनूभूत प्रयोग—सूअरकी चर्बी केशर कस्तूरी बीरबहूटीके केचवादिका मिश्रण सीवनसुपारी छोड़कर करें ऊपर नागरबेलका पान बाँधें खानेको प्रातः सायं मिश्री मिले दुग्धके साथ सुवर्ण भस्म रजत भस्म बंग भस्म केशर कस्तूरी प्रत्येक को मात्रानुसार लेकर कौंचके बीजोंके चूर्ण के साथ दुग्धके साथ लेवें या शहदके साथ। ब्रह्मचर्यसे रहें। खट्टे. चरपरे तीक्ष्ण पदार्थोंसे बचें, अवश्य लाभ होगा। प्रयोग शास्त्रीय और अनूभूत है शंका हो तो पत्रद्वारा निर्णय कर लेवें प्रयोग कालमें शीतल जलसे स्नान करना सर्वथा त्याज्य है। इस प्रयोगको १०दिन सेवन करें शर्तिया लाभ होगा। अनूभूत है।

कर्म-करो

कर्म ही प्रिय है सदा उस नाथ को; कर्म ही करना उचित है हाथ को।
कर्म ही में सृष्टि का आवास है, दैव भी तो कर्म ही का दास है।
सत्य है संसार यह सपना नहीं, कल्पना कवि की नहीं,, छलना नहीं।
जागते हैं सूर्य, शशि, सब देवगण, कब कहाँ विश्राम पाते एक क्षण।
सो नहीं विपरीत 'विधि, हो जायगा; और तू विद्रोह में खो जायगा।

१—युवकोंके जीवनमें सबसे कड़ी और न तोड़े जाने वाली शर्त यह होनी चाहिए कि वे अन्दर और बाहरसे पवित्र रहें। उनके जीवनके समस्त कार्योंमें शुचिता हो अर्थात् वे ब्रह्मचर्य का पालन करें।



त्रैमासिक भविष्य प्रकाश

ले०—श्री पं० गङ्गाप्रसादजी ज्योतिषाचार्य

सट्टे के वायदाव्यापारी ध्यान दें कि दैनिक व्यापार चांदी, सोना, रुई, गुड़, सरसों इत्यादिमें दैनिक सफलता किस प्रकार मिलती है ? उसका उद्देश्य व्यापारी जनताके सामने रखता हूँ। जातक कारिकामें लिखा है "कलौ योगोद्भवं फलम्" इस वाक्यसे यह स्पष्ट होता है कि जब कलियुग आवेगा तब फलितका विकास योगोंसे उत्पन्न होगा योगके दो भेद हैं, ये दोनों अनायास धनप्राप्तिके स्तम्भ समझो। प्रथम योगका लक्षण पूर्वजन्मकी तपस्यासे भूमिगत द्रव्य, लाटरी, रेस, और व्यापारसे धनकी प्राप्ति होती है 'तपस्या' शब्दका अर्थ कलियुगमें सत्य व्यवहार, सन्तोष, परोपकार, दान, अतिथि सेवा, और अनायास धनप्राप्तिके लिए गुप्तदान, वचन प्रतिपालन, बालक अन्धे लूले लंगड़ों को, पक्षियोंको अन्नदान देना ही कलियुगमें 'तपस्या' मानी जाती है। इन्हीं कार्योंके करने वालोंके जन्मकालमें केन्द्र त्रिकोणमें शुभग्रह अपने आप आके उच्चमें स्थिर हो जाते हैं और हस्तमें शुभ रेखायें भासने लगती हैं, धनरेखा जन्मसे दीखने लगती है, ऐसे योग परायण व्यक्तिको अपने आप अनायास धन प्राप्त होता है। सट्टेका व्यापार बिना चाँसके फलीभूत हो जाता है ऐसे भाग्यवान् योग परायण व्यापारी बढ़ते-बढ़ते करोड़पति हो जाते हैं किन्तु समयके अनुसार योगका दूसरा भेद 'ग्रहयोग' भी है। शुभकाल तथा शुभ मुहूर्त काल, जिसका विवेचना हम व्यापार सिद्धि मीमांसा नामक लेखमें कर चुके हैं उसका सहारा लेना चाहिए। जैसे भाग्य कर्त्तव्यके आधीन है और पूर्वजन्म कालिक तपस्याके योगसे भाग्य बनता है तथा स्वोपार्जित इस जन्मके शुभ कर्मोंसे कर्त्तव्य बनता है, वैसे ही दोनों योगोंसे स्वोपार्जित अनायास धनकी प्राप्ति मनुष्योंको होती है। धन बिना मनुष्य जीवन निरर्थक दुःख रूपी माना है, इस लिए व्यापारी भाइयों, अच्छे व्यापारिक अनुभवी ज्यौतिषियोंसे अभीष्ट वस्तुके चांस लेकर मुहूर्त्त—दिशा—ग्राम वस्तुसे लाभ होनेका पूरा २ विचार विद्वानोंसे करा कर (मुहूर्त्त शिव रूप है) उनका आश्रय लेना 'कर्त्तव्य' समझ कर उद्योग करो, अवश्य वायदेके व्यापारसे धन मिलेगा। कहावत प्रसिद्ध है "सेवासे मेवा मिला करती है।" इस लिए किस समय किस मुहूर्त्तमें व्यापार करनेसे मोटी धन राशिका लाभ होगा इसका निर्णय साधारण विद्वान् नहीं करते। उत्तम गुरुजनोंकी तन मन धन तीनों प्रकारसे सेवा करो, इस कर्त्तव्यसे अवश्य भाग्यवान् ऐश्वर्य युक्त हो जाओगे। हमारा कहा सत्य समझो। हमने बड़े परिश्रमसे व्यापारमें पूर्णसिद्धि दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, वार्षिक अवधिके अन्तर किस किसको किस प्रकारसे होगी इसका ज्यौतिष द्वारा खोज पूर्ण अनुभव किया है। हमारे कितने ही सेवक साधारण स्थिति वाले आज लखपति हैं। पाठक चाहेंगे तो अगले अङ्कमें किस जन्मकुण्डलीसे किस ग्रहके द्वारा किस कार्यसे अनायास धन प्राप्त हुआ है उसका विवेचन आपके सामने रखेंगे।

तीन मासका दैनिक रुख—चांदी, सोना, रुई, गुड़, सरसों फीचर

अक्टूबर १९४९ ई०

ता० १ श० चांदी सोनेका दोतरफा बाजार रहेगा पहिले बेच कर खरीदो।
" २ इ० प्राईवेटमें रुख स्टेडी मजबूत रहेगा। रुई, गुड़, सरसों खरीदो।
" ३ सो० मन्दीकी हवामें दो बजे तक खरीद करके श्यामको नफा लो और बेचो।
" ४ मं० बैंक नीति मन्दीकी और ग्रहयोग तेजीकी ओर—रुख मिला कर काम करो।
" ५ बु० दो बजे तक तेजी आकर बाजार मन्दा रहेगा, अगला वायदा डबल बेचो।

,, ६ गु० रियेक्शन तेजीका नफा पेश करेगा, अरण्डा, सींगदाना, बेचो सोना खरीदो ।
,, ७ शु० ता० ४ की खरीद आज नफा देकर ४ बजे बाद बेचना मत भूलो ।
,, ८ श० तेजीके रियेक्शनसे डरना नहीं बेचो रुई खरीदो, लाभ होगा ।
,, ६ इ० प्राईवेटमें दोतरफा बाजार सम पड़ेगा ।
,, १० सो० बैंक नीति दो तीन टके घटा देगी, ग्रहयोगसे तीन बजेसे तेजी ।
,, ११ मं० वेस्ट मन्दीमें चांदी, सोना, गुड़, सरसों खरीदो फीचर ३।५।७ लगावो ।
,, १२ बु० दोतरफा बाजार २॥ बजे तेजी लाकर शामको उतर जायगा ।
,, १३ गु० मन्दीका योग २) घटने पर डबल खरीदो, १२ घण्टेमें २॥ बढ़ जायगा ।
,, १४ शु० तेजीका भड़का, सब दिसावर तेजीमें होंगे, रुई तेज फीचर ४ लगावो ।
,, १५ श० ऊंचे भावोंमें बेच कर, नफा लेकर डबल बेचो, रङ्ग आ जायगा ।
,, १६ इ० प्राईवेटमें तेजी देखो तो और बेचो—अरण्डा, तारामीरा, कालीमिर्चें खरीदो ।
,, १७ सो० मन्दी दो बजे तक—बादको तेजी पेतेमें आ जावो ।
,, १८ मं० बैंक नीति मन्दी लावेगी, घटे भाव खरीदो ।
,, १६ बु० माथे पोते बराबर करके नया व्यापार करो ।
,, २० गु० वेस्ट मन्दीमें चाँदी-सोना, रुईकी खरीद नफा देगी ।
,, २१ शु० गुड़, चांदी शेयरोंके भाव गिरेंगे बेचा न करो ।
,, २२ श० मंदीकी चाल दिन भर रहेगी, बेच कर खरीदो ।
,, २३ इ० प्राईवेटमें नफा छोड़ो नहीं चांदी, सोना, रुई खरीदो ।
,, २४ सो० तेजीका योग ३ बजे तक बादमें मन्दी माथे रख कर मत सोओ ।
,, २५ मं० खरीदना बेचना दोनों सुबह खरीदो शामको बेचो ।
,, २६ बु० ढाई बजे तेजीके रियेक्शनमें अगला वायदा बेचो ।
,, २७ गु० मन्दीका योग ४ बजे तक नफा लेकर खरीदकी लाईन पकड़ो ।
,, २८ शु० तेजीका सुदृढ़ योग—चांदी, सोना, रुईमें होगा खरीदो ।
,, २६ श० दो बजे बाद नफा लेकर बेचो, गुड़, सरसों बेचो ।
,, ३० इ० प्राईवेटमें रुख, स्टेडी, मन्दा रुख मिला कर व्यापार करो ।
,, ६१ सो० बैङ्क नीति मन्दा लावेगी, किन्तु अधिक न गिरेगा घटे भाव खरीदो ।

नवम्बर १६४६ ई०

,, १ मं० तेजीका योग मन्दीमें खरीदो तेजीमें बेचो लाभ हो जायगा ।
,, २ बु० ढाई बजे कट तेजीकी होगी, बादको मन्दी, खरीदा हुआ वापिस लो ।
,, ३ गु० नीचाईमें चाँदी मन्दी होगी—घटे भाव २॥ बजे खरीदो ।
,, ४ शु० तेजीका योग दिन भर रहेगा, खबरों पर रातको मन्दा ।
,, ५ श० आजका बेचान ३॥ दिनमें अच्छा मुनाफा करा देगा ।
,, ६ इ० प्राइवेटमें मन्दीकी हवा चारों तरफ होगी ।
,, ७ सो० बैङ्क नीति नीचे भावोंमें थम जायगी बाजारोंमें तेजी होगी ।
,, ८ मं० चढ़े हुए भावोंमें नफा लो और घटे सोई पोते करते जावो ।

,, ९ बु० बराबर २॥ बजेका बाजार देखो।
,, १० गु० मन्दीका ऐलान तेजीका काम करनेके लिए पर्याप्त होगा।
,, ११ शु० तेजीका योग बराबर, ४ बजे तक रहेगा रातको मन्दी।
,, १२ श० तिलहनोंके बाजारमें मन्दी आवे तो पोते करना ठीक है।
,, १३ इ० प्राइवेटमें जंचे तो बेचना ही चांस समझो।
,, १४ सो० बैङ्क नीति एकबार चांदी सोने पर मन्दा दिखा देगी।
,, १५ मं० मन्दी टिकना साधारण बात नही है, घटे तो खरीदो।
,, १६ बु० ढाई बजे तक २) बढ़ जाएंगे, बदला तारुणीका लो।
,, १७ गु० चढ़े भावों खुलते बेचो, शाम तक मन्दी आ जायगी।
,, १८ शु० बाजार खुलते चांदी सोना खरीदो, नफा सामने होगा।
,, १९ श० चार बजे तक तेजी रह कर रातको १) घट जायगा।
,, २० इ० प्राइवेटमें बराबर, पुराना कारोबार बराबर कर लो।
,, २१ सो० दो बजे मन्दीके रियेक्शनमें चांदी-सोना, रुई खरीदो।
,, २२ मं० तेजीका योग ढाई तक रहेगा नफा लो और बेचो।
,, २३ बु० मन्दी अचानक आयेगी, बेचो २ बजेके पहिले।
,, २४ गु० मन्दीका रियेक्शन बराबर ४ बजे तक खरीदमें आ जावो।
,, २५ शु० तेजी फिरसे चमकेगी नफा ऊंचे भावोंमें छोड़ो नहीं।
,, २६ श० बराबर अपने रुखको बाजारसे मिला कर काम करो।
,, २७ इ० रुख स्टेडी मजबूत
,, २८ सो० खुलते बाजार चांदी सोना खरीदो बैङ्क नीति ध्यान रखो।
,, २९ मं० नफा लेकर ४ बजे डबल बेचो।
,, ३० बु० मन्दीका जोरदार योग २) घट कर तेजी लावेगा।

दिसम्बर १९४९ ई०

,, १ गु० दो बजे तक मन्दी बादमें तेज घटे भाव खरीदो।
,, २ शु० तेजीके रियेक्शनमें नफा लेकर बेचो।
,, ३ श० आजके योग मन्दी कारक हैं, सुबह बेचो श्यामको लाभ।
,, ४ इ० प्राईवेटमें रुख स्टेडी (मजबूत)
,, ५ सो० बारह बजे बाद चांदी सोना रुई गुड़ सरसों खरीदो।
,, ६ मं० तेजीका भड़का बराबर नफा लेते जावें।
,, ७ बु० दो बजे तक रियेक्शन मन्दी डबल बेचो।
,, ८ गु० मन्दीकी हवा बराबर श्याम तक रहेगी नफा लो।
,, ९ शु० खुलते बाजार चांदी खरीदो, और रुई बेचो।
,, १० श० ढाई बजे नफा लेकर बेचो।
,, ११ इ० प्राईवेटमें रुख नरम।
,, १२ सो० एक बजे तक चांदी, सोना, रुई खरीदो तेजीका योग।

,, १३ मं० बैंक नीति एकदम गिरा देगी नफा लेकर डबल बेचो।
,, १४ बु० दो तरफा बाजारमें ऊंचे भावमें बेचो।
,, १५ गु० मन्दीका तहलका ४ बजे तक, घटे भाव खरीद जारी करो।
,, १६ शु० तेजीका रियेक्शनमें नफा लेकर बेचो।
,, १७ श० मन्दीका योग १।) तक घरका बाजार बढ़ेगा।
,, १८ इ० प्राइवेटमें ऊंचे भावोंमें बेचो।
,, १६ सो० बैंक नीतिसे घोर मन्दी, १२ बजेसे बेचो शामको लाभ।
,, २० मं० रियेक्शन तेजीमें फिर बेचो नफा होगा।
,, २१ बु० ढाई बजेका तार मिलावो।
,, २२ गु० चांदी, सोना, रुई घटे भाव खरीदो।
,, २३ शु० तेजीका योग पहिले खरीदो फिर बेचो।
,, २४ श० दो तरफा बाजारसे रुख मिला कर काम करो।
,, २५ इ० प्राइवेटमें मन्दी।
,, २६ सो० मन्दी आकर दो बजे तक फिर तेजी आयेगी।
,, २७ मं० तेजीमें नफा लो और बेचो।
,, २८ बु० दो बजे तक पोते हो जावो, तेजी आयेगी।

नोटः—आश्विन शु० १० से पौष सुदि १० तक (ता० ७ अक्टूबरसे २८ दिसम्बर तक) के समयमें रिजर्व बैंक आफ इण्डिया बम्बईमें जो आजकल चाँदीका बेचान खरीद चल रही है उसका ध्यान रख कर यहां दैनिक तेजी-मन्दी में प्रकाश डाला है अर्थात् नवग्रहोंकी कौंसिलमें देशमें ग्रहकी रायका जजमेण्ट शामिल किया है, व्यापारी जनता ध्यान दे बैंक नीतिसे वा ग्रहयोगोंसे ता० ७ अक्टूबरसे २८ दिसम्बर तक चांदी सोनेमें आंकडोंकी सीमा अर्थात् हदबन्दी से पता चलता है कि मोटी घट-बढ़ चलने वाली है, चांदी १७४), सोना ११८), ऊंचाईकी सीमा, नीचाईकी सीमा, चाँदी १३८) सोना १०२ के अन्तर्गत सर्पमुखी चालसे चढ़ाव उतार करेंगी कभी सम, कभी १०) या ११) टकेकी मन्दी कभी १५) टकेकी तेजीके रियेक्शन होंगे। टेलीफोन वाले खबरों पर खरीद बेची करके कार्य करेंगे वे डबल हानिका अनुभव करेंगे। जो सर्पमुखी चालको ज्योतिषके द्वारा बनी लाइनको बैंक नीतिसे मिला कर व्यापार करेंगे तो इन तीन महीनोंमें अच्छी कमाई कर सकेंगे बाकी देखते रह जायेंगे।

—:::—

ब्रह्मचर्यका महत्त्व

१—ब्रह्मचर्यका अर्थ है सभी इन्द्रियों और विकारों पर पूर्ण अधिकार।

२—प्रकृतिने जो हमें गुह्य शक्ति प्रदानकी है उसे दबा कर अपने शरीरके अन्दर ही संग्रह करना चाहिए और उसका प्रयोग अपने आरोग्यकी वृद्धिमें करना चाहिये। यह आरोग्य केवल शरीरका ही नहीं बल्कि मन बुद्धि और स्मरण शक्तिका भी होता है।

३—ब्रह्मचर्यका अर्थ यह नहीं कि मैं अब स्त्रीका स्पर्श नहीं करूंगा। किन्तु इसका अर्थ यह है कि सुन्दरीसे सुन्दरी युवतीको स्पर्श करके भी आत्मसंयमसे रह सके।

—महात्मा गांधी

"चांदी सोनेके स्पेशल चांस"

(राजवैद्य श्री पं० अमरदत्त मिश्र एल. एम. ए. एण्ड एम. डी. एच. कोमरशीयल एडवाईजर)

पाठक वृन्द इस लेखकी सचाईकी परीक्षा करें इसमें ज्योतिषसिद्धान्तानुसार उन्ही योगोंका समावेश किया है, जिनमें विशेष परिवर्तन करनेकी शक्तिका शास्त्रादेश हैं। परीक्षा करें और लाभ उठावें। लेखकका अनुभव है कि वर्णित योगोंका फल चांदी सोने पर अवश्य ही देखा गया है योगायोगों सहित चांस निम्नानुसार हैं। हानि लाभका उत्तरदायित्व प्रयोक्ताओं पर ही होगा।

अक्टूबर १९४९

इस मासमें पांच शनिवार पांच ही रविवार और पांच ही सोमवार हैं—इस कारण इस मासमें चांदीमें तेजीका प्रभाव अवश्य ही रहेगा ता० २ को ६ से १ तकके समयमें चांदी सोनेमें तेजी आवेगी। फिर ता० ४ को भी तेजी ही आवेगी। ५ और ६ को बाजार स्टेडी रहेगा। इसी प्रकार ७ को भी स्टेडी रहेगा। यह स्टेडी टोन १० तक चलेगी फिर बाजारमें परिवर्तन होगा। फिर ता० १५ को चांदीमें मंदी आवेगी १० से २ बजे तकमें और फिर ता० १७ को बाजारमें तेजी आवेगी ५ से ६ तक, फिर बाजार स्टेडी रहेगा (जैसे ४ को तेजीका योग है उसी ४ को सूर्य नेपच्यूनकी समान क्रांति ६।२३ पर होती है यह सब चीजोंमें मंदी लानेवाला है फिर ता० १३ को भी सूर्य शनीकी क्राँति है यह भी चांदी सोनामें तेजी करेगी। शेष सबमें मंदा कारक है। ता० १५ को हर्शल और शुक्रकी भी समान क्रांति है यह चांदी सोनेमें विशेष घटा बढ़ी करेगी इसका प्रभाव १४ से १५ के ११ बजे रातको समाप्त होगा। ता० १७ के पश्चात् २० तक बाजार स्टेडीमें चलेगा और फिर २५ को अच्छी मंदी आकर तेजी आवेगी। फिर बाजार स्टेडी रहेगी यह सामान्यग्रहोंका फल है विशेष फलके लिये पत्र व्यवहार करें, ता० १० को बुधोदयसे चांदी मंदी होगी।

नवम्बर १९४९

इस मासमें पांच मंगल और ५ बुध वार हैं, इस कारण चांदीमें बढ़ा घटी चलेगी और बाजार मंदा ही रहेगा। मीठे पदार्थोंमें तेजी आवेगी और ता० १३ से १५ के बीच सब चीजोंमें तेजी आवेगी, बुध और चन्द्रका योग है इस कारण चाँदीमें तेजी नहीं आवेगी मंदी ही चलेगी प्रारम्भमें बाजार बना सा रहे किन्तु यदि ता० १ को तेजीका योग है सो १।५२ तक। फिर ता० ६ को मंदी अवश्य आवे ६।२२ तक, फिर बाजार तेजीमें बदल जावे। ता० १० को मंदी और तेजीके दोनों ही योग हैं ७॥ तक मंदी रहें तेजीका दिन भरका ही योग है, किंतु १० को शुक्र और हर्शलकी युति ६-११ पर होती है यह विशेष घटा बढ़ी करेगी ध्यान रहे। ११।१२ को बाजारमें परिवर्तन होगा, ११ को दोपहर बाद सूर्यास्तके पश्चात् २ घण्टे तकके समयमें चन्द्र गुरुकी दृष्टिमें आता है इस कारण चांदीका बाजार मंदा आवेगा, किंतु राशि चारसे १५के बाद बाजारमें तेजी आवेगी। ता० ८ को बुध पूर्वमें अस्त होता है इसके प्रभावसे चांदीमें बढ़ाघटी चलेगी और सोनामें तेजी आवेगी। चांदी भी बधाघटी करके तेजीमें परिवर्तन होगी। ता० १७ को चांदी सोनामें मंदी आवेगी। उसे ७ तकके समयमें फिर २२ को चांदी सोनामें तेजी। २० से २२ तकको खुलते बाजारसे पूर्व तक २४ को मंदीका योग है फिर २८ को तेजी आवेगी उसे ७ तकके समयमें ३० को भी तेजीका योग है—यह ग्रहोंके सामान्य योग हैं। विशेष योगोंके लिये पत्र व्यवहार करें।

दिसम्बर १९४९

दिसम्बर मास व्यापारी क्षेत्रके लिये एक महान् उपद्रवकारी है, इस मासमें पर्याप्त परिवर्तन होनेके ग्रहयोग हैं। व्यापारी वर्गको सतर्क होकर काम करना होगा, अन्यथा दरिद्रनारायणकी शरण लेनी होगी। प्रारम्भमें सब बाजारोंमें अच्छी मंदीका झोंका आवेगा, इस झोंकेमें कई मालदार बनेंगे और कई दीन। फिर बाजार धीरे २ उठेगा, ता०

६ तक तेजीमें ही चलेगा, ता० ३० नवम्बरसे बाजारमें परिवर्तन होना जारी हो जायगा और यह परिवर्तन मंदीमें ही होगा। ता० १ से ६ तक तेजी और मंदी दोनोंकी सरगर्मियां चलेंगी चांदी सोनेमें हर तेजीके बाद मंदीका झोंका अवश्य ही आवेगा। फिर ता० ११ से चांदी सोनामें और नरमी आजावेगी। ता १ से ६ तकका समय भी चांदी सोनेमें बड़ा मजेदार चलेगा—डोलरहींडेके समान मंदी और कुछ तेजीके झोंके लगातार आते रहेंगे। और ता० ७ को विशेषरूपसे आवेगा। ता० ५ को चांदी सोनामें अच्छी मंदी आवेगी, फिर ता० ६ को बाजार दोपहरसे पूर्व तेजीमें रहेगा उसके बाद फिर बाजारमें मंदी आवेगी। ता० १५ दिसम्बरके बाद बाजारकी टोन बदल जावेगी, किंतु वह ४।६ दिन ही चलेगी। बादमें फिर मंदीका झोंका आजावेगा। २१ दिसम्बरसे फिर मंदीका प्रभाव चांदी सोनेके बाजारमें होगा, ता० २७ तक रहेगा—ग्रहयोगोंके आधारसे जाना गया है कि इस मासमें चांदी सोनामें विशेष मंदीका वरतारा चलेगा। ता० २८।२६ और ३० दिसम्बरको बाजारमें तेजी आवेगी।

नोटः—इस मासमें चांदी सोनेमें १०।१५ की मन्दीके योग हैं।

गीतामय–आचरण

साहित्य साधनाका एक पुराना पथिक होकर निरन्तर मैं यही अनुभव करता आ रहा हूँ कि इस मार्गमें सत्य और सुन्दरके बीच पद पद पर विरोध है। संसारकी जिस घटनामें हम सत्य पाते हैं, वह हो सकता हैं साहित्य में सुन्दर न हो, और जो सुन्दर है वह साहित्यमें एक ही बार मिथ्या हो सकती है। जिसे सत्यके नामसे जानता हूँ, उसे मूर्तिमान् करने की चेष्टामें देखा है, या तो वीभत्स हो जाता है या कंदाचार एवं सत्यको छोड़कर भी सुन्दर का रूपदर्शन नहीं पाया। ठीक इसी प्रकार मंगल और अमंगल की बात भी।

पूछता हूँ सत्य यदि सुन्दरका परिपन्थी है, और कल्याण अकल्याण गौण, तो फिर साहित्यकी साधनामें इस समस्या का निदान क्या है ?

—शरत्चन्द्र

रुई चाँदी सोना गुड़ की घटाबढ़ी

व्यापारका अनुभूत भविष्य

(लेखक—श्री पं० कृष्णदत्त जी शर्मा ज्योतिषरत्न)

भारतीय ज्योतिः शास्त्र सर्वथा सत्य एवं प्रत्यक्ष शास्त्र है। इसका गणितविभाग जितना उपयोगी है उससे कहीं अधिक फलित विभाग है। जो मनुष्य इसे कपोल कल्पना कहकर इस चमत्कारी शास्त्रकी खिल्ली उड़ाते हैं वे आत्मवञ्चना करते हैं। हाँ कुछ ज्योतिषियोंके फलोंमें विभिन्नता देखकर ऐसी भ्रान्ति हो जाती है। उसके कई कारण विशेष हैं। बहुतसे ज्योतिषी महानुभाव प्राचीन-गणितके आधार पर ही फलितकी विवेचना करते हैं, तथा कई कर्ण पिशाचनियोंकी आराधनासे बतलाते हैं, जिसके कारण फलित ज्योतिःशास्त्रके प्रति भ्रान्ति उत्पन्न होती है। पर इसका सबसे सही मार्ग यह है कि सबके फलोंकी तुलनाकी जाय। जिसका जितने अंशोंमें सही उतरे उसका पाठकगण पत्रोंमें उल्लेख करते करवाते रहें, जिससे प्रथम लाभ ज्योतिषियोंको होगा कि विशेष विवेचनकी ओर ध्यान देंगे। द्वितीय लाभ पाठकोंको यह होगा कि उनकी भ्रान्ति निर्मूल होकर ज्योतिःशास्त्रके प्रति दृढ़ श्रद्धा स्थिर हो जायेगी, जिसके कारण बहुत अंशोंमें भारतीय ज्योतिः शास्त्रकी कालिमा धुलनी प्रारम्भ हो जायेगी। अस्तु। "श्रीस्वाध्याय" के इस नवम वर्षके शरदङ्क (नववर्षाङ्क) से मैं भी "व्यापारको अनुभूत भविष्य पाठकोंकी सेवामें भेजनेका साहस कर रहा हूँ, विज्ञपाठक परीक्षा कर अनुभव करें और साथ ही इसकी सूचना सम्पादक महोदय "श्री-स्वाध्यायको" दें जिससे मैं अपना परिश्रम सफल समझू॥

(१) सौर कार्तिकमास (तुला संक्रान्ति)

[१७ अक्टूबर से १५ नवम्बर तक]

यह मास स्वास्थ्यकी दृष्टिसे हानिकारक प्रतीत होता है, प्रजामें ज्वर विस्फोटक (शीतला) नेत्ररोग, अतिसार उदरविकार, रक्तविकार आदिके प्रकोपसे कष्ट होवे। पूर्व-देशों, अग्निकोणके प्रदेशों तथा दक्षिणके देशोंमें श्रेणि-संघर्ष अग्निकाण्ड सामूहिक गत्यवरोध प्रजामें वैमनस्य और कई प्रकारसे हानिकारक है। पश्चिमीय म्लेच्छदेशोंमें रोगादिका प्रकोप और कई प्रकारके उपद्रव होवें, तथा उत्तरीय भूभाग पर कई प्रकारकी हलचलें उत्पन्न होवें। राज्य वर्गके प्रति विशेष असंतोषकी भावना बढ़ेगी। हरिजनोंकी प्रति अधिक सहानुभूति प्रकट होगी तथा आर्य-विचारकों को साधुपुरुषोंको कई प्रकारकी उलझनें उत्पन्न होंगी और कष्ट होगा। चौपायों गाय, भैंस, घोड़ा, उष्ट्र आदिको कष्ट होवे। व्यापारीवर्गमें घबराहट उत्पन्न होवे। वायुकी अधिकता रहेगी। विशेषतया यह मास मिथुन; सिंह, तुला वृश्चिक, कुम्भ मीन राशिवालोंके लिये अनिष्ट सूचक है। मेष, वृष, कन्या, धन, मकर राशिवालोंके लिये किंचित् शुभ (सामान्य) है। कर्कराशि कर्कलग्नमें उत्पन्न व्यक्तियोंको आर्थिक सकट, राज्यभय, कुटुम्बके लोगों के कलह तथा स्त्री सम्बन्धी किसी चिन्तामें विशेष रूपसे से ग्रस्त होना पड़ेगा और साथ ही शारीरिक स्वास्थ्यकी ओरसे तथा किसी षड्यन्त्रकारीसे विशेष सतर्क रहनेका समय है। किसी बड़े नेताके लिये अनिष्टकारक समय है, सावधान।

व्यापार

अश्विन शुक्लपक्ष (सुदी) का दैनिक रुख

तिथी	वार	घटाबढी
१०	श०	चांदी, सोना, गुड़, रुई में तेजी।
१२	सो०	चांदी, सोना,गुड़ पहले मन्दे फिर तेज।
१३	मं०	चांदी, सोना, गुड़, रुई मन्दे।
१४	बु०	चांदी, सोना, गुड़, रुई मन्दे।
१५	गु०	चांदी, सोना, गुड़, रुई मन्दे।
१६	शु०	चांदी, सोना, गुड़, रुई तेज दिनके २ बजेके उपरान्त, चांदी, रुई मन्दी।

सारांश–आश्विन शुदीमें चांदीमें ५) सोना ३) रुईमें १५) गुड़में ॥) ।॥) एक उछाला पहले तेजी फिर झटका मन्दीका आवेगा। सावधानीसे व्यापारका समय है।

कार्तिक कृष्णपक्ष वदीका दैनिक रुख

तिथि	वार	तेजी मन्दी
१	श०	चांदी, सोना, गुड़, रुई पहले मन्दा फिर तेज
३	सो०	चांदी, सोना, गुड़, मन्दे रुई तेज
४	मं०	चांदी, सोना, गुड़ मन्दे रुई तेज।
५	बु०	चांदी, सोना, गुड़, रुई तेज।
६	गु०	चांदी, सोना, गुड़, रुई तेज।
७	शु०	चांदी, सोना, गुड़, रुई मन्दे।
८	श०	चांदी, सोना, गुड़, रुई तेज।
१०	सो०	चांदी, सोना, गुड़, रुईमें तेजी।
११	मं०	चांदी, सोना, गुड़, रुईमें मन्दा।
१२	बु०	चांदी, सोना, गुड़, रुईमें मन्दा।
१३	गु०	चांदी, सोना, गुड़, रुई पहिले मन्दे फिर तेज
१४	शु०	चांदी, सोना, गुड़, रुई तेज।

सारांश चित्रमें सूर्य ३० मुहूर्त मकरमें गुरु ३० मुहूर्त पूर्वमें बुधोदय मार्गी बुध, तुलामें सूर्य १५ मुहूर्त ज्येष्ठामें शुक्र ३० मुहूर्त मघासिंहमें मंगल ४५ मुहूर्त, सूर्यनेपच्यूनयुति, चन्द्रहर्शलयुति, चन्द्रमंगलयुति चन्द्र शनि युति बुधचन्द्र युति, अमावसका क्षय, कन्याका चन्द्रमा अस्त होनेके कारण पहिले चार दिन सोना, चांदी, गुड़ मंदे फिर सात दिन तेजीके फिर एक दिन मन्दा फिर दो दिन तेजीके रुई २५) चांदी ८) सोना ६) गुड़ १) की तेजी आवे।

कार्तिक शुक्लपक्ष शुदीका दैनिक रुख

तिथि	वार	घटा बढ़ी
१	श०	चांदी, सोना, गुड़, रुईमें तेजी।
३	सो०	चांदी, सोना, गुड़, रुईमें तेजी।
४	मं०	चांदी, सोना, गुड़, रुईमें अच्छी मंदी।
५	बु०	चांदी, सोना, गुड़, रुईमें मन्दी।
६	गु०	चांदी, सोना, गुड़, रुईमें मन्दी।
७	शु०	चांदी, सोना, गुड़, रुईमें मंदी।
८	श०	चांदी, सोना, गुड़, रुईमें तेजी।
१०	सो०	चांदी, सोना, गुड़, रुईका बाजार दुतर्फा।
११	मं०	चांदी, सोना, मन्दे गुड़ रुईमें तेजी।
१२	बु०	चांदी, सोना, गुड़ में मंदा रुई तेज।
१३	गु०	चांदी, सोना, गुड़ तेज रुईमें मन्दी।
१४	शु०	चांदी, सोना, रुई मन्दे गुड़ तेज।
१५	श०	चांदी, सोना, तेज, गुड़ रुई मंदे।

सारांश इस पक्षमें चन्द्र दर्शन ४५ मुहूर्त, स्वातिमें सूर्य ४५ मुहूर्त, चित्रामें बुध ३० मुहूर्त बुधास्तपूर्वमें, तुला में बुध ३० मुहूर्त, मूलानक्षत्र धनु राशिमें शुक्र १५ मुहूर्त पू० फा के चतुर्थ चरणमें शनि मुहूर्त, ३० स्वातिमें बुध ३० मुहूर्त, चन्द्र शुक्र युति, चन्द्र गुरु युतिके कारण इस पक्ष में पहिले दो दिन तथा चौथ मंगलवारसे सप्तमी तक मंदा, फिर पक्षान्त तक तेजी, घटे भाव खरीदो।

सौर मार्गशीर्षमास वृश्चिक संक्रान्ति

ता० ६ नवम्बरसे १४ दिसम्बर तक

यह मास स्वास्थ्यकी दृष्टिसे उत्तम नहीं है। प्रजामें शीत ज्वर, पीनस वायु पित्त कफादि रोगोपद्रव व्यापें। दक्षिण देशोंमें अग्नि काण्ड, श्रेणी संघर्ष, परस्पर मतभेद अराजकता तथा कई प्रकारके उपद्रव हों। उत्तर तथा ईशानकोणमें कई प्रकारकी हलचलें, राज्यवर्गके प्रति असंतोष होवे। रक्त पात, लूटमार, मत भेद, आन्तरिक कलह, महामारी, गत्यवरोध उग्ररूप धारण करे। युद्धादि भय, अग्निकाण्ड, वायुप्रकोप, शीताधिक्य-हिमपात, और कहीं कहीं भूकम्प भी आवे। दिल्ली, द्वारका, बम्बई, उड़ीसा, आसाम, बङ्गाल, कृष्णा से लङ्का तथा कृष्णासे गोदावरीके मध्य प्रदेशोंमें तथा पूर्वी पञ्जाब काश्मीरके पश्चिमी पञ्जाब, अफगानिस्तान, तुरकी आदि यवन राज्यों में अनिष्टफल अधिक होगा और ब्रह्मदेशके लिये भी यह मास अनिष्ट सूचक ही है। राष्ट्रके किसी प्रमुख कर्णधार के लिये मासका उत्तरार्ध चिन्तासे खाली नहीं है। विशेषतया मेष, कर्क, कन्या वृश्चिक, धन, मीन राशि-वालोंके लिये कष्टकारक तथा हानिकारक है। वृष, मिथुन, तुला, मकर कुम्भके लिये सामान्य है। सिंह राशि सिंह लग्नमें उत्पन्न व्यक्तियोंके लिये विशेष हानिकारक है कई प्रकारकी पारिवारिक चिन्तायें और राज्यपक्षसे हानि-

कारक तथा अपघात योग है। हरिजनोके लिये संतोषवर्धक है। आर्य विचारकों, उत्तम जाति वालों भक्तजनों, साधु सन्यासियोंको और पांच वर्षके तथा आठ वर्षके बालकों को वृद्धावस्थाकी स्त्रियोंको कष्ट कारक है। चौपायों गाय, भैंस, घोड़ा बैल, आदिको कष्ट कारक तथा इनका मूल्य बढ़ जावे और मारवाड़ देशमें उपद्रव होवें।

मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष (वदी) का दैनिकरुख

तिथी	वार	घटावढी
२	सो०	चांदी, सोना, गुड़, रुई तेज होकर मन्दा।
२	मं०	चांदी, सोना, गुड़ रुई तेज।
३	बु०	चांदी, सोना, गुड़ रुई में मन्दी।
४	गु०	चांदी, सोना, गुड़ रुई में तेजी।
५	शु०	चांदी, सोना, गुड़ रुई मंदी।
६	श०	चांदी, सोना, रुई पहिले मंदे फिर तेज फिर मन्दे, गुड़ मंदा।
८	सो०	चांदी, सोना, गुड़ रुई मंदे।
९	मं०	चांदी, सोना, गुड़ रुई तेज।
११	बु०	चांदी, सोना, गुड़ रुईमें तेजी।
१२	गु०	चांदी, सोना, गुड़ रुईमें तेजी।
१३	शु०	चांदी, सोना, रुई गुड़ में तेजी।
१४	श०	चांदी, सोना, रुई गुड़में तेजी।

सारांश—इस पक्षमें पू० फा० पर मंगल ४५ मुहूर्त, विशाखामें बुध, पू० षा० में शुक्र ३० मुहूर्त, वृश्चिकमें सूर्य ४५ मुहूर्त, वृश्चिकमें बुध ३० मुहूर्त, अनुराधामें सूर्य १५ मुहूर्त, चन्द्र हर्शल युति, चन्द्र मंगल युति, चन्द्रशनियुति, चन्द्र नेपच्यून युतिके कारण प्रतिपदा १ से अष्टमी तक सोना, चांदी, गुड़, रुईमें मन्दा चलेगा। बीच बीचमें तेजी भी आवेगी हर तेजीके उछालेमें बेचनेसे लाभ होगा। **मंगलवार १० से दिन १५ में गुड़में १) से १।।) तक तेजीका अनुभव सिद्ध परीक्षित चांस है।** अष्टमी से हर घटे भाव चांदी सोना रुई खरीदो अमावस तक।

मार्गशीर्षशुक्लपक्ष (शुदी) का दैनिक रुख—

तिथि	वार	घटावढी
१	सो०	चांदी, सोना, गुड़, रुईमें मन्दा।
२	मं०	चांदी सोना, रुई, गुड़में तेजी।
४	बु०	चांदी, सोना, रुई, गुड़में मंदी।
५	गु०	चांदी, सोना, रुई, गुड़में मन्दी।
६	शु०	चांदी, सोना, रुई, गुड़में मंदी।
७	श०	चांदी, सोना, रुई, गुड़में तेजी।
८	सो०	चांदी, सोना, रुई, गुड़में दुतर्फा।
९	मं०	चांदी, सोना, रुई, गुड़में तेजी।
१०	बु०	चांदी, सोना, रुई, गुड़में तेजी।
११	गु०	चांदी, सोना, रुई गुड़में दुतर्फा।
१२	शु०	चांदी, सोना, रुई, गुड़में तेजी।
१३	श०	चांदी सोना, रुई, गुड़में पहले तेज फिरमंदा।
१५	सो०	चांदी, सोना, रुई, गुड़में पहिले तेज फिर मंदा।

सारांश—इस पक्षमें अनुराधामें बुध, ४५ मुहूत, सोमवारको चन्द्रदर्शन २५ मुहूत, उत्तराषाढ़ामें शुक्र ३० मुहूत, ज्येष्ठामें बुध मकरमें शुक्र ३० मुहूत, उत्तराफाल्गुनी में मंगल ४५ मुहूत, बुधचन्द्रयुति, सूर्यबुधयुति, शुक्र चन्द्रयुति, गुरुचन्द्र युति, मंगल शनि युतिके कारण पहिले दो दिन घट-बढ़, प्रतिपदाको मंदा, द्वितीयाको तेजी, फिर तीन दिन मंदा, सप्तमीशनिवारसे चांदी, सोना, रुई, गुड़में अच्छी तेजी आवेगी रुईमें २०) २५) चांदीमें ८) १०) सोनामें ३) ४) गुड़में ।।।) १) के मध्य तेजी हो।

सौर पौषमास (धनु संक्रान्ति)

[१५ दिसम्बरसे १३ जनवरी तक]

स्वास्थ्यकी दृष्टिसे यह साल साधारण रहेगा। प्रजामें आनन्द तथा उत्साहकी वृद्धि हो। खेती करने वालोंको तथा नीच जातियोंको कष्ट तथा भय उत्पन्न होवे। पूर्व, अग्नि तथा दक्षिणमें कई प्रकारके उपद्रव, राज्यवर्गके प्रति वैमनस्य, गत्यवरोध अग्निकाण्ड, विस्फोटादि होवें। सूर, मध्य, मालवा, कोटा, कलिंग, बंग, मगध आदि देशों में कई प्रकारके उपद्रव उत्पन्न होवें तथा मारवाड़में तूफान चालू हो। पश्चिममें युद्ध भय होवे। वन, तथा पर्वतोंमें रहने वालोंको कष्ट, गवादिपशुओंको पीड़ा होवे। वर्षामध्यम होवे। प्रजामें परस्पर ईर्षा द्वषकी आग धधक उठे जिसके कारण श्रेणी संघर्ष उग्र रूप धारण करे। बाल्यावस्थाकी स्त्रियों तथा आठ वर्षके बालकों को कष्ट होवे। महामारी प्रजापीड़ा, यात्रियोंको भय चोर, डाकू तथा पाखंडियोंको

कष्ट हो। मोटर, साईकिल, टैंक आदिके मूल्य बढ़ जावें और रेल, मोटर, हवाई जहाजके ड्राईवरोंसे एक्सिडैण्ट होवें। विशेषतया वृष, मिथुन, कन्या, वृश्चिक, मकर, कुम्भ राशिवालोंको कष्ट कारक तथा हानिदायक है। मेष, कर्क, सिंह, तुला, धनुः मीनके लिये सामान्य है। संसारमें कानोंकी बीमारियां बढ़े तथा बन्दूकसे आजीवका करने वालोंको कष्ट हो। राज्यवर्गको भय होवे।

पौष कृष्णपक्ष (वदी) का दैनिक रुखः—

तिथि	वार	घटाबढ़ी
१	मं०	चांदी, सोना, रुई, गुड़ मंदा।
२	बु०	चांदी, सोना, रुई, गुड़ दोपहर तक तेज फिर मंदे।
३	गु०	चांदी, सोना, रुई, गुड़में मंदा।
४	शु०	चांदी, सोना, रुई, गुड़में मन्दा।
५	श०	चांदी, सोना, रुई, गुड़ पहले मंदे फिर तेज।
७	सो०	चांदी, सोना, रुई, गुड़में मंदी।
८	मं०	चांदी, सोना, रुई, गुड़में तेजी।
९	बु०	चांदी, सोना, रुई, गुड़में मंदी।
१०	गु०	चांदी, सोना, रुई, गुड़में मन्दी।

सारांश—मूलानक्षत्र तथा धनुराशिमें बुध मुहूर्त १५ श्रवणमें शुक्र मुहूर्त ३०, कन्यामें मंगल मुहूर्त १५, बुधोदय पश्चिममें, मूलानक्षत्र धनुराशिमें सूर्य मुहूर्त ३०, पूर्वाषाढामें बुध ३०, मुहूर्त, श्रवणमें गुरू, सोमवती अमावस, वृश्चिकका चन्द्रास्त, चन्द्र हर्शल युति, गुरु शुक्र युति, चन्द्र शनि युति, चन्द्रमंगल युति, चन्द्र नेपच्यून युतिके कारण इस पक्षके पूर्वार्धमें तेजी हो, उत्तरार्धमें रुई २०) चांदी ६) सोना ४) गुड़ ।||) १) मंदी आवे, इसका सावधानीसे उपयोग करना चाहिये।

पौष शुक्लपक्ष (शुदी) का दैनिक रुख :—

तिथि	वार	घटाबढी
१	मं०	चांदी, सोना, गुड़, रुई तेज।
२	बु०	चांदी, सोना, गुड़, रुईमें तेजी।
३	गु०	चांदी, सोना, गुड़, रुईमें मंदी।
४	शु०	चांदी, सोना, गुड़, रुईमें मंदी।
५	श०	चांदी, सोना, गुड़, रुईमें मंदी।
७	सो०	बाजार दुतर्फा चलकर अन्तमें मंदी।
८	मं०	सोना, चांदी, गुड़, रुईमें तेजी।
९	बु०	सोना, चांदी, गुड़, रुईमें तेजी।

सारांश - इस पक्षमें बुधवारको चन्द्रदर्शन ४५ मुहूर्त है, अतः इस पक्षमें रुई १४) चांदी ४) सोना २) गुड़में १) तक मंदी आवे। उत्तराषाढ़ामें बुध मुहूर्त १५ मकरमें बुध ४५ मुहूर्त, मकरमें बुध मुहूर्त ४५ पूर्वाषाड़ामें सूय मुहूर्त ३०, बुध चन्द्र युति, गुरुचन्द्र युति, शुक्रचन्द्र युति के कारण हर तेजीके उछालेमें बेचना लाभदायक सिद्ध होगा।

तेजीके अनुभूत चांस सोना, चांदी, गुड़

(१) कार्तिक वदी पञ्चमी बुधवारको खरीद करें कार्तिक शुदि तृतीया सोमवारको माल पोते करें।

(२) मार्गशीर्षवदी अष्टमी सोमवारको खरीद करें मार्गशीर्ष शुदी दूज मंगलवार माल पोते करें।

(३) मार्गशीषशुदीषष्ठी शुक्रवार खरीद करें, मार्गशीर्षशुदी १३ शनिवारको माल पोते करें।

(४) पोषवदीपञ्चमी शनिवारको खुलते बाजार खरीद करें पौषवदी अष्टमी मंगलवार सायंकाल या नवमी बुधवार खुलते बाजार माल पोते करें।

चांदी, सोना, गुड़की मंदीके अनुभूत चांस

(६) कातिक शुदी तृतीया सोमवारको माल बेंचे कार्तिक शुदी सप्तमी शुक्रवारको माल पोते करें।

(७) मार्गशीषवदी द्वितीया सोमवारको मालका बेचान करें मार्गशीषवदी अष्टमी सोमवारको माल पोते करें।

(८) मार्गशीर्षशुदी प्रतिपदा सोमवारको मालका बेचान करें मार्गशीषशुदी ६ शुक्रवारको माल पोते करें।

(९) पौषवदी नवमी बुधवारको माल बेचें पौषवदी अमावस सोमवारको माल पोते करें।

(१०) पौष शुदी द्वितीया बुधवारको बेचें पौषशुदी सप्तमी सोमवारको माल पोते करें॥

——:——

चांदी सोना रुई गुड़ आदिके जनरल चांस और दैनिक घटाबढ़ी।

(ले० ज्योतिषाचार्य रमलाचार्य श्रीगणेश, विद्यासागर दैवज्ञ)

आश्विन शुक्लपक्ष (सुदी) का दैनिक रुख

तिथि	वार	चांदी	सुवर्ण	रुई
१०	श०	घटे भाव खरीदो	तेजीमें ॥) बढ़ेगें	अवश्य तेजी ३), ३॥)
१२	चं०	एक झटका मंदी का	मंदीमें लाभ है	थोड़े पैसे टूट जायेंगे
१३	मं०	दो दिनमें २) मंदा ३) तेज	मन्दे पर खरीदो	आजका योग भी मन्दा रहेगा
१४	बु०	तीन बजे तक मन्दा	मन्दीमें खरीदो	मन्दीका नफा ले लेना है।
१५	गु०	भारी घटा बढ़ी चलेगी	नजराने निकलें	योग्य दुतर्फा है।
१५	शु०	मन्दा ॥।) तेज १।)	घटे भाव खरीदो	तेजी आने वाली है।

आश्विन मासके व्यापारकी स्थिति

शुक्ला दशमीको आये उछालेमें मालका-बेचाण बोलो, यहाँ चांदी बढ़नेमें २) और घटनेमें ५) रु० है, सुवर्ण १॥), २) रुई १५), २०) का चक्कर पड़ेगा।

शेयर—बारदाना, काली मिर्च, सरसों, अलसी

इन बाजारोंमें सुदी दशमीको अच्छी तेजी चलेगी इसको किरतबी समझना, भावोंमें आये उछाले मालका बेचाण बोल साथके साथ नफा खाना न भूलें, शेयर ३५), ४०) काली मिर्च २५), २८) सरसों १॥), २) अलसी १ १॥) अवश्य घटेगी।

गुड़, गल्ला, चांवल, जीरा, बाजरा, गुवार—गुड़ ॥) तक मन्दा रह जावे अन्य वस्तुमें भी थोड़ी मन्दी चलेगी।

कार्तिक कृष्णपक्ष (वदी) का दैनिक रुख

तिथि	वार	चांदी	सुवर्ण	रुई
१	श०	दुतर्फा यौग है	आये उछाले बेचों	३) बढ़ेंगे ५) घटेंगे
३	चं०	दो बजे बाद ३) टूटेंगे	प्रथम तेज फिर मन्दी	तेजीमें बेचना चाहिये
४	मं०	घटे भाव खरीदो १) तेज	फिर तेजी चालू होगी।	३ बजेसे अच्छी तेजी
५	बु०	भारी मन्दी आ रही है	निकटमें तेजी हारेगी।	रुख देख लेना।
६	गु०	किरतबी उछाला है	अच्छे योग मन्दीके हैं	घटे भावोंमें खरीदो।
७	शु०	मन्दा १॥) तेजी २)	दोनों तरफ बाजार फिरेगा	नजराने तेजीमें निकलेंगे
८	श०	मन्दीमें ३॥) टूटें	मन्दीमें ॥।), १) निकलेगा	मन्दा ८) १०) हो जाये
१०	चं०	घटे भाव खरीदो	तेजी तूफानी चाल पर है	तेजी वाला माल कमायेगा
११	मं०	२॥) बढ़ेंगे अवश्य	॥), ॥=) बढ़ जायेंगे	आज ४), ५) की तेजी है।
१२	बु०	तेजी खेलो ३)	आज भी तेजी खेलना	तेजी ५), ७) की है।
१३	गु०	नजराने लगादो	भारी घटा बढ़ी है	तारुणी द्वारा व्यापार करो
१४	शु०	लक्ष्मी पूजन	माल खरीद करो	तेजीका मुहूर्त साधना है।

कातिक कृष्णपक्षकी व्यापार स्थिति

प्रतिपदासे चतुर्थी तक तेजी। चाँदीमें ३) ४), सुवर्णमें ।।।) १) रुईमें १०) १२) शेयरोंमें ३०) ४०) कालीं मिर्चमें २०) २२) सरसोंमें १।।) २) गुड़में ।।।) अलसीमें १) १।) तेजी होकर फिर मकरमें गुरु आगया है, मंगलको सप्तम तथा चन्द्रको त्रिकोण, बुध, केतु, सूर्य, नैपच्यून पर दृष्टि पड़ेगी प्रत्येक वस्तुमात्र वायदे मार्केटमें एक भारी मन्दीका धड़ाका ता० २ जुलाई वाला समझो। १० चन्द्रवारसे जिस २ वस्तुमें जितनी मन्दी आई है वह लौट जायेगी, यह स्वर्ण अवसर घूमने फिरनेमें मत गंवा देना।

कातिक शुक्ला (सुदि) का दैनिक रुख

तिथि	वार	चांदी	सुवर्ण	रुई
१	श०	प्रथम तेजी फिर मन्दा	३ बजेसे मन्दा	उछालेमें बेचना
३	चं०	फिर मन्दी २) २।।) होगी।	लाओ दो मच जाये,	घटे भाव खरीदो ४) मन्दे
४	मं०	आज भी १) १।।) टूटेगा	बेचाण बोलो,	योग दुतर्फा हैं।
५	बु०	अच्छी तेजी है	किरतबी मन्दी नहीं ठहरे	मन्दीमें लेओ ६) बढ़ेगे
६	गु०	योग दो दिनमें ४) तेज	तेजी में १) बढ़ेगा	तेजीं ८) ७) बढ़ादें
७	शु०	मन्दी १।।) २) हो जाये	भाव टूटेंगे ।।) ।।=)	भारी घटाबढ़ी है
८	श०	उछाला आयेगा	घटे भाव में ले लो	तेजी ३) ३।।) होगी
१०	चं०	पहिले मन्दी फिर तेज	मामूली घटाबढ़ी	बाजार रुख देखना
११	मं०	किरतबी मन्दी है १) १।।)	बाजार बढ़ेगा ।) ।-)	मन्दीसे फौरन निकलो
१२	बु०	तेजी १।।) २) होगी	अचूक तेजी है	तेजीमें ५) ६) बढ़ेंगे
१३	गु०	तेजी अधिक, मंदी कम।	दोनों तरफ बाजार रहेगा	समान पड़ा रहेगा
१४	शु०	मंदी रुकगई है	तेजी ।।) हो जायेगी	तेजी में ४) ५) बढ़ेंगे
१५	श०	मामूली तेजी ही बने	ग्रहों का योग तेज	तेजी खेलो नफा ले लो

कातिक शुक्ला में बाजार की स्थिति

कार्तिक शुक्ला ४ मंगल को घटे भावोंमें माल पोते करना। आप जिस वस्तुके खिलाड़ी हैं उसीको घटे भावोंमें खरीद लो और आये उछाले नफा लेते चलो। धातु तथा तैल पदार्थ तेजीमें रहेंगे और धान्य भाव जुवार बाजरा, मक्का, गुवारके व्यापारी तेजीमें बेचें और मंदीमें नफा लेते रहें।

मार्गशीर्ष कृष्णका दैनिक रुख—

तिथि	वार	चांदी	सुवर्ण	रुई
२	चं०	मंदी २।।) टूटे	उछाले में बेचो	उछाला ३) ३) का है
३	मं०	पहिले मंदा फिर तेज	मंदा ।-) तेज ।।)	दोनों तरफ बाजार चलेगा
४	बु०	कलकी परिस्थिति है	घटे भाव पोते करो	पहिले २।।) टूटेंगे २ बजेसे तेज
५	गु०	मंदी ।।) तेजी १।।)	मंदी में खरीदो	तेजी वाला जीतेगा नफालें
६	शु०	तेजी ।।।) पर बेचो	तेजी होकर मंदी	तेजी ४) फिर ३ बजे से मंदा,
७	श०	मंदा २।।) ३)	मंदी का योग है नफा लो	मंदी वाले जीतेंगे
६	चं०	घटे भाव खरीदो	तेजी अवश्य होगी	प्रथम मंदा २ बजे से तेज

१०	मं०	दो दिन में ३॥) ४) बढ़ें	तेजी का योग चालू है	तेजी वाले जीतेंगे
११	बु०	नजराने लगा दो	लाभ अवश्य होगा	बाजार रुख देख लेना
१२	गु०	तारुणी द्वारा लाभ है	मार्केट के साथ रहो	तार, फोन मिलाते रहो
१३	शु०	घटे भावों में खरीदो	धीरे धीरे तेजी चलेगी	तेजी में ३) ४) बढ़ेंगे
१४	श०	तेजी १॥) २) होगी	तेजी का योग है	तेजी ही खेल नफा लेलो

मार्गशीर्ष कृष्ण में व्यापार की परिस्थिति

तिथि २ चंद्रवारसे सप्तमी तक आये उछाले मालका बेचाण चालू रखना। यहां अच्छी मंदी शेयर, सरसों, सुवर्ण, सण, बारदाने में चलेगी। चांदी ४) ५) सुवर्ण १) १॥) रुई २०) २२) काली मिर्च १५) २०) घटने पर पौते कर लो। तिथि ६ चंद्रवार से तेजी चालू हो जायगी, यह तेजी चाँदी में ७) ८) सुवर्ण में २) २॥) रुई में ३०) ३५) शेयर में ५०) ५५) सरसों २॥) ३) गुड़ में १) १॥) काली मिर्च ३०) ३२) पकड़ लेगी। गुवार, बाजरा, मूंग मोठ, जुवार के भाव समान रहते मंदा। केवल मक्का चावल तेज होंगे।

मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष में चाँदी सुवर्ण रुई का दैनिक रुख

तिथि	वार	चांदी	सुवर्ण	रुई
१	चं०	आज के बढ़े भावो में बेचो	योग मंदे आरहे हैं	उछाले में बेचो
२	मं०	मंदी २) २॥) होगी	बाजार टूटेगा	५) ६) टूट जायेंगे
३	बु०	अच्छी मंदी हैं	बेचो ॥|) १) टूटेगा	आज भी मंदी ७) ८)
५	गु०	मंदी खेलना	भाव मंदे ही रहेंगे	योग मंदी के हैं
६	शु०	३) ३॥) मंदा	॥|) १) मंदा	आज १०) १२) मंदा
७	श०	मंदी २) २॥) नफा लो	मंदी बंद बाजार तक	नफा लेलेना चाहियें
८	चं०	तेजी अच्छी आवे	खुले बाजार खरीदो	तेजी ६) ७) बढ़ा दे
९	मं०	तेजी ॥|) १) हो जाये	तेज ॥) ॥=) बनेगा	योग कम तेजी के हैं
१०	बु०	आये उछाला बेचो	भाव किरतवी बढ़ेंगे	योग दोनों तरफ के हैं
११	गु०	बाजार रुख देखना	तारुणीकरना	संयोग ऊंचे में बेचने के हैं
१२	शु०	फिर मंदा योग है	ग्रह मंदीमें अधिक है	तेजीके ग्रह दूर हो गये
१३	श०	मार्केट तेजी पकड़े	दिखावटी तेजी है	इससे मत घबराना
१५	चं०	मंदी २) ३) की है	॥) ॥|) मंदा चलेगा	मंदी ५) की आजाये

मार्गशीर्षशुक्लामें व्यापारकी स्थिति

इस पक्ष में चांदी ६) १०) सुवर्ण ३) ४) रुई २५) ३०) शेयर १५०) २००) कालीमिर्च ५०) ५५) सरसों ३) ३॥) गुड़ १॥) बारदाना ६) ७) मदे हो जायेंगे। धान्य भाव भी मंदे रहेंगे। यदि तिथि ६ चंद्रवारकी रात्रिको या ९ मंगलवारको खुले बाजार मंदी चले तो भारी मंदीका योग समझ लेना। जुवार, गुवार, धनियां, मक्का, बाजरा, जौ, गेहूँ के भाव भी मंदे रहेंगे।

पौष कृष्णपक्ष में चाँदी, सुवर्ण, रुई का दैनिक रुख

तिथि	वार	चांदी	सुवर्ण	रुई
१	मं०	बेचो भाव घटेगा	मंदी चलेगी	५) ७) टूटेंगे
२	बु०	दुतर्फी योग है	ऊंचे में बेचाण करो	भाव तारुणीके हैं

३	गु०	आये उछालेमें बेचो	बेचाण ।।) बढ़ने पर करो	रुख देख लेना
४	शु०	भारी मंदी ३) ३।।) टूटेंगे	मंदी से मत घबराना	योग ग्रहोंके ऐसे ही हैं
५	श०	भाव टूट जायेंगे १।।) २)	बेचो ।।।) घटेगा	बेचो १०) १२) मंदी
७	चं०	भारी मंदीका योग आगया	माह जुलाई वाला	होतियारोंका माल है
८	मं०	मं०तेजी टिमटिमायेगी २) २।।)	पोते का सौदा मत करो	भाव ऊंचे आवेंगे
६	बु०	आये उछाले बेचो	हमारा ध्यान मंदा	मामूली योग तेजीके हैं
१०	गु०	भाव बढ़ेंगे थोड़े रूपमें	ऐसी तेजी हम नहीं मानते	आये उछाले बेचाण
११	शु०	तेजी ३) मंदी २।।)	तेजी ।।) मंदी ।।।)	तेजी ४) मंदी ६)
१३	श०	बाजार रुख देखना	कुछ तेजी बन जावे	योग तेजी के आये हैं
३०	चं०	दुतर्फा योग	तारुणी खेलो	योग संयोग मार्केट देखो

पौपकृष्णमें व्यापारकी स्थिति

इस पक्षके ग्रहोंको देखनेसे स्पष्ट भान होता है कि चांदी ११०) ११५) के भाव यहाँ तक आजाये। जब जब चाँदीमें ही मंदी चलेगी तो अन्य वस्तुका क्या हाल होगा स्वयं विचारलें।

पौषशुक्लामें चांदी, सुवर्ण, रुई का दैनिक रुख

तथि	वार	चांदी	सुवर्ण	रुई
१	मं०	तेजी २।।) ३)	तेजी ।।) ।।=)	तेजी ५) ५।।)
२	बु०	दुतर्फा योग मंदेमें है	प्रथम मंदा फिर तेज	मंदीमें खरीद तेजीमें बेचो
३	गु०	फिर मंदी खेलो	मंदी वाला जीतेगा	हमारा ध्यान मंदा है
४	शु०	बार बार मंदा बोल दो	मंदी का नफा लेलो	मंदी बंद हो रही है
५	श०	घटे भावोंमें खरीदो	तेजी आ रही है	बाजार का रुख पलटनेको है
७	चं०	तेजी हो दिनमें ४)	तेजी १।)	तेजी ६) १०) हो जाय
८	मं०	दुतर्फा योग	उछालेमें बेचो	ऊंचे भाव बेचाण बोलो
६	बु०	बाजार दुलेगा	योग देखना	तार फौनकी खबर लेलो

इन ६ दिनमें बाजार तेजी कम तथा मंदी अधिक पकड़ेगा। प्रिय व्यापारियों तेजी वालोंने वर्षोंसे माल खोंया है कहीं यह महाशय मार्केट इस समय बंद न कर दें। देखो आगामी देख व्यापार करना, हम आपको सूचना दिये देते हैं। चाँदी को बांदी भी नहीं पूछेगी। शेयर, सूत, सण, बारदाना, हर पदार्थ वायदे मार्केट थोड़े थोड़े अंतर में सब मंदी पकड़ लेंगे।

व्यापार-सिद्धि-मीमांसा

[श्री पं० गङ्गाप्रसादजी ज्योतिषाचार्य]

सृष्टिके आदिमें ब्रह्माजीने संसारको उत्पन्न किया, मनुष्योंमें व्यापार वृत्तिका अभाव देखके उन्हें चिन्ता हुई वे मनुष्योंमें संतोष एवं क्रय-विक्रयमें व्यापार सिद्धिका अभाव देखके सदाशिवजीकी शरणमें उपस्थित हुए। शिवने ब्रह्माजीको आये देख प्रसन्न चित्तसे आने का कारण पूछा और ध्यान द्वारा ब्रह्माजीकी चिन्ता समझके उनका सत्कारकरके संसारमें व्यापारमें सिद्धि उत्पन्न करनेका भार अपने ऊपर लेकर ब्रह्माजीको विदा किया। आपने गणेशजीको बुलाकर विचार-विमर्श किया। गणेश जी कुशाग्र बुद्धि द्वारा सदाशिवजीसे कहने लगे कि हे ईश! ब्रह्माजीकी सृष्टिमें जो आपने काल निर्णय तत्त्व अपने योगसे उपजाया है उसीके अंतर्गत शुभ और अशुभ-कारक जो समय होगा उसीको 'मुहूर्त्त' कहा जायगा। अहर्निश प्रमाणमें जो पञ्चदश मुहूर्त्त हैं वे ही व्यापार सिद्धि साधनके तत्त्व होंगे। उन मुहूर्त्तोंमें जो उत्तम शुभकाल है उसको जानकर ब्रह्माकी सृष्टिमें जितने देव राक्षस मनुष्य हैं वे युद्ध-यात्रा, क्रय विक्रय, विवाह, अर्थात् जितने भी नवीन कार्य कलाप संसारमें हैं—उन सब कार्योंमें सिद्धि मेरी कृपासे उत्तम मुहूर्तमें कार्यारम्भ करनेसे होगी, अन्यथा नहीं। ऐसा श्रीगणेशजीका विचार सुनकर सदाशिवजीने वरदान दिया कि व्यापारियोंकी गद्दी मेरा आसन होगा, उस आसन पर बैठकर व्यापार करेंगे तो मेरे प्रसादसे उस व्यापारमें वृद्धि होगी। गणेश और लक्ष्मी व्यापारी वृत्तिके आदि देवता होंगे, उनके पूजनसे व्यापारी सर्वस्वकी प्राप्ति कर सकेंगे। मुख्य जो गणेशजीने अपनी कुशाग्र-बुद्धि द्वारा पांच तत्व और पन्द्रह मुहूर्त्त रूपी जो (मेरा रूप) शुभकाल बताया है उसको जानकर सृष्टिके बीच नवीन व्यापार करेंगे उनको अवश्य सिद्धि प्राप्त होगी तदनन्तर अनायास धन प्राप्तिके उपाय शोधकर उसके प्रचारार्थ देवताओंके लिए बृहस्पतिजीको और सब सृष्टिमें प्रचार करनेके लिये, भृगुवंशियोंको बुलाकर शिवजीने कहा कि—"मेरा रूप जो मुहूर्त्त है इसको ज्योतिषचक्रके द्वारा ग्रहमान शोधकर संसारी जीवोंका उद्धार करो।" बृहस्पतिजी तो 'तथास्तु' कहकर देवलोकमें प्रचार करनेको चले गये, किन्तु भृगुऋषि चुप साधकर बैठे रहे, तो शिवजीने भृगुसे पूछा कि आप क्या कहना चाहते हैं? तब भृगुजी सदाशिवकी स्तुति करके बोले।

"महाराज! देवताओंके लिए तो आप और विष्णुजी अपनी तपस्याका फल देखकर सिद्धि प्राप्त करायेंगे किंतु मनुष्य राक्षसोंकी सिद्धि बिना लक्ष्मी देवीकी कृपाकटाक्ष द्वारा नहीं हो सकती और लक्ष्मी हमसे वा हमारे वंशसे रुष्ट है, कारण मैंने वैकुण्ठमें सोते हुए विष्णुजीके शील परीक्षार्थ लात मारी तब लक्ष्मीजीने रुष्ट होकर हमको शाप दे दिया है।'

यह सुनकर शिवजीने भृगुजीको वरदान दिया कि आप मेरा ध्यान करके मेरा शुभरूप जो मुहूर्त्त है उसका विकास संसारमें करो, मेरी कृपासे गणेशजी विघ्न विनाशक होंगे, और आपका शोधा हुआ मुहूर्त्त अवश्य सिद्धि प्राप्त करेगा। लक्ष्मीजीको वहां स्थिर होकर विराजना ही होगा। ऐसे वचन सुनकर शिवका ध्यानधरके भृगुजीने अपने नामसे लक्षश्लोकोंकी रचना करके भृगु संहित बनाई उसमें कितने ही खण्ड हैं, किन्तु मुहूर्त खण्डको विशेष प्रधानता शिवजीने प्रदान की, क्योंकि काल मान शिवका रूप है और मुहूर्त्त ही एक शुभत्व लिये संसारमें विराजमान हैं। ज्योतिषचक्रके भीतर ही कालचक्र है इसलिये भृगुजी द्वारा संसारमें मुहूर्त्तका प्रचार हुआ। मुहूर्त्तोंके द्वारा कार्योंमें सिद्धि मिलनेसे ब्रह्माजीकी चिंता विलीन हो गयी, उस समयसे और आज तक संसारमें मुहूर्त्तोंके द्वारा व्यापार कार्योंमें सिद्धि मिलती रही है। ब्राह्मणोंका सृष्टिमें मान इसी विद्या द्वारा होता है। किंतु आजकल ज्योतिषियोंमें मुहूर्त्त शोधन प्रणालीका अभाव सा हो गया है, तथा व्यापारीवर्ग भी विपणी मुहूर्त्त बिना शोधके सट्टा लॉटरी व्यापारसे अनायास धन प्राप्ति चाहता है, यह कैसे हो सकता है? मुहूर्त्त शोधन प्रणाली संसारमें

लोप नहीं हो गई है। व्यापारी ध्यान दें। कुछ काल पहिले काशीजीमें बबूआ ज्योतिषी इस मुहूर्त्त शोधनके अद्वितीय विद्वान हो गये हैं जिन्होंने अपने यजमानको युद्धका मुहूर्त्त शोधकर दिया, यजमानकी शीघ्रतासे मुहूर्त्त प्रारम्भ होनेसे पहिले ही लड़ाई हो गई फिर भी अपने बड़े भारी प्रतिपक्षी राजाके सामने विजय हुई, उस मुहूर्त्तके प्रभावसे सवा पहर एकछत्र राज्य हो गया। अब भी जिन्होंने मुहूर्त्तसे मिल कारखाने आदि खोले हैं वे कर्जा लेकर व्यापार करने वाले करोड़पति हैं। मैं व्यापारियोंके हितकी तथा व्यापारमें सफलता कैसे प्राप्त होती है इसकी मीमांसा व्यापारी भाइयोंके लाभके निमित्त ब्यौरेवार लिखता हूँ—

(१) प्रथम अनायास धन प्राप्तिका साधन, निर्विघ्न व्यापार सिद्धिका कारण निरूपण करता हूं। सट्टेके व्यापारमें शतप्रतिशत सफलता इस प्रकारसे होती है। सबसे प्रथम सट्टेसे लक्ष मुद्राप्राप्तिके योग जन्मपत्रमें ५। ८ वें स्थानमें केवल (बु० शु० गु० चं०) उपस्थित हो, मित्र स्वगृही तथा उच्च राशिगत हो, तथा जन्मकालिक वर्गोत्तमाँश में होवे तो उस प्राणीको चांदी, सोना, रुई, शेयर्स, गल्ला, तिलहनके वायदेके व्यापारसे अनायास लाभ होता है। यदि यह योग जन्म वर्ष मास लग्न (तीनों कुंडली में भाग्यसे आजाय तो एक मासमें ही लक्षमुद्रा प्राप्त हो जाती है। जिसके पास जन्मपत्र न हों उनके हाथमें तीन चिन्ह देखें, दाहिने हाथके अंगुष्टके अग्र भागमें यव रेखा, हाथके मूलमें मणिबंधमें मच्छ रेखा ऊर्ध्व रेखा, अनायास धनको देने वाली होती है, यह सबसे प्रथम देखें।

(२) दूसरे काकिणीके विचारसे वस्तुके वायदेसे अधिक लेनिया बनता है। अपनी काकिणीके शेषको वस्तुकी द्विगुण शेषको विशेष प्रधानता समझी है, जैसे शेष ३ को ७ अधिक शुभ हैं। इसी प्रकार अपने नामसे और व्यापार करनेके साथ-साथ ग्रामसे लेनियाका विचार करें, अर्थात् विशेष किस शहरमें व्यापार वायदेका शुभ होगा जानकर फिर प्रथम वायदेके व्यापार चालू करने का शुद्ध विपणी मुहूर्त्त उत्तम जानकर ज्योतिर्विदसे दिखलावें। आज कल शुद्ध मुहूर्त लाभका शोधना साधारण बात नहीं है। इसमें शिवके पूर्णतत्त्व सिद्धिदायक पंचदश मुहूर्त्तोंमें व्यापारमें पूर्णसिद्धि देने वाला 'जयदेव' नामक मुहूर्त्त है। उसमें लाभ अमृतका चौघड़ियाका अंश चौथाई भाग, दुघड़ियाका समय आधा भाग मिलाकर पण्डितजन कालका शोधनकर व्यापारियोंको उत्साहके साथ बतलावें और व्यापारी भाई भी उच्चकोटिके विद्वानों द्वारा मुहूर्त्त लेकर प्रसन्नचित्तसे गणेश लक्ष्मी का स्मरण करके प्रथम व्यापार करें, देखें शतप्रतिशत सफलता होती है कि नहीं।

विशेष व्यापार सिद्धि यात्रामें मुहूर्त्तके अनुसार प्रस्थान या घरसे चलनेके समयमें 'बगैर धन लिये नहीं लौटने' हरा-भरा होकर घर आने आदि कार्यमें जिस दिशाको जावें उस दिशामें दरिद्र और लक्ष्मीका वासा विचारनेकी प्रणाली आदि ऋषियोंने बनाई है। केवल विपणी मुहूर्त्तके प्रस्थानके समय देख लेना ही सिद्धिका लक्षण समझें।

'मुहूर्त्त लक्षणपञ्चाशिका' नामक हस्तलिखित ग्रन्थसे लक्ष्मी दरिद्रका वासा देखनेकी युक्ति व्यापारी भाइयोंके लाभके निमित्त यहां लिख रहा हूँ।

व्यापार में लाभ होनेके यात्रा सम्बन्धी विशेष योग—

लक्ष्मी का निवास

यामयुग्मेषु रात्रौ च वामे पूर्वादिगौ रमाः।
यात्रायां दक्षिणे चैव प्रवेशे सम्मुखः शुभः ॥ १ ॥

एक प्रहर रात्रिसे लेकर प्रहर दिन तक पूर्वमें फिर दो प्रहर दक्षिणमें फिर दोप्रहर पश्चिममें फिर दोप्रहर उत्तरमें समझो। घरसे निकलते समय दक्षिण, प्रवेशके समय सम्मुख लेकर नगरमें वा बुलियन एक्सचेन्जमें प्रवेश करो।

(दरिद्र) देव

यामयुग्मेषु रात्रौच दक्षिणेच दरिद्रता।
यात्रायां शुभेवामें प्रवेशे पृष्ठके द्वयम् ॥ १ ॥

एक पहर रात्रिसे लेकर एक पहर दिनतक दक्षिणमें फिर दोपहर पश्चिममें, फिर दोपहर उत्तर दोपहर पूर्वमें दरिद्र देव रहते हैं। यात्रामें वाम प्रवेश में पीछे लेना शुभ है।

त्रैमासिक-व्यापारिक राशिफल

[लि०—श्री पं गङ्गाप्रसादज ज्यौतिषाचार्य]

मेषः—इस राशि वालेको प्रथम व्यापार करनेमें मंगलका दिन उत्तम रहेगा चांदी, सोना, गुड़ फीचरसे लाभ रहेगा। अरंडा अलसी नेष्ट है इन तीनमहीनोंकी ता० १।३।५।७।६।११।१५।१६।२३।२५।२६ श्रेष्ठ रहेगें। ४।८।१६।२० नेष्ट, बाकी मध्यम समझो। पहिले बेचानका काम लाभकारी रहेगा।

वृषभः—इस राशि वालेको सोमवार, शुक्रवार व्यापार प्रारम्भ के लिये उत्तम होंगे। रुई, फीचर, चाँदी, सरसोंका व्यापार उत्तम रहेगा। सोना, गुड़का नेष्ट है। अरंडा मूंगफली मध्यम समझो, हर महीनेकी २।४।६।८।१०।१४।१८।२४।२६।२८।३० उत्तम १।११।२१।३१ नेष्ट बाकी मध्यम समझें। प्रथम व्यापार खरीदकी लाइनका ठीक रहेगा।

मिथुनः—इस राशि वालेको बुधका दिन नवीन कार्यके लिए उत्तम रहेगा। चांदी, सरसोंको गुड़ तिलहन, मूंग, जौ, चनेका व्यापार लाभकारी रहेगा। हर महीनेकी ३।७।८।१२।१६।२०।२४।२८ तारीख उत्तम रहेगो। ६।६।१३।२३ नेष्ट बाकी, मध्यम। प्रथम व्यापार वायदेमें बेचान ठीक रहेगा।

कर्कः—इस राशि वालेको प्रथम व्यापार करनेमें गुरुवार उत्तम रहेगा। पहिले कार्य खरीदका लाभकारी समझें, हर महीनेकी ता० १।४।७।११।१६।२१।२६।२६।३० उत्तम रहेगी। ४।६।१४।१८ नेष्ट, बाकी मध्यम फलकारी समझें।

मुहूर्त फल परीक्षण उक्त ऊपर लिखे साधनद्वारा व्यापारी भाई पूर्णतया निश्चय कराके वायदेके व्यापारमें पैर रखें अन्यथा पछताना पड़ेगा। सुमुहूर्त्तसे किया व्यापार कदापि विपरीत न होगा। 'श्रीस्वाध्याय' के पुराने और नवीन ग्राहकोंको यह सुविधा दी जाती है कि वे विपणी मुहूर्त तथा सट्टे के वायदेके व्यापार प्रारम्भका मुहूर्त्त फ्री हमारे कार्यालयसे प्राप्त करें। नाम व पूरा पता और उत्तर के लिए चार आना टिकट भेजें।

चांदी-सोना, गुवार, गुड़, फीचरसे लाभ रहेगा। बाकी वस्तु सम।

सिंहः—इस राशिवालेको रविवार और मंगलका दिन प्रथम व्यापारके लिये उत्तम रहेगा। चांदी, रुई, तिल, तैल घृत कपड़ेका व्यापार उत्तम रहेगा। हर महीनेकी ता० १।४।८।१२।१४।१६।१८।२२।२६।२८ श्रेष्ठ ३।१३।२३ नेष्ट, बाकी मध्यम प्रथम बेचान लाभकारी होगा।

कन्याः—इस राशि वालेको प्रथम व्यापार करनेके लिये बुध और शुक्रका दिन उत्तम रहेगा, चांदी, सोना, रुई, फीचर, अरहर अरंडा उत्तम लाभकारी। हर महीनेकी ता० २।४।७।१२।१६।२०।२४।२८।३१ श्रेष्ठ। ४।५।१०।२५ नेष्ट। बाकी मध्यम। प्रथम व्यापार खरीदसे लाभ रहेगा।

तुलाः—इस राशि वालेको प्रथम व्यापार सोमवार शुक्रको करना उत्तम रहेगा। प्रथम खरीदका काम करो वायदा बाजार दोनोंसे लाभ होगा। चांदी, रुई, कपड़ा शेयर्स, तिलहनका उत्तम रहेगा। ता० १।६।८।१२।१६।२१।२४।२७।३० श्रेष्ठ, ५।१०।१५।२५ नेष्ट, बाकी मध्यम हैं।

वृश्चिकः—इस राशि वालेको प्रथम व्यापारकार्य मंगल तथा रविवारमें करनेसे लाभ होगा, बेचानका कार्य पहिले करें। चांदी, सोना, सरसों, अरंडा, मूंगफलीका उत्तम रहेगा, हर महीनेकी ता० ३।७।६।११।१४।१६।१८।२६।२८ श्रेष्ठ, ४।६।१३।२३ नेष्ट, बाकी मध्यम।

धनुः—इस राशि वालेको प्रथम व्यापार करनेके लिये गुरुवार तथा सोमवार उत्तम। पहिले-पहिले खरीदका कार्य श्रेष्ठ रहेगा। हर महीनेकी ता० १।४।७।११।१५।१६।२३।२७।२६ श्रेष्ठ ४।८।१२।२२ नेष्ट, बाकी मध्यम। चांदी, गुड़, फीचर, बारदाना उत्तम रहेगा।

मकरः—इस राशिवाले बुध तथा शनिवार को प्रथम व्यापार करें तो श्रेष्ठ रहेंगे। पहिले बेचानका कार्य करें। चांदी, सोना, अलसी, बिनौला, लोहा, स्टीलका कार्य उत्तम रहेगा। ता० २।४।८।११।१४।१७।२१।२५। श्रेष्ठ, ३।६।१३।

व्यापारिक तेजी-मंदी और ज्योतिष

[ले०—श्री बी० सी० मेहता M. R. A. S.]

आज "श्रीस्वाध्याय" अपने नौवें नूतन वर्षमें प्रवेश कर रहा है; इसने अपने गत आठ वर्ष किस सफलतासे समाप्त किये यह प्रिय पाठकोंसे छुपे नहीं है। इसकी इस थोड़ी-सी वयमें इतनी सफलता देखकर प्रत्येक स्वाध्याय-प्रेमीका हृदय गद्गद् हुए विना नहीं रह सकता। इस सफलताका श्रेय हमारे प्रिय मित्र माननीय श्री त्रिवेदीजी को है, जिनके अथक परिश्रमने ही आज इस पत्रको इस श्रेणीमें पहुंचाया है। एतदर्थ मैं इस कर्मवीर सम्पादकका अभिनन्दन किये विना नहीं रह सकता।

श्रीस्वाध्यायकी आशातीत प्रगति देखकर यद्यपि भारतमें ज्योतिष सम्बन्धी पत्रोंकी बाढ़-सी आरही है और नित नये ढंगसे पत्र निकलने प्रारम्भ होगये तथापि उनसे भारतवासियोंका विशेष हित होनेकी सम्भवना दिखाई नहीं देती, क्योंकि इन पत्रोंमें बहुतोंका सम्पादन तो ऐसे मनुष्योंके हाथमें है जो ज्योतिषके रहस्योंसे नितान्त अनभिज्ञ हैं। यदि 'श्रीस्वाध्याय' त्रैमासिकसे मासिक हो जाय तो इन अप्रामाणिक पत्रोंका अवरोध होकर भारतीय जनताको विशेष लाभ होनेकी सम्भावना है।

गत एक वर्षसे मैं पाठकोंकी सेवा 'श्रीस्वाध्याय' द्वारा नहीं कर सका हूँ, इसके लिये मैं क्षमा चाहता हूँ, क्योंकि इसके कई कारण थे। यद्यपि कई पाठकोंने पत्रोंके द्वारा मुझसे अनुरोध किया था कि मैं अपने तेजी-मन्दी सम्बन्धी लेख व विचार 'श्रीस्वाध्याय'में प्रकट करूं। परन्तु एक अन्य पत्रिकासे मेरा वर्ष भरका कंट्राक्ट हो जानेसे मैं विवश था। अब मैंने उनसे 'श्रीस्वाध्याय'में लेख देनेकी स्वीकृति ले ली है और आशा करता हूँकि भविष्यमें बराबर आप लोगोंकी सेवा करता रहूंगा।

अक्टूबर १९४९

जबसे सन् १९४९ प्रवेश हुआ है व्यापारिक वस्तुओंमें अच्छी घटाबढ़ी चल रही है। चांदी सोनेमें पर्याप्त घटाबढ़ी हुई। जिन महाशयोंने तेजी-मन्दी सम्बन्धी लेखोंमें विशेष रुचि ली होगी वे अवश्य अनुभव करेंगे कि ग्रहों व ज्योतिष का प्रभाव व्यापारिक तेजी-मन्दी पर कितना अधिक पड़ता है। एस्ट्रोलोजिकल मैगजीनके मई व जूनके अंकमें हमने व हमारे अन्य ज्योतिषी साथियोंने इस मोटी मन्दीकी, जो चांदीमें आई, स्पष्ट शब्दोंमें घोषणा की थी। अब चांदी सोनेमें क्या होने वाला है इसका यदि ज्योतिष द्वारा विश्लेषण करें तो हमें साफ दिखाई देगा—कि चालू बड़े ग्रह तेजीमें नहीं हैं। मकर राशिका बृहस्पति व कर्क राशिका हरशल (सायन) चांदीकी तेजीको समाप्त करते हैं। साथमें राहु मीन राशिमें (निरयन) नेपच्यूनसे उसका प्रतियोग (आपोजिशन) लम्बी मन्दी बतलाता है। एतदर्थ लम्बी लाइन तो चांदी सोनेमें तेजीकी उस समय तक नहीं जब तक मीनराशिमें राहु और मकर राशिमें बृहस्पति रहता है। और वो चोटीके भाव जो चांदी सोनेमें जूनकी ९ तारीख तक देखे गये थे अब स्वप्नवत् दिखाई देंगे। यद्यपि बड़े २ ग्रह तेजीसे निकल चुके हैं, फिर भी लम्बी मन्दी लानेके लिये तेजीके उछाले आना परमावश्यक है और इसीलिये छोटे २ ग्रहोंके संयोगोंसे तेजी आवेगी, किंतु यह बात बहुत ध्यानमें रखनेकी है कि जो [illegible]

[illegible] पहल १०)

---

२३ नेष्ट बाकी मध्यम समझें। लौटरीरेशका नम्बरलगाना उत्तम है।

कुंभः—इस राशि वालेको शुक्रवार शनिवार उत्तम होंगे। पहिले खरीदकरके बेचो। चांदी, फीचर, रुई, सरसों, मूंग, उड़द, तिल, तेलका कार्य लाभदायक रहेगा। ता० २।५।६।११।१३।१७।२३।२७ श्रेष्ठ, १।४।६।१३ नेष्ट बाकी मध्यम। प्रथम व्यापार गुरुकी सेवाकरके आशीर्वादलेकर करो।

मीनः—इस राशि वालेको चन्द्रवार गुरुवार नवीन-कार्यके लिये उत्तम। पहिले खरीदो फिरबेचो। चांदी-सोना रुई, तांबा, पीतल, शेयर्स काकार्य लाभकारी रहेगा। ता० ४।७।११।१४।१८।२१।२५।२७।३१ श्रेष्ठ; २।६।१२।२४ नेष्ट बाकी मध्यम समझें। पुखराजकी अंगूठी पहनकर व्यापार करनेसे उत्तम लाभ रहेगा।

की तेजी करनेका प्रभाव रखता था उससे अब ५) रु० की ही तेजी आ सकेगी। चांदी सोनेमें जनरल ट्रेण्ड तो मन्दीका है ही परन्तु बीच २ में तेजीके उछालोंसे लाभ उठानेके लिये हम पाठकों के हितार्थ यहां विशेष विवेचन करते हैं।

तारीख ३ अक्टूबरको सूर्य बुधका Inferior होगा यह चांदी सोनेमें तेजी लावेगा। यह तेजी ता० ६ को समाप्त होगी। यहां एक मन्दीका झटका आसकता है, क्योंकि प्लूटोकी मंगलसे युति होरही है।

ता० ७ अक्टूबरको एक चन्द्रग्रहण होने जा रहा है; यह चन्द्रग्रहण दुतरफी घटाबढ़ीका सूचक है। यहाँ पर गली नजराना लगाने वालोंको लाभ हो सकता है। ता० २१ को शनि-नेपचूनका Semi Sextile हो रहा है यह चांदी सोना और शेयरकी तेजी बतलाता है इसका प्रभाव ता० २६ तक तेजीकी ओर रहकर ३० व ३१ को मन्दी सूचक है। गुड़ खांडमें ता० ६ अक्टूबरके बाद अच्छी मन्दीकी सम्भावना है। ता० १८ अक्टूबर तक गुड़की लाइन मन्दीकी दिखाई देती है। बादमें फिर थोड़ी तेजी आसकती है।

नवम्बर १९४९

ता० १ नवम्बरको शनि हरशलका त्रिरेकादश हो रहा है यह चाँदी सोना शेयर व रस कसमें तेजी सूचक है। परन्तु ता० १० नवम्बरसे नेपचून राहुका प्रतियोग हो रहा है यह चांदी सोना व शेयर गुड़ आदिमें अच्छी मन्दीका सूचक है, बीच २ उछाला आवे तो बेचना श्रेयस्कर रहेगा।

ता० २० को सूर्य बुध पेरेलल २२ को शनिसे भी सेक्स्टाईल प्लूटो इत्यादि चांदी सोनेमें पुनः उछाला लावेंगे सो ध्यान रहे।

दिसम्बर १९४९

इस दिसम्बर मासमें ता० ३-४ तक चांदी सोनेमें तेजी ही दिखाई देती है और फिर मंगल पेरेलल नेपच्यून घटाबढ़ीके साथ झटकेकी मन्दीका योग है। गुड़में जनरल लाइन मन्दीकी हो जाय तो भी कोई आश्चर्य नहीं है।

ता० १७ को हरशल क्यूनिक्स बृहस्पति व बृह०से भी काडरेट शनि चाँदी सोने और शेयरमें मन्दीका सूचक है। जनरल ट्रेण्ड मन्दीका रहेगा, उछाले बीच २ में आसकते हैं। रुईमें ता० ६ से मन्दी आसकती है। इस मासमें दुतरफी घटाबढ़ी विशेष रहकर मन्दी आवेगी तो बहुत सावधान रहना चाहिये।

त्रैमासिक पर्वव्रतादि निर्णय

['श्रीविश्वविजय पंचांग' से]

आश्विन शुक्ला	१० शनिवार ता० १ अक्टूबर	विजया १० दशहरा श्रीसरस्वती विसर्जन, बौद्ध जयन्ती
	११ रविवार ता० २ अक्टूबर	पाशाङ्कुशा एकादशी व्रत स्व० श्री महात्मा गांधी जयन्ती
	१३ मंगलवार ता० ४ "	भौम प्रदोषव्रत।
	१५ गुरुवार ता० ६ "	सत्यव्रत शरद् पूर्णिमा कोजागरी आकाशदीपदान नवान्नप्राशन
	१५ शुक्रवार ता० ७ "	कार्तिक स्नानारम्भ पश्चिम भारतमें ग्रस्तास्त चन्द्रग्रहण।
कार्तिक कृष्ण	३ सोमवार ता० १० "	श्रीगणेश ४ (करवाचौथ) चन्द्रोदय स्टेंडर्ड टाइम् रात्रि ७।४४
	८ शनिवार ता० १५ "	अहोई ८ (श्रीमहाकाली पूजन)
	१० सोमवार ता० १७ "	तुला संक्रान्ति पुण्यकाल।
	११ मंगलवार ता० १८ "	रमा एकादशी व्रत, गोवत्सा १२
	१२ बुधवार ता० १९ "	प्रदोषव्रत धन १३ श्रीधन्वन्तरि जयन्ती।
	१३ गुरुवार ता० २० "	श्रीहनुमज्जयन्ती, नरकहरा १४, रूपचतुर्दशी।
	१४ शुक्रवार ता० २१ "	दीपमाला श्रीमहालक्ष्मी पूजन।
कार्तिक शुक्ला	१ शनिवार ता० २२ "	अन्नकूट गोवर्द्धन पूजन, वर्ष्टिकाकर्षण (रस्साकशी)
	२ रविवार ता० २३ "	यम २ टिक्का (भाई) दूज, दवातकलम पूजन चन्द्रदर्शन
	५ बुधवार ता० २६ "	सौभाग्य ५
	७ शुक्रवार ता० २८ "	गोपाष्टमी (सायंकाल व्यापिनी)
	९ रविवार ता० ३० "	अक्षया ९ सुवर्णगर्भकूष्माण्डदान
	११ मंगलवार ता० १ नवम्बर	हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत भीष्मपंचकारम्भ तुलसीविवाह चातुर्मास समाप्ति, ताजिया, आमला भोजन
	१२ बुधवार ता० २ "	प्रदोषव्रत।
	१३ गुरुवार ता० ३ "	बैकुण्ठचतुर्दशी।
	१४ शुक्रवार ता० ४ "	टुकरी १५ कार्तिकस्नान समाप्ति भीष्मपंचक समाप्ति, सत्यव्रत पुष्कर यात्रा, श्रीनानक जयन्ती।
	१५ शनिवार ता० ५ "	
मार्गशीर्ष कृष्ण	३ बुधवार ता० ९ "	श्रीगणेश चौथव्रत चन्द्रोदय स्टे० टा० ७।५४
	७ रविवार ता० १३ "	श्रीमहाकाल भैरवाष्टमी
	९ मंगलवार ता० १५ "	श्री पं० जवाहरलाल नेहरू जन्मदिन ६१ वाँ
	११ बुधवार ता० १६ "	उत्पन्नाएकादशी व्रत, वृश्चिक संक्रान्ति पुण्यकाल
	१३ शुक्रवार ता० १८ "	प्रदोष व्रत
	३० रविवार ता० २० "	अमावस्या
मार्गशीर्ष शुक्ल	१ सोमवार ता० २१ "	चन्द्रदर्शन
	६ शुक्रवार ता० २५ "	स्कन्दषष्ठी ललिता ६ चम्पा ६
	११ गुरुवार ता० १ दिसम्बर	मोक्षदा एकादशीव्रत, श्रीगीता जयन्ती

मार्गशीर्ष शुक्ल	१२ शुक्रवार ता० २	दिसम्बर	प्रदोषव्रत ।
	१४ रविवार ता० ४	,,	पिशाचमोचनश्राद्ध । श्री डा० राजेन्द्रप्रसाद जन्मदिन ६६ वाँ
	१५ सोमवार ता० ५	,,	सत्यव्रत पूर्णिमा श्री दत्त जयन्ती ।
पौष कृष्ण	४ शुक्रवार ता० ६	,,	श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टे० टा० ८।४५
	१० गुरुवार ता० १५	,,	धनुः संक्रान्ति पुण्यकाल मध्याह्नोत्तर
	११ शुक्रवार ता० १६	,,	सफला एकादशीव्रत ।
	१२ शनिवार ता० १७	,,	शनिप्रदोषव्रत ।
	३० सोमवार ता० १९	,,	सोमवती अमावस्या ।
पौष शुक्ल	२ बुधवार ता० २१	,,	चन्द्रदर्शन ।
	३ गुरुवार ता० २२	,,	सायन मकरमें सूर्य सा० उत्तरायण और शिशिरऋतु प्रारम्भ ।
	७ सोमवार ता० २६	,,	श्रीगुरु गोविन्दसिंह जयन्ती ।

जन्मकुण्डलीके अनुभूत योग

[ले०—विद्यारत्न ज्योतिश्शास्त्री श्री पं० देवीदत्तजी राजज्योतिषी]

यद्यपि ज्योतिश्शास्त्रके अनन्त ग्रन्थ हैं, और कहीं कहीं उनके फल विचारमें मतभेद भी है, अतः साधारण दैवज्ञके फल ठीक न मिलनेसे सर्वसाधारण जनताकी श्रद्धामें न्यूनता आना स्वाभाविक है। तथापि फलको अनुभवसे कहने वाला विशेषज्ञ ज्योतिर्विद् अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाते हुए ज्योतिषशास्त्रका गौरव भी उन्नत करता है। कई वर्षोंसे मुझे जो अनुभव जन्म-कुण्डली तथा वर्षकुण्डली सम्बन्धी हुए हैं, उन्हें मैं यहां 'श्रीस्वाध्याय' के पाठकोंको भेंट कर रहा हूँ। आशा है ज्योतिर्विज्ञानवेत्ता इससे प्रसन्न ही होंगे। क्योंकि प्रत्येक विद्याके गुप्त रखनेके कारण ही विद्याका ह्रास और लोप हुआ, इसके अनेक उदाहरण हैं, अस्तु। मेरे अनुभूत योग निम्न हैं—

१—बृहत्पाराशरीके राजयोग शतप्रतिशत ठीक मिलते हैं।

२—जन्म में रिपुभाव का चन्द्रमा प्रमेह रखता है।

३—सप्तम मंगल खूनी अर्शका सूचक है।

४—सूर्य शुक्रका रिपुभावमें संयोग मूत्रकृच्छ्र करता है।

५—शुक्र मंगलका योग व सम्बन्ध उपदंश करता है।

६—लग्नके सूर्य अर्द्ध शिर पीड़ा देते हैं।

७—सप्तम केतु पथरी, दर्द गुर्दा आदि शूल कारक है।

—जन्म लग्नेश शुभ युक्त दृष्ट केन्द्र या त्रिकोण में मित्र क्षेत्री प्रायः आजीवन सुखी मान युक्त प्रतापी बनाता है।

९—पंचमेश दशमेशका योग या सम्बन्ध प्रबल राज योग कारक है।

१०—स्त्रीकी कुंडलीमें सप्तमसूर्य हो तो वह पति द्वारा अनादर पाती हैं।

११—वर्षमें सप्तमेशका लग्नमें पड़कर गुरुसे दृष्ट होना विशेष उन्नतिका सूचक है।

सम्पादकका अनुभव—

श्रीराजज्योतिषीजीने ऊपर जो ११ योग लिखे हैं इनमें कुछ पर संख्याक्रम से हमारा संशोधन वा अनुभव निम्न है—

२—शुक्र वा सप्तमेश से सम्बन्धी चन्द्रमा छठे हो तो प्रमेह होता है, अन्यथा नहीं। पूर्ण चन्द्रमा वृष वा, कर्कराशिका छठे हो तो श्वास रोग (दमा) होता है।

३—सप्तम मंगल गुरुसे युत वा दृष्ट और बलवान हो तो रक्तार्श (खूनी बवासीर) नहीं होती।

५—शुक्र मंगलका योग यदि नीच राशिमें हो तो वह मनुष्य निश्चितरूपमें व्यभिचारी होता है और पत्नीसे उसकी नहीं बनती।

६—यदि लग्नमें सूर्य निर्बली हो अथवा षष्ठेश अष्टमेश वा मङ्गल शनिसे कोई भी सम्बन्ध हो तो सूर्यावर्त्तः (अर्ध शिर पीड़ा) रोग होता है, अन्यथा नहीं। मेष वा सिंहराशिका सूर्य लग्नमें राजयोगकारक होकर मनुष्यको प्रतापी बनाता है।

७—सप्तम भावमें वृश्चिक धनुः मीन राशि का केतु पथरी आदि रोग नहीं करता। यदि सप्तम राहु केतु गुरु युत दृष्ट हो तो केवल मलावरोध कोष्ठबद्धता की शिकायत रखता है।

—दे० श० त्रिवेदी

कुछ प्रधान नगरोंमें 'श्रीस्वाध्याय' मिलनेके स्थान

दिल्ली—(१) श्री पण्डित दयानन्दजी जोशी समोसागली
(२) नारायणदास जयदयालमल बुकसेलर दरीबा

बम्बई—भावीरुख कार्यालय राममन्दिर बिडिङ्ग, कालबा-देवी रोड

कानपुर—बम्बई पुस्तक ऐजेन्सी चौकबाजार

भरतपुर—डा० आर० सी० गुप्ता गङ्गा मन्दिर

उज्जैन—श्री पं० रामचन्द्र जी त्रिवेदी मारुतीगंज

जयपुर—जैन न्यूज पेपर एजेन्सी जौहरी बाजार

आगरा—श्री पं० ज्योतिप्रसाद जी शास्त्री भैरोंनाला

मुरार—श्री पं० गंगाप्रसादजी ज्योतिषाचार्य

वृषभ लग्न जातक

[ले०—ज्योतिर्विशारद श्री नन्दकिशोरजी गर्ग]

वृषभ पृथ्वीतत्त्वकी स्थिर राशि है, इसका स्वरूप एक सुन्दर बैलका होता है। इसका निवास पर्वतपर होकर यह वन उपवनमें विचरण करती है। यह पृष्ठोदय एवं रात्रि बली राशि है। 'कालपुरुष' के मुख व गर्दनपर इसका शासन है। इस लग्नमें उत्पन्न जातकपर इसके गुण धर्मका स्वाभाविक प्रभाव दिखाई पड़ता है। इस राशिका पृथ्वीतत्त्व जातकके सरल व्यवहार, शांत-चित्तता, गम्भीरता में प्रकट होता है। धराकी धारणा, दृढ़निश्चय एवं सहन-शीलताके रूपमें झलकती है। प्रत्येक विचार एवं कार्यमें स्थायित्व होता है। कठोरता एवं कट्टरपन भी होता है, परन्तु नियमित एवं उचित परिमाण में।

स्थिरराशि होनेसे जातकके विचारों एवं कार्यप्रणाली में स्थायित्व होता है, विचार स्थिर होते हैं। एकबार काममें लगजाते हैं तो सरलतासे डिगाये नहीं जा सकते। चाहे वह कार्य फिर राष्ट्रनिर्माणका हो, युद्ध-संचालनका हो अथवा अन्य छोटी-मोटी व्यवस्था हो, हाथमें ले लेनेके पश्चात् उसे पूर्ण करके ही छोड़ते हैं। उन्हें अपने निश्चयसे डिगाना सरल बात नहीं है श्री W. j. Tucker ने लिखा है "Once they have set their hands to a plough, it would necessitate an earth-quack to remove them from a furrow." उन्होंने हल कन्धेपर रखा कि रखा, फिर भूचाल ही उन्हें अपनी लकीर से चाहे हटा सके।

पृथ्वीकी उदारता एवं प्रेमका प्रभाव भी कम नहीं [illegible]। जातक प्रेम तथा उदार व्यवहार करता है। पृथ्वी [illegible] नवम्बरसे अपनी ही ओर आकर्षित करनेकी उनकी [illegible] के समान प्रत्येक [illegible] सामग्रियोंको संगृहीत रखनेकी इच्छा मनोवृत्ति रहती है; [illegible] पड़नेका [illegible] स्वार्थपरायण रखते हैं। अशुभ ग्रह-दृष्टि; या स्थिति उन्हें [illegible] आकर्षित करनेके स्थानपर स्वयं आकर्षित हो बना देती है। आकर्षित करनेके स्थानपर स्वयं आकर्षित हो मायावी व प्रेमी स्वभावके हो जाते हैं। संसारका वैभव भोगनेकी इच्छा उन्हें संसारमें डुबोनेका प्रयत्न करती है। वृषभका स्वामी शुक्र है। अतः जातकमें सौन्दर्य प्रेम होता है। स्त्रियोंमें विशेष आसक्ति रहती है। कभी-कभी विषयी भी होते हैं। अपने काममें चालाक व होशियार होते हैं। छोटी-छोटी बातों पर भी लगन रखते हैं। इच्छित वस्तुको पाने में प्रपञ्च तक रच डालते हैं। स्थिर राशिका स्वभाव बुरे रूपमें हठी, अभिमानी हृदयमें खार रखनेवाला तथा कुटिल बना देता है। ऊपरसे दिखनेमें वे शांत व सरल दिखते हैं परन्तु वे बातको हृदयमें छिपा रखते हैं, तथा समय आनेपर उसका उपयोग करते हैं। वैसे प्रत्येक काममें बोलनेमें विचारमें सावधानी उनका मुख्य गुण है। वृषभका स्वरूप ऊपर सुन्दर बैलके समान कहा गया है। बैलके सीधे अनेकों गुण इस लग्न जातकमें दिखाई देते हैं। खिलाड़ी मनोवृत्तिके होते हैं। मित्रोंके साथ सच्चा प्रेम का व्यवहार करते हैं। अपना काम करते रहते हैं। आप उन्हें छेड़िये नहीं। सहनशील होनेके नाते थोड़ी-बहुत आर लगानेसे नहीं बिचकते। परन्तु सीमासे अधिक ताड़ना मिली तो क्षुभित होकर क्रोधित साँडका ही रूप धारण करते हैं। क्रोध उनका एकबार जाग्रत होनेपर सीमापर पहुँच जाता है। फिर तो ये विरोधी हलचल तनिक भी सहन नहीं करते। शरीरकी आकृतिमें ये मध्यम कदके ठिंगने मोटे होते हैं, गोल भरावदार चेहरा, मोटी गर्दन व बाल काले होते है, परन्तु मुख उदासी सा होता है, कारण यह कि पशु प्रवृत्ति अपना स्वभाव नहीं छोड़ती है। धारा हुआ काम करना, बदले लेनेकी भावना, क्रोध आनेपर सब कुछ भूल जाना, तथा स्वार्थपरायणता इसके परिचायक हैं।

मुंदन ज्योतिषमें यह राशि फ्रांस व इंग्लैंडसे सम्बन्धरखती है। वहांके लोगोंके एकन्दर सद्गुणोंपर विचार सामूहिक रूपमें किया जावे तो व्यापारी मनोवृत्तिके साथ इस राशिके अन्य उक्त गुणोंका प्रभाव दिखाई पड़ेगा। इन देशोंके निवासियोंमें निरन्तर श्रम, धैर्य व सफलता तक पहुंचनेकी धारणाशक्ति प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होती है। चाहे फिर कठिनाइयां कितनी ही क्यों न आवें, अथवा भयंकर आपत्ति टूटपड़े, वे पीछे कभी नहीं हटते। साथ ही अपने पर अन्यका

प्रभाव पड़ने देने अथवा अपने विचारों एवं स्वभावमें कोई परिवर्तन करनेके स्थानपर दूसरों को ही प्रभावित कर अपने विचारका बनानेका ही प्रयत्न करते हैं। इस प्रकार वैयक्तिक सामूहिक किसी भी रूपमें देखा जावे तो राशिके प्रभाव प्रकट होते हैं।

धन्धा एवं प्रवृत्तियाँ

इस राशिका अधिपति शुक्र प्राकृतिक शुभ ग्रह है। वह सुख एवं स्त्रीकारक माना गया है। आराम, संगीत, वाहन, सुन्दर वस्त्र, आभूषण, हीरे जवाहरात, सुगंधित-द्रव्य पर इसका शासन है; जीवनके यौवनकालका यह प्रतीक होता है। आनन्द, वैभव, कला, प्रेम, विवाह आदि सभी इन दैत्यराज शुक्रके आधीन हैं। अपने स्वामीके समान ही इस राशिके गुण होते हैं, जो इस लग्न जातकपर अपना प्रभाव बताते हैं। सुन्दर श्वेतरंग इसको प्रिय है। चन्द्र व बुधके सम्पन कोमल होनेसे पापग्रहोंकी युति अथवा दृष्टिसे शीघ्र प्रभावित हो शुभसे पाप होजाता है। शुक्राधिपत्यकी अन्य राशि तुला होनेसे उक्त प्रभाव उनपर अधिक होते हैं। वृष स्थिर होनेके नाते इतनी सरलतासे तथा शीघ्र नही हो पाते।

इसका मित्र बुध धन व पंचम का अधिपति होनेसे व्यापारी मनोवृत्ति व धन एकत्र करनेकी भावना—जिसे बनिया बुद्धि कहिये—जातकमें उत्पन्न करता है। उक्त वस्तुओंपर शासन होने, सौन्दर्यसे प्रेम होने तथा स्त्रियोंमें विशेष आसक्ति रहनेसे शुक्र उक्त वस्तुओंका व्यवसाय जातकको प्रदान करता है। इसका जातक रेशमी तथा सुन्दरवस्त्र, हीरे जवाहरात तथा स्त्रीशृंगारकी अन्य आवश्यक वस्तुओं का व्यापार करता है। सुगंधका प्रेम होनेसे इत्र बेचने वाले भी होते हैं, पृथ्वीतत्वकी वन उपवन एवं पर्वतचारी राशि होनेसे प्राकृतिक वस्तुओंका निरीक्षण, भूमिका ज्ञान देकर व्यवसाय, खेती, कुम्हारी, अमलदारी आदि धंधे देती है। बुधकी शुभ स्थिति तथा शुभकी दृष्टिमें होना जातकको विद्वान् लेखक उपदेशक अथवा धर्मगुरु बनाती है। वृषभ लग्न जातकके लिये शुभ ग्रहोंके वर्णन में महर्षि पाराशर लिखते हैं—

जीवशुक्रेन्दवः पापाः शुभौ शनिशशीसुतौ।
राजयोगकरः साक्षादेक एव रवेः सुतः॥

अर्थात् गुरु, शुक्र एवं चन्द्र पाप (मध्य. पारा. श्लो.६) ग्रह हैं, शनि बुध शुभ ग्रह हैं। केवल एक शनि ही राजयोगकारक है। शनि भाग्य व कर्मका अधिपति होनेसे ही राजयोगकारक कहा गया है। यह ग्रह जनतंत्र, निम्नवर्ग, न्याय व विधानका माना गया है। इसके लग्न वा बुधसे संबंधित होने पर यह जातककी सांपत्तिक सुखकी भावनाओंका अवरोधक बन जीवनको नियमित बनाता है। इसके प्रभाव से जातक तर्कशास्त्री, वकील, सुन्दर भवनोंका इजीनियर आदि काम करता है। अच्छा नियमानुसार विवेकसे बोलने वाला तथा शास्त्रार्थमें निपुण होता है।

शरीर पर प्रभाव रोग व मारक विचार—

कालपुरुषके मुख एवं गर्दनपर इसका प्रभाव है, दाहिनी आंख, कान, कंधा तक इसका विस्तार कहा जाता है, अतः इन्हीं स्थानो संबंधी रोगोंकी संभावना करती है। दांत, तलुवे, तथा ध्वनियंत्रमें रोगोपद्रव होता है। खांसी, कंठ-माल आदि रोग होते हैं। मस्तिष्कका पिछलाभाग भी इसी कोटिमें आजाता है जो मानसिक रोग तथा ज्ञानतंतुओंकी क्षीणता उत्पन्न करता है। गुह्य स्थानोंका स्वामी होनेसे शुक्र अशुभ प्रभावसे मूत्राशयमें पीड़ा, मधु प्रमेह, तथा पृथ्वीतत्वके अनुसार पथरी आदि रोगोंका कारण बन जाता है। अथवा अधिक विषयभोगसे इंद्रियोंके रोग भी उत्पन्न हो जाते हैं। रात्रि बलि राशि होनेसे जातकको रोगी दशामें रात्रिमें ही विशेषकर कष्ट होता है।

मारक विचारमें श्री पाराशरजीने लिखा है—

"जीवादयो ग्रहाः पापाः सन्ति मारकलक्षणाः।"

यानी गुरु शुक्र व चन्द्र मारक होते हैं, इनमें भी यदि मंगल व केतु कर्क सिंह, कुंभ अथवा मीनमें होते हैं तो मारक होते हैं। क्योंकि इन्हीं स्थानोंसे लग्न एवं मारक स्थानोंपर दृष्टि पड़ती है। गुरु मिथुन तुला वृश्चिक अथवा मेषमें मारक होता है। चन्द्र राहु भी मारक होते हैं, परन्तु धनु, सिंह, मकर, व कन्यामें स्थित होनेपर मारकत्व नहीं पाते।

अशुभदशान्तर्दशा

इस लग्न जातकके लिये चन्द्र राहु गुरुकी महादशामें स्वभुक्ति अथवा राहु मंगल, केतु और सूर्यकी भुक्तियां अशुभ फल देती हैं। वैसे उक्त पाप ग्रहोंकी महादशा कष्टकारक ही होती है।

माता की मृत्युः—

चन्द्र महादशामें सूर्य शुक्र राहु सूर्यमें शुक्र गुरु राहु; राहुमें बुध शनि चन्द्र तथा मंगलमें गुरु शुक्रके अंतर कष्टकारक या मृत्युकारक होते हैं।

पिता—

सूर्य महादशामें शनि गुरु व बुध; राहुमें शनि शुक्र; शनिमें गुरु बुध शुक्र, बुधमें शनि चन्द्र शुक्र तथा चन्द्रमें रवि शनि व बुधके अंतर पिताके स्वास्थ्यको हानि पहुंचाते हैं। मारकत्व प्राप्त होनेपर मारक भी हो जाते हैं। इसी प्रकार भाई एवं बहिनोंके लिये—चंद्र व मंगलमें शुक्र शनि व राहु के अंतर; बुधमें मंगल बुध व शनिके अंतर कष्टदायक कहे हैं। इन भुक्तियोंमें पराक्रम भी शिथिलता पाता है। यात्राएं कष्टप्रद होती हैं। भावों के अधिपतित्वकी दृष्टिसे और भी अनेकों योग निर्धारित किये जा सकते हैं, परन्तु येही पर्याप्त नहीं। मारक निर्णयका काम इतना सीधा नहीं, उसमें प्रधानवस्तु तो गणककी प्रज्ञा, विवेक, शास्त्र ज्ञान तथा अनुभवपर निर्भर है। उक्त योगायोग तो निरीक्षणकी परिपाटीका आधारमात्र मानना चाहिये। सीधे प्रयुक्त होनेपर इनका फल वास्तविक रूपमें प्रकट होना संभव नहीं; वरन् मिथ्यात्वकी ओर जावेगा।

भाग्योदयः—

वृषभ लग्नजातकको २६ वर्षसे शुक्र भाग्योदयकारक होता है। परन्तु फलोंको राजयोगकारक शनि ३६वें वर्षसे ही परिपक्वता देता है। हाँ, दशा इसके पूर्व आनेपर इसके पूर्व भी अच्छा उदय हो सकता है। बुधकी शुभस्थिति ३१वें के पश्चात्से ही उन्नति आरंभ कर देती है। जीवनस्तर भी उठ जाता है। यदि सूर्य तुला गत हुआ तो २२वें वर्षमें माता अथवा स्वयंके सुखोंको कष्ट एवं हानि पहुंचती है। दशाओंपर दृष्टि डालें तो बुधमें शनि राहु व शुक्रांतर; शनिमें सूर्य मंगल व गुरुको छोड़कर शेष अंतर; मंगलमें शनि केतु व सूर्य अंतर और शुक्रमें सूर्य बुध व शनि अंतर जातकको धन, यश, पराक्रम तथा भाग्योन्नति आदि शुभफल देते हैं।

वृषभ लग्नकी स्त्रियां

इस लग्नमें उत्पन्न हुई स्त्रियोंमें उक्त राशि सम्बन्धी गुण वस्वभाव तो होता ही है, साथ ही वे नम्रस्वभाव, शांत, मीठी हंसी करनेवाली, मुखपर आनन्द धारण करनेवाली, मनहरण, स्वजनबन्धुओं पर प्रेम करनेवाली, शिल्प कुशल, एवं गृह प्रवन्धमें चतुर होती हैं। विनय, विवेक, धार्मिकता, शास्त्रानुसरण आदि गुण भी पाए जाते हैं। अर्थसंग्रहकी विशेष प्रवृत्ति रहती हैं। कन्या संतति अधिक होती है।

अभी-अभी एक लेख ज्योतिष व Handwriting हस्ताक्षर पर मैंने पढ़ा और अनुभव किया तो निम्न बातें स्पष्ट प्रतीत हुई। इस लग्नका जातक छोटे परन्तु जाड़े अक्षर लिखता है, हासिया (मार्जन) छोड़ना भी वह कागजका अपव्यय समझता है, पंक्ति समाप्त होनेपर यदि शब्द अधूरा रह जाय तो—रेखांकित कर दूसरी पंक्तिपर लिखनेके स्थानपर अंतिम सिरे तकअक्षर ठूंसे जाता है। विशेषकर अंतिम अक्षर मोटा होता है। अनुस्वार आदिक इनके विराम जैसे पूंछदार होते हैं। रकार का डंडा अथवा ए ऐ की मात्रायें मोटी तथा घुमावदार होती हैं। इस लग्नके सभी वर्गमें सुन्दर कागजपर लिखनेकी इच्छा होती है जो शुक्र का ही प्रभाव कहना चाहिये। अक्षर सुन्दर न भी हों तो भी सुन्दर बनाने का ध्यान रखता है तथा प्रयत्न करता है।

मित्रता

इस लग्नवाले के लिए, कन्या, कुंभ, मकर आदि राशियोंसे संबंध भागीदारी अच्छी रहती है। वैश्य, शूद्र व यवन जाति से लाभ होता है। अगहन (मार्गशीर्ष) मास कष्टकारक रहता है। वैशाख, ज्येष्ठ, भाद्रपद, कार्तिक, पौष मास शुभ होता है। तिथियोंमें ५-१०-१५ तिथि मंगलवार अशुभ होते हैं। दोनों एकदिन हों तो उस दिन सावधानी रखना चाहिये। इस लग्नके जातक विशेषकर मनमौजी मसखरे व मीठी हंसी करनेवाले सौंदर्य व स्त्रीके प्रेमी होते हैं। कई एक तो दो स्त्रियां भी रखते हैं। यदि चन्द्र अथवा सूर्य भी वृषभमें हो तो उक्त प्रभाव विशेष पाया जाता है।

अनुभूत योगमाला का २८ वें वर्ष क
अद्भुत अद्वितीय विशिष्ट विशेषांक
"जीवोपयोगांक"

—::००::—

'जीवो जीवस्य जीव'

जीवों के द्वारा ही जीवों की उत्पत्ति, भरण, पोषण होता है, यह प्रत्यक्ष देखने को मिलता है। जन्मादि से लेकर मरण पर्यन्त हमें जीवोंकी ही सहायता अभिप्रेत होती है। जीव द्वारा ही शुक्र कीटसे ही उत्पत्ति क्रम चलता है। जन्म लेकर माता द्वारा प्रयुक्त दुग्धादि से तथा गौ बकरी भैंस के दूध से बल पुष्टि प्राप्त होती है कहाँ तक कहें अन्नादि जो वनस्पतिकवर्ग हैं उनमें भी जीवत्व है और वही हमारे शरीर साधक हैं। अतः उपरोक्त श्रुति अक्षरशः सत्य घटित हो जाती है।

सपुमाँश्चेतनं तच्च तच्चाधिकरणं मतम्। (चरक) मनुष्य चेतन है उसके लिये चेतन द्रव्यों का ही उपयोग होना चाहिये (द्रव्य दो प्रकार के होते हैं सेन्द्रिय और निरेन्द्रिय) यह द्रव्य जंगम औद्भिद पार्थिव, जाति के तीन तरह के होते हैं।

जङ्गमों से हमें मधु, दूध, दही, मट्ठा, मक्खन, घृत, पित्त, वसा, मज्जा, रक्त, माँस, मल, मूत्र, चमड़ा, वीर्य, अंडा, हड्डी, स्नायु, सींग, खुर, नख, बाल, पंख, रोचन, मोती, मूंगा, कोड़ी, सीप, शख, शम्बूक, अम्बर आदि मिलते हैं। इनका उपयोग प्रति दिन हमारे काम में आता है। कहा भी है—कुछ द्रव्य दोष प्रशमन में, कुछ धातु प्रदूषणमें कुछ स्वास्थ्य वर्धनमें काम आते हैं। हम चाहते हैं कि इन्हीं समस्त वस्तुओं का उपयोग एक स्थान पर मिल सके ताकि चिकित्सकों के काम आवे। वेक्ट्रोलोजी का आधार भी प्राणीवर्ग ही है। अतः इस तरफ वैद्यों का ध्यान आकर्षित किया जाय और वह अपने नवीन अनुभव लिखें, कुछ पुस्तकों से संग्रह करें। हम नीचे एक तालिका देते हैं, आप किस पर अपना लेख देंगे सूचना दें। जिन २ विषयों पर लेखकों की स्वीकृति आजावेगी वह उन्हीं के लिये सुरक्षित (रिजर्व) रहेंगे शेषके लिये अन्योंको लिखा जावेगा या सम्पादक स्वयं पूर्ति करेगा। यह विशेषांक "न भूतो न भविष्यति" की कहावत चरितार्थ करेगा और बड़ा भी बहुत होगा। अतः लेखकों को तथा ग्राहकों को उत्साह से कार्य लेना चाहिये। और ग्राहकजन दो-दो चार-चार ग्राहक बढ़ानेकी दया करें ताकि इस महान् अंक का व्यय निकल सके और हम अपने मनमाने ढंग से निकाल आपको संतुष्ट कर सकें। अभी से अपने कर्तव्य का परिचय देना आरम्भ कर दें।

गौका—दुग्ध, दही, तक्र, मल, मूत्र, पित्त, खुर चमड़

दांत, सींग।
भैंस—दुग्ध, दही, तक्र, मल, मूत्र, पित्त, खुर; चमड़ा।
बकरी—दुग्ध, दही, तक्र, मल, मूत्र, पित्त, खुर, चमड़ा।
घोड़ी—दूध मल मूत्र पित्त खुर दांत।
हाथी—दूध मल मूत्र दांत।
ऊंट—दूध मूत्र दांत नाक का कीड़ा।
गधी—दूध मल मूत्र दांत।
कुत्ता—दूध दाँत जीभ।
सूकर—दूध, दांत पित्त।
शेरनी—दूध, मांस, बाल।
बिल्ली—बाल, दांत, विष्टा, हड्डी।
लोमड़ी—मांस
स्यार—हड्डी, वसा।
बन्दर—मांस, वसा।
हिरन—माँस, चमड़ा।
चूहा—मांस, विष्टा।
गिलहरी—रक्त।
छिपकली—मांस
चमगादर—मांस।
कबूतर—मांस विष्टा।
चटक—(घर की चिड़िया) मांस भेजा।
मक्खी—विष्टा।
चींटा—माँस।
चींटी—माँस।
मुर्गा—मांस, अण्डा।
तीतर—माँस।
लवा—मांस।
बटेर मांस।
महुवा—मांस।
धनुष—वसा
पोलीं—वसा।
गीध—हड्डी, थैली।
बगला— पर, हड्डी।
मेंडक—मूत्र।
मछली—मांस पित्ता
खटमल—रक्त
आककाटिड्डा—मांस।
मगर—मांस, अंडा।
काष्टमार्जारिका—मांस।
सांप—मांस, हड्डी, विष।
बिच्छू—मांस।
छछून्दर—मांस।
बर्र—मांस, छत्ता।
तेलिनी—मांस।
छबूदा—मांस।
दीमक का बादशाह—मज्जा।
बाज—मांस।
मछली—मांस, पित्ता।
रोहू मछली—मांस, चमड़ा।
गोबर का कीड़ा—मांस।
शंख का कीड़ा—मांस।
शम्बूककीट—मांस।
कछवा—मांस, हड्डी।
सीप— ,,
कपर्द— ,,
शख— ,,
मूंगा— ,,
मोती— तार
अम्बर— ,,
संगसरेमाही—मछली के दांत।
रेगमाही—मांस।
मोर—मांस, पित्ता।
गोह—मांस।
मकड़ी का—जाला।
शहद की मक्खी—मांस, शहद, मोम।
बीरबहूटी—मांस।
केंचवा—मांस, मल।

नोट—और भी अवशिष्ट विषयों की सूची आदि बढ़ाकर लिखने की दया करें, सम्भव है अज्ञानतावश उपयोगी जीव व उनके अवयव छूट गये हों।

सम्पादक—'अनुभूत योगमाला' बरालोकपुर (इटावा)

श्रीस्वाध्यायके संरक्षक—



श्रीमान् चौधरी साहब गगनसिंहजी रईस

जण्डवाल (होशयारपुर)

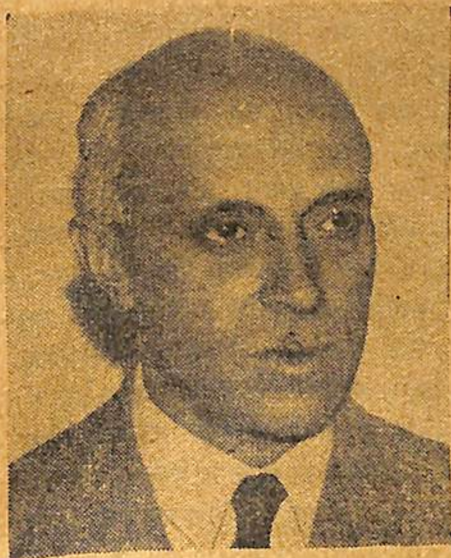
आप जण्डवालके सुप्रसिद्ध रईस स्व० रायसाहब श्री चौ० अत्तरसिंहजीके ज्येष्ठ सुपुत्र हैं। अपने स्वर्गीय पिताके समान ही आपमें उदारता, सच्चरित्रता, धार्मिकता, गुरुजन-सेवा, साहित्यप्रेम आदि सद्गुण विद्यमान हैं। अभी गत ज्येष्ठमासमें 'श्रीस्वाध्याय' के सम्मान्य सहायक श्रीमान् कुं० शिवसिंहजी सेशनजज महोदयकी आयुष्मती अ० सौ० कु० श्री इन्दुमती के साथ आपका पाणिग्रहण संस्कार सानन्द सम्पन्न हुआ था। इस नौवें वर्षसे आपने 'श्रीस्वाध्याय' का संरक्षकत्व स्वीकार कर महान् सुकार्य किया है। आप जैसे होनहार नवयुवा दम्पतिको ईश्वर चिरजीवी एवं यशस्वी करे यही हमारी मङ्गल कामना है।

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र

मंगल-शनि युद्धका संसार पर प्रभाव

श्री पं० नेहरूजी और श्री डा० राजेन्द्रप्रसादजी का वर्षलग्न

—श्री हरदेवशर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य—


श्री नेहरूजी


श्री डा० राजेन्द्रप्रसादजी

'श्रीस्वाध्याय' के प्रत्येक अङ्कमें हम उक्त शीर्षकसे ज्योतिर्विज्ञानके आधार पर देश-विदेशकी राजनैतिक सामाजिकादि सामयिक-घटनाओं पर प्रकाश डालते रहे हैं। पाठकोंने भी इस वैज्ञानिक लेख पर अत्यधिक रुचि दिखाई है। अनेक महत्त्वपूर्ण घटनाओंके अक्षरशः सत्य-प्रमाणित होनेसे सर्वसाधारण जनताके अतिरिक्त भारतीय ज्योतिर्विज्ञान पर श्रद्धा न रखने वाले महाशयोंका ध्यान भी इस ओर आकर्षित हुआ है। स्व० श्री महात्मा गांधीजीके देहावसान और मि० जिन्नाहकी आकस्मिक मृत्यु का समय 'श्रीस्वाध्याय' के इन्हीं स्तम्भोंमें लिखे अनुसार सत्यप्रमाणित हो चुका है। अभी गताङ्कमें हमने स्वतन्त्र-भारतके तीसरे वर्षलग्न पर अपने विचार व्यक्त किये थे, वहाँ पृष्ठ १६ पर स्पष्ट लिखा है कि—"किसी भारतीय महापुरुष और सेनापति के लिए अपघात योग भी बन रहा है, सावधान रहें।" तदनुसार अभी गत सितम्बर मासमें ही काश्मीरके प्रधान सेनापति मेजर जनरल आत्मासिंहकी मोटर दुर्घटनासे मृत्युने इस घटनाको भी सत्प्रमाणित कर दिया है। हमें सन्तोष है कि भारतीय पत्रकारोंका ध्यान भी अब ज्योतिर्विज्ञानकी ओर आकर्षित होने लगा है। 'श्रीस्वाध्याय' के गताङ्कमें प्रकाशित "स्वतन्त्रभारतके तीसरे वर्षलग्नका दिग्दर्शन" शीर्षक हमारे लेखको हिन्दुस्तान, अर्जुन, नवभारत, विश्वमित्र, सन्मार्ग, भारत, हिन्दी-मिलाप, नवयुग, देशदूत, कर्मवीर, स्वराज्य, श्रीवेङ्कटेश्वर-समाचार आदि-आदि अनेकों सुप्रसिद्ध दैनिक साप्ताहिक पत्रोंने अपने १५ अगस्तके विशेषाङ्कोंमें उद्धृत करके 'श्रीस्वाध्याय' के साथ

ही ज्योतिर्विज्ञानके गौरवको भी बढ़ाया है।

आने वाले ग्रहयोग

इन तीन मासोंमें विशेष महत्त्वका योग सिंहराशि में शनि-मंगलका युद्ध (युति) है। मार्गशीर्ष शु० ११ गुरुवार ता० १ दिसम्बर १९४९ ई० को इन दोनों संहार-प्रिय ग्रहोंकी अंशात्मक युति हो रही है। शनि-मङ्गल परस्पर 'अहिनकुलं' की भांति वज्र वैरी हैं। शनि कृष्णवर्ण प्रधान और मङ्गल रक्तवर्ण प्रधान ग्रह हैं। कृष्ण वर्ण दूसरोंको हानि, परद्रव्यापहार आदि दोषोंका द्योतक है। समस्त भूमण्डलमें काला रङ्ग विनाशकारक अशुभ रूप माना गया है। इसी कारण काले रङ्गके जितने भी कार्य हो सकते हैं वे सब स्वभावतः प्रायः शनिमें निवास करते हैं। पापग्रहोंमें शनिको इसी कारण मुख्य स्थान प्राप्त है। मङ्गलका वर्ण रक्त है, यह वर्ण क्रोधका द्योतक है, युद्धादि क्रोधके बिना हो नहीं सकते। इसी कारण रक्त-वर्ण, रक्तपात, अपघात, युद्ध रोग आदिका द्योतक है। पापग्रहोंमें इसका (मङ्गलका) दूसरा स्थान है, कारण रक्त-वर्णका परिमाण अत्यन्त बढ़ जाने पर काले रङ्गमें परि-णत हो जाता है। विनाशकारक कार्योंका प्रारम्भ सूचक रक्तवर्ण है, किन्तु इसको पूर्णतामें पहुँचाने वाला कृष्ण-वर्ण ही है। यहाँ रक्त और कृष्ण (मं० श०) का युद्ध अग्नितत्त्वात्मक सिंहराशिमें भयानक रूप से हो रहा है। यह संसारके लिए अनिष्टप्रद ही है। इस युतिका प्रभाव लगभग दो वर्ष तक रहेगा।

मङ्गल-शनि युतिका फल

सिंह कन्या मकर कुम्भ और वृष लग्न तथा राशि वाले व्यक्तियों, राष्ट्रों और वस्तुओं पर इस युतिका बुरा प्रभाव पड़ेगा। इन राशि वाले व्यापारियोंको बहुत साव-धानीसे काम करना चाहिए। आधिदैविक आधिभौतिक उपद्रव अधिक होंगे। कहीं भयानक अग्निकांड यान-दुर्घटना भूकम्प वा विस्फोटसे धन जनकी क्षति होगी। प्रजामें असन्तोष, दुर्भिक्ष, सन्ताप, क्षोभ, घरेलू झगड़े, साम्प्रदायिक संघर्ष और सेना सम्बन्धी उलटफेर अधिक होंगे। संसारके किसी प्रधान राजपुरुषकी मृत्यु होना भी सम्भव है। किसी प्रदेशमें शीत अधिक पड़ने और कहीं-कहीं वर्षाकी न्यूनता और कहीं अधिक वर्षा, हिमपात आंधी तूफान आदिसे खेतीमें बहुत हानि होगी। बड़े छोटे राष्ट्रोंमें पारस्परिक कलह, असन्तोष, युद्धभय और आतङ्क बढ़ेगा। सिंह राशिमें यह मंगल-शानिका युद्ध हो रहा है। सिंह शासक क्षत्रिय राशि है, एतदर्थ क्षत्रिय जातिके शासक, सामन्तवर्ग जागीरदार जमींदार और प्रजावर्गमें साधारणतः यत्र-तत्र और विशेषकर राजस्थानमें क्रांति वा अराजकता जैसी स्थिति उत्पन्न होगी। निरपराधोंकी हत्या और लूटमार अधिक होगी। पंजाबके मंत्रिमण्डलमें परिवर्तन होगा और भाषा समस्या उग्र साम्प्रदायिक रूप पकड़ेगी। पूंजीपति और श्रमजीवियोंमें पुनः संघर्ष होकर गत्यवरोध उत्पन्न होगा। चीन, बर्मा, इटली, फ्रांस, ईरान, क्रीमिया, प्रशिया, रूस, स्वीडन, अफ्रीका, टर्की, अरब, इंगलैंड, आस्ट्रेलिया, स्पेन, हिन्देशिया, पाकिस्तान और भारतमें बंगाल, बिहार, आसाम, बम्बई, मद्रास, दिल्ली पूर्वीपंजाब, काश्मीर, मालवा तथा राजस्थानमें अवाञ्छ-नीय प्रसंग उपस्थित होकर अशांति बढ़ेगी। दिसम्बरसे काश्मीरमें शत्रुकी ओरसे पुनः गड़बड़ी और अशान्ति फैलानेके प्रयत्नोंसे आगे भारत पाकिस्तानके सम्बन्ध बहुत बिगड़ जायेंगे। इस युद्धमें मंगल बलवान् मित्रराशिका है और शनि निर्बली शत्रु राशिमें, अतः अन्ततोगत्वा आर्योंकी विजय और अनार्य म्लेच्छ यवनादिकोंकी पराजय अवश्य-म्भावी है।

अन्न समस्या और आर्थिक संकट

गताङ्कमें हम इस वर्षके आर्थिक संकट और अन्नकी कमीका उल्लेख कर चुके हैं। इन तीन मासोंमें भारतकी आर्थिक स्थिति सुधरने और अन्न भाव युद्धपूर्व स्थितिमें आनेका योग नहीं है। सरकारकी ओरसे अन्न वस्त्रादिके भाव घटानेका प्रयत्न होगा, किन्तु सर्वसाधारण जनताको इससे विशेष लाभ न हो सकेगा। कार्तिक कृष्ण ८ को सिंह राशिमें मंगल जा रहा है। आगे कार्तिक शु० ११ को पूर्वाफाल्गुनीके चतुर्थ चरणमें शनि प्रवेश करेगा, गुरु नीचराशिमें आ गया है और कार्तिक शुक्ला पूर्णिमाको अश्विनी भरणीका सम्पर्क तथा पौषी अमावास्याको ज्येष्ठाका

योग अन्नकी महर्घता, प्रजामें असन्तोष, राज्यविग्रह और उत्पात सूचक है। यथा—

यदा सिंहगतो भौमः कांचनं रौप्यताम्रकम्।
सर्वे रक्तवस्त्राणि भवन्ति हि महार्घता ॥
पूफा चतुर्थपादे च भ्रमति भानुजो यदि।
गजोष्ट्रं नाशमायान्ति नृपाणां विग्रहो भवेत् ॥
तथैवाग्निभयं याति तूलभाण्ड महर्घता।
जन्तवश्च प्रणश्यन्ति पीड्यन्ते जनबालकाः ॥
अथवा भरणी सर्वा कार्तिक्यां भवति ध्रुवम्।
दुर्भिक्षं जायते घोरं तथा रोगा भवन्ति हि ॥
तस्यामेवाश्विनी योगे सस्य सम्पन्न मध्यमा।
पोषस्य यद्यमावास्या ज्येष्ठा नक्षत्रसंयुता ॥
तदा सस्य महर्घत्वम् ....।

श्रीनेहरूजी का ६१ वां वर्ष

मार्गशीर्ष कृष्ण ११ बुधवार ता० १६ नवम्बर १६४६ ई० को इष्ट घट्यादि १४।२१ पर मकर लग्नमें प्रधानमंत्री श्री पं० जवाहरलालजी नेहरूको ६१ वाँ वर्ष प्रवेश हो रहा है। इस शुभावसर पर हम श्रीस्वाध्याय-परिवारकी ओर से आपका हार्दिक अभिनन्दन करते हुए दीर्घायुकी मङ्गल कामना करते हैं।

वर्ष लग्नम्



इस वर्षमें श्री नेहरूजीके लिए जहाँ सूर्य बुध गुरु राहु साहस शौर्य नीतिनैपुण्य और विश्वमें सम्मान बढ़ाने वाले हैं वहाँ लग्नेश शनिका मंगलके साथ अष्टममें जाना, मुंथाका सप्तम और मुंथेश चन्द्रमा का राहुपुच्छमें जाना एवं राज्येश शुक्रका व्ययमें जाना भी चिन्तासे खाली नहीं है। राज्येश व्ययमें और षष्ठेश बुधके राज्यमें होनेसे इस वर्षमें आपके शासनमें शत्रुओं द्वारा घोर बाधाएँ उत्पन्न की जावेंगी। अनेक विषम समस्याओंसे टकराते हुए आपको शासन-शकटको पार लगाना होगा। शनि धनेश भी है अतः भारतका आर्थिक संकट आपके लिए विशेष चिन्ताका कारण बनेगा। मंगल शनिके कारण आपके स्वास्थ्यकी हमें विशेष चिन्ता है। वर्षके अष्टम मास और शनि मंगलकी दशामें रक्तप्रकोप अग्निभय यानदुर्घटना (एक्सीडेण्ट) वा प्रहारकी भी सम्भावना है, अतः उस समय विश्वकी इस अमूल्य निधि को विशेष सुरक्षित रखनेकी आवश्यकता है।

रक्तपित्तप्रकोपश्च महापीड़ा धनव्ययः।
विपत्तिरिष्टवर्गस्य अष्टमस्थे धरासुते ॥
भौमेऽष्टमे भयं वह्नेः प्रहारो वा नृपाद्भयम्।

अरिष्टग्रहोंका परिहार—

इस वर्ष श्रीसरदार पटेलके लिए भी कुछ ऐसे ही अरिष्टप्रद योग बने थे। गतवर्ष इन्हीं दिनों हमने अपने सं० २००६ के 'श्रीविश्वविजय पञ्चाङ्ग'में श्रीसरदार पटेल के लिए लिखा था कि—

"वैशाखसे भाद्रपद (२००६) तकका समय सरदारके स्वास्थ्यके लिए चिन्तासे खाली नहीं है।"

तदनुसार इसी अवधिमें श्री सरदारका स्वास्थ्य बिगड़ा और उन्हें उपचारके लिए बम्बई जाना पड़ा, यह सर्वविदित ही है। उसी समय श्री १०८ गो० गणेशदत्तजी महाराजकी सत्प्रेरणासे श्री सरदार पटेलने श्रद्धापूर्वक अनुष्ठानका सङ्कल्प दिया और श्रीलक्ष्मीनारायण मन्दिर नई दिल्लीमें आपकी अरिष्टनिवृत्ति एवं दीर्घायुः प्राप्तिके लिए श्रीगोस्वामीजीके तत्त्वावधानमें ही विद्वान् ऋत्विज ब्राह्मणों द्वारा प्रयोग आरम्भ हुआ। पूर्णाहुतिके साथ ही श्री सरदारका स्वास्थ्य भी उत्तरोत्तर सुधारकी ओर जाने लगा और भाद्रपद समाप्तिके अनन्तर आश्विनमें वे दिल्ली पहुँच गये, यह भी सर्व विदित ही है। यदि इसी प्रकारका प्रयोग और ११ लक्ष श्रीमहामृत्युञ्जय जप श्री नेहरूजीसे श्रद्धापूर्वक सङ्कल्प लेकर करवा दिया जाये तो हमें विश्वास है कि पण्डितजीके सभी अरिष्ट निवृत्त होंगे और वे अपने अदम्य उत्साह तथा अलौकिक प्रभावसे विश्वका कल्याण कर सकेंगे। क्योंकि पण्डितजीकी जन्मकुण्डलीमें राज्ये—

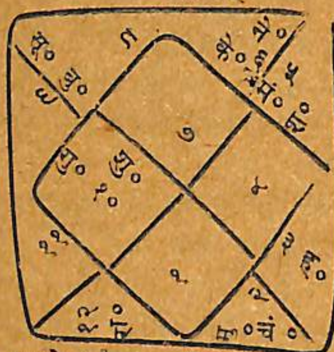
कारक मंगलकी ७ वर्षकी महादशा १९५२ तक चलेगी। शनिका अन्तर भी समाप्त प्राय है, अतः वर्षके अरिष्टयोग उचित उपायसे शान्त हो सकते हैं।

पण्डितजीकी जन्मकुण्डली और वर्षकुण्डली पर यदि भारतीय ज्योतिर्विज्ञानके विशेषज्ञ महानुभाव अपने विचार भेजेंगे तो हम आगामी अङ्कमें उन्हें भी प्रकाशित करेंगे।

श्री डा० राजेन्द्रप्रसादजीका ६६ वां वर्ष

मार्गशीर्ष शुक्ला १४ रविवार ता० ४ दिसम्बर १९४९ ई० को इष्टघट्यादि ५४।२१ पर तुला लग्नमें माननीय महामनीषि श्री डा० राजेन्द्रप्रसादजीको ६६ वाँ वर्ष प्रवेश हो रहा है, इस शुभावसर पर हम आपका हार्दिक अभिनन्दन करते हुए राष्ट्र कल्याणके लिए कामना करते हैं।

वर्ष लग्नम्



हमने अपने वर्तमान वर्षके 'श्रीविश्वविजयपञ्चाङ्ग'-में गतवर्ष इन्हीं दिनों श्री डा० राजेन्द्रबाबू की जन्म कुण्डली पर विचार करते हुए पृष्ठ ७ पर लिखा था कि—

"सं० २००२ से आपको लग्नस्थ राज्येश बुधकी महादशा प्रारम्भ हुई है। यही बुध आपके जीवनमें सर्वाधिक सम्मानकारक है।"

अब प्रवेश होने वाला यह ६६ वाँ वर्ष भी आपके लिए विशेष राजयोगकारक आ रहा है। इस वर्षमें इक्कबाल योग पड़ा है—

चेत्कण्टके पणफरे च खगासमस्ताः।
स्यादिक्कवाल इति राज्यसुखाप्ति हेतुः॥

उधर जन्ममें बुध महादशामें शुक्रान्तर सं० २००७ के फाल्गुन २७ तक रहेगा। अभी कार्तिक ६ से फाल्गुन २२ सं० २००६ तक गुरुका प्रत्यन्तर रहेगा। गुरु आपका लग्नेश चतुर्थेश होकर भाग्यमें पड़ा है। और वर्षकुण्डली में गुरु शुक्र केन्द्रस्थ होकर राज्यको देख रहे हैं अतः इस अवधिमें राज्यका महान् उत्तरदायित्व आप पर आयेगा। आपकी जन्म और वर्ष लग्नकी ग्रहस्थितिको देखते हुए ज्योतिर्विज्ञानके आधार पर हम कह सकते हैं कि स्वतन्त्र-भारतके सर्वप्रथम प्रधान या राष्ट्राध्यक्षके गौरवपूर्ण पद पर जनता आपको ही अभिषिक्त कर दे तो कोई आश्चर्य नहीं। भले ही चन्द्रमाके कारण आप इस पदको अस्वीकार कर दें। जन्मकुण्डलीमें श्रीराजेन्द्र बाबूको उच्चका चन्द्रमा छठे है और वर्षमें राज्येश होकर उच्चका चन्द्र अष्टम पड़ा है यह आपको राज्यसुखोपभोगमें प्रवृत्त न करके साधुस्वभावानुसार निर्लिप्त रखता हुआ अन्तर्मुखी प्रवृत्तियों को बढ़ाता है। चन्द्रमा और लग्नेश षष्ठेश इत्थशालयोग के कारण आपका स्वास्थ्य इस वर्षमें निर्बल ही रहेगा। गुरु चन्द्र केतुकी दशान्तर्दशाओं और वर्षके उत्तरार्धमें विशेष सतर्क रहना चाहिए। वहाँ श्वासरोग वात-व्याधि एवं उदरविकारकी सम्भावना है। लग्नेश मुन्थेश केन्द्रमें होनेके कारण विशेष चिन्ताका कोई कारण नहीं है। राष्ट्रके सम्बन्धमें विशेष विचार शीघ्र ही प्रकाशित होने वाले सं० २००७ के श्रीविश्वविजय 'पञ्चाङ्ग' में लिखे गये हैं।

चांदीका अनुभूत विचार

अक्टूबर ता० ४ से मंदी। ता० ७।८ घटाबढ़ी। ता० १७से बाजारमें सहसा तेजी होगी। रुई चांदी तिलहन अरण्डा लोहा शेअर्स सभीमें तेजी। ता० ३१ को भी तेजी का जोर रहेगा। ता० ७ नवम्बरसे पुनः मंदीकी रुख है। १६ और १९ नवम्बरको अधिक मंदी। ता० १।६ और २७ दिसम्बरको तेजी। ता० १ जनवरीसे घट-बढ़, बाजारका रुख पलट जायगा। ता० १४ जनवरीको पुनः तेजी।

—एक अनुभवी दैवज्ञ

ज्यौतिषकी कुछ अनुभूत बातें

(श्री रमानन्द शास्त्री सारस्वत साहित्यरत्न)

ज्योतिःशास्त्र अनन्त समुद्र है, और इसका पार पाना नितान्त कठिन है; फिर भी तीरवर्ती मनुष्य अनूकूल वायु के झोंकोंसे जिस प्रकार दो चार बूंदें अनायास पा लेता है, उसी प्रकार अनेक गुरुजनों, ज्योतिर्विद्यानुरागी परिजनों की कृपासे प्राप्त फलित सम्बन्धी कुछ बातें पाठकोंको बतानेका यत्न कर रहा हूँ; आशा है इनसे अधिकारी उचित लाभ उठायेंगे। क्योंकि "कालोह्ययं निरवधिविपुला च पृथ्वी।"

१. जन्मलग्नेश सूर्य या चंद्रसे युक्त हो तो दमा या खांसी की बीमारी होती है।
२. जन्मलग्नेश शुक्र शनिसे युक्त व मंगलसे दृष्ट होकर छठे स्थानमें स्थित हो तो निश्चित दिमाग कमजोर होता है।
३. एकादशेश लग्न सप्तम या तृतीयमें हो अथवा लग्नेश से युक्त शुभग्रहोंसे दृष्ट केंद्रमें हो तो व्यापारमें आशाजनक सफलता मिलती है।
४. वर्षमें जन्म राशिसे ७, ९, ६, ५, ११, वाँ बृहस्पति हो, सप्तमेश पञ्चममें या लग्नमें हो, वर्षेशसे इत्थशाल करता हो तो अवश्य विवाह का अचूक योग है।
५. वर्षमें ९ या ५में गुरु हो और जन्म राशिसे १, ५, ९ वाँ भी हो तो इस योगमें अवश्य गर्भधारणसे पुत्रोत्पत्ति ही होती है।
६. वर्षमें २ या ११ में शनि हो तो अफीम का व्यापार लाभदायक होता है।
७. जन्मलग्नसे आठवां वर्षलग्न हो, उस पर मंगल बैठा हो, और जन्मलग्नेश अस्त हो और मुंथा द्वादश हो तो अवश्य मृत्यु होती है।

शेष आगामी अंकमें

अर्श (बवासीर) के मस्सोंकी अनुभूत औषधि

(१) वार्कीया हरताल १ रत्ती

(२) नीला थोथा ६ रत्ती

इन दोनों वस्तुओंको मक्खनमें मिलाकर गुदामें लगावें, ऐसे तीन बार लगाने से मस्से निकल जाएंगे। इन मस्सों को रसौत ३ माशे, कीकर (बबूल) के पत्त ३ माशे में हल करके तेल में जलाकर ठण्डा होने पर घाव पर बांधे तो घाव अच्छा होगा। यह अनूभूत प्रयोग है। कई व्यक्तियों को इससे लाभ हुआ है।

—पं० दुलीचन्द शर्मा

लेखकों और ग्राहकोंका आवश्यक सूचना

प्रत्येक अङ्कके लिए लेख, प्रकाशित होनेकी तिथिसे दो मास पूर्व सम्पादकके पास पहुँचना आवश्यक है। कागजके दोनों ओर लिखे हुए और पेन्सिलसे या अस्पष्ट अक्षरोंमें लिखे हुए लेख प्रकाशित न हो सकेंगे।

ग्राहकोंको उत्तरके लिए जवाबी कार्ड या टिकट भेजना आवश्यक है, अन्यथा उत्तर नहीं मिलेगा। पत्र-व्यवहार हिन्दीमें ही होना चाहिये।

—व्यवस्थापक

धन कमाओ ! धन कमाओ !! गाड़ा भर-भर धन कमाओ !!!

संवत् २००६ की दीपावलीसे २००७ की दीपावली तक ग्रहयोगोंके द्वारा संसारके राज्यकारण एवं नाणातंत्र तथा वस्तुओंके भावोंमें तूफानी हलचल होनेकी सूचना ग्रहोंसे प्राप्त होती है। उत्पादन एवं खपत और आयात और निकाशके कई कारण बन कर भावोंमें भीषण घट बढ़ होगी ही। ऐसी तूफानी हलचलसे पूर्ण जानकार होकर ही व्यापार करना श्रेयस्कर होगा। ऐसे समयमें किसी भी वस्तुके हाजर या वायदेके व्यापारमें सफलता निर्भयता असंशयता आदि रखकर व्यापारसे प्रायः लाभ लेना हो एवं प्रायः क्लियरींग पर सैकड़ों हजारों लाखों रुपयेकी टकसाल झड़े ऐसा चाहते हों तो—

डंकेकी चोट चेतावनी देता हूं कि—

रुईमें २५०) ३००) सोनेमें ५०) ६०) चांदीमें ७०) ८०) अलसी सरसोंमें १०) १२) टका गुड़में ५) ७) खांडमें ८) १०) बारदाना हैसियन कंतान जूट आदिमें ३०) ४०) कालीमिर्च ७००) ६००) टका तथा हल्दी शींगदाना तेल एरण्डा आदिमें तेजी—या मंदीके इकतर्फा झटके लगेंगे। क्योंकि मंगल बुध गुरु शुक्र शनि राहु हर्शलनेपच्यून प्लूटों पृथ्वी आदि सम्बन्धोंसे एवं पूर्णिमा तथा अमावस्याके समीपके योगों, आकर्षण एवं उत्सारणसे अंशात्मक योगोंसे उदय अस्त अतिचार वक्री मार्गी एवं स्थान भेदसे शर एवं क्रांति आदि २ सैकड़ों योगोंसे देशकाल और स्थिति पर कब कितने असेंमें किस स्थल पर किस रूपसे कितना प्रभाव होगा यह ठीक जाने बिना साधारण सर्वतोभद्रकी भी ठीक जानकारी न रखने वाले एवं नाम राशि आदि पर फलित बताने वाले लेभागु प्रोफेसर एवं नक्काल-ज्योतिषियोंको तथा उनके अनुयायी व्यापारियोंको लाभके बजाय नुकसान ही हाथ रहे ऐसा संभव है। ऐसी घट बढ़के योग फिर नजदीकमें न आवेंगे। अतः अभीसे चेतो। और कब कहाँ किस २ वस्तुओं पर खेले होंगे एवं उनकी आखिरी क्या स्थिति होगी आदि बातें ठीक रूपसे जानना चाहते हों तो—

तेजी मन्दीकी सर्वश्रेष्ठ जानकारी प्राप्त करनेका एक मात्र

स्थल श्रीसत्येश्वर ज्योतिष कार्यालय है। इसकी रिपोर्टोंको अग्रगण्य व्यापारी, राजा; विद्वान्, ज्योतिषी आदि सभीने पसन्द किया है। एवं इसकी सचोट आगाहियों पर मुग्ध होकर पचासों प्रशंसापत्र एवं इनाम आदि भेजे हैं। इसलिए आपको भी ग्राहक बननेका यह संदेश है।

इतनी अव्यर्थ रिपोर्टकी फीस क्या देनी होगी

(१) नोट—ज्योतिषकी महत्ता एवं सेवा तथा सर्वसाधारणके हितार्थ ता० १ नवम्बर १९४९ से ता० १ नवम्बर १९५० तककी मास १२ की १ वस्तुकी फीस सिर्फ ४५) है—इसमें आपको हर माहकी २२ से २५ वीं तारीख तक रजिस्ट्रीसे (हस्तलिखित या छपी हुई जैसा चाहे) भेजी जाया करेंगी। जिसमें दैनिक रुख साप्ताहिक पाक्षिक एवं मासिक तथा जनरलके चांस मय तारीखोंके टकेवार होंगे। और बीचमें आने वाले रियेक्शन भी मय तारीखोंके टकेवार होंगे। और एक मासका एक वस्तुका चार्ज १५) रुपया केवल है। बाद कुछ समयके एक वस्तुका एक मासका चार्ज ५०) एवं एक वर्षका १ वस्तुका चार्ज ४५०) होगा। अतः शीघ्रसे शीघ्र ग्राहक बनकर व्यापारसे धन कमाओ।

पता—

ज्योतिषरत्न ज्यो० आ० पं० हरिशंकर शास्त्री दैवज्ञभूषण

मु० पो० खिड़कियाँ, जि० होशंगाबाद सी०पी० (मध्य प्रान्त)

महामहिम आचार्य
श्रीमदमृतवाग्भवप्रणीत

तीसरी बार   छप गया

श्रीराष्ट्रालोक

राष्ट्रभाषानुवादसहित

राष्ट्रवादी ही आर्य हैं। आर्य ही शान्तिकी स्थापना कर सकते हैं।

भारत भारतीयोंका है

स्वातन्त्र्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। राष्ट्र हमारा पिता है माता है और आचार्य है। हम सदा उसके सेवक हैं। हमारा राष्ट्र हमें भोग और मोक्ष दोनों देता है।

हम सच्चे राष्ट्रिय हैं

अभारतीय भारतके अतिथि हो सकते हैं, राष्ट्रिय नहीं।

हम संक्रान्तिका सदा आदर करते हैं। हमें ऐसी शान्ति नहीं चाहिए जो राष्ट्रको परतन्त्र बनाए।

राष्ट्रिय राष्ट्रके पुत्र होते हैं, पति नहीं

भारतीय अपने आपको हिन्दू माननेमें गौरवका अनुभव करते हैं। भारतीय आदर्शके विपरीत क्रान्ति किंक्रान्ति है, संक्रान्ति नहीं। यदि आप इन भावोंसे स्नेह करते हैं तो 'श्रीराष्ट्रालोक' अवश्य पढ़िये।

श्रीराष्ट्रालोक परम पवित्र भारतीय आदर्शका एक जीवनशास्त्र है।

राष्ट्र प्रेमी इसका आदर कर रहे हैं। जनता हाथों हाथ अपना रही है। आप भी आज ही मंगाइये। मूल्य ॥) मार्गव्यय –) 'श्रीस्वाध्याय' और श्रीविश्वविजयपञ्चाङ्गके स्थाई ग्राहकों तथा विद्यार्थियोंको मार्गव्यय सहित ।=) में

श्रीपरशुरामस्तोत्र

राष्ट्रभाषाऽनुवादसहित सचित्र द्वितीय संस्करण।

यह एक अत्यन्त ओजस्विनी भाषामें लिखा हुआ भगवान् श्रीपरशुरामका स्तोत्र है। भारतके अनेकों पत्र-पत्रिकाओंने तथा विद्वानोंने इसकी मुक्तकण्ठसे प्रशंसा की है। मूल्य विश्वोद्धार।

श्रीसप्तपदीहृदय

राष्ट्रभाषाऽनुवादसहित

भारतीय आर्य विवाहसंस्कारमें सप्तपदी नामक क्रिया कितनी सुन्दर एवं महत्वपूर्ण है यह तो पाठकोंको विदित ही है।

किन्तु इस सप्तपदीका वास्तविक रहस्य आज तक किसी भी विद्वानने खोलकर नहीं लिखा। 'एकमिषे' इत्यादि वैदिक वाक्योंके यथार्थ रहस्यको खोलकर भारतीय अदर्शके राष्ट्रिय रूपमें यह श्रीसप्तपदीहृदय नामक ग्रन्थ लिखा गया है। विशेष क्या आदर्श दाम्पत्य जीवनका तत्त्व इसमें भरा पड़ा है। मूल्य विश्वोद्धार।

महामहिम श्रीमदमृतवाग्भवाचार्यप्रणीत

श्रीआत्मविलास

मनुष्यमात्रके लिए परम कल्याणकारी व सन्मार्ग प्रदर्शक यह वही अद्भुत आध्यात्मिक दार्शनिक ग्रन्थरत्न है जिसके प्रकाशित होते ही दार्शनिक् जगत्में हलचल-सी मच गई और सैंकड़ों प्रतियाँ हाथों-हाथ लग गईं। इस ग्रन्थको पढ़नेसे स्थितप्रज्ञता प्राप्त होती है, चित्त शांत होता है। अतः यदि आप भी आत्मा क्या है? परमात्मा क्या है? ईश्वर जगदुत्पत्ति क्यों और किस प्रकार करता है? हम क्या हैं और हमें क्या करना चाहिए? दर्शन किसे कहते हैं? उनका प्रारम्भ तथा अन्त कहाँ होता है? उनकी उपपत्ति क्या है? आदि आदि आध्यात्मिक गूढ़ रहस्योंसे भलीभाँति परिचित होकर आत्मसाक्षात्कार करना चाहते हैं तो इस ग्रन्थका अवश्य मनन कीजिए। आपके सभी सन्देह दूर होकर अद्भुत आनन्द प्राप्त होगा।

मूल्य २) रु० मात्र।

प्राप्तिस्थान—व्यवस्थापक, श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)

भारतीय संस्कृतिके अग्रदूत राष्ट्रधर्मके प्रमुख प्रचारक—

'श्रीस्वाध्याय' के लिए—

राष्ट्रके उद्‌गार

श्रीयुत बा० पुरुषोत्तमदासजी टण्डन—'श्रीस्वाध्याय' को देख मुझे बहुत सुख मिला।......... इस पत्र और इसके सञ्चालकमण्डलसे राष्ट्रीय कार्यमें पूर्ण सहायता मिलेगी..........।

श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी महोदय—'श्रीस्वाध्याय बहुत अच्छा निकल रहा है। लेख विचार प्रवर्तक हैं।.......मैं इसकी पूर्ण सफलता चाहता हूँ.......।

त्यागमूर्त्ति श्री गोस्वामी गणेशदत्तजी महाराज—'श्रीस्वाध्याय' अपने विषयका अनुपम पत्र है......... यह प्रत्येक सार्वजनिक संस्थाओं, पुस्तकालयों और वाचनालयोंमें स्थान पाने योग्य है।

श्रीयुत बा० सम्पूर्णानन्दजी शिक्षामन्त्री युक्तप्रांत—'श्रीस्वाध्याय' बहुत सुन्दर निकल रहा है भारतीय प्राचीन विद्याओं पर प्रकाश डालने वाले ऐसे प्रगतिशील सांस्कृतिक पत्र-पत्रिकाओंकी इस समय आवश्यकता है।

कविसम्राट् स्व० श्री पं० अयोध्यासिंहजी उपाध्याय 'हरिऔध'—'श्रीस्वाध्याय' बड़ा सुन्दर निकला है। इसे जिस दृष्टिसे देखें वह सुखकर है। आकार, प्रकार, लेख किम्वा कविता आदि सभीप्रशंसनीय है।

श्रीयुत बा० मैथिलीशरणजी गुप्त—"......'श्रीस्वाध्याय' बहुत सुन्दर निकल रहा है। मैं आपके परिश्रमकी प्रशंसा और पत्रकी उन्नतिकी कामना करता हूँ।......."

श्रीयुत प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति—'श्रीस्वाध्याय' अपने ढङ्गका अनूठा पत्र है।.......यह एक उच्चकोटि का सांस्कृतिक पत्र है। मैं इसकी पूर्ण सफलता चाहता हूं।

श्रीयुत बाबूराव विष्णु पराड़कर जी—"....वस्तुतः यह त्रैमासिक अपने ढङ्गका निराला [illegible] आर्य संस्कृतिके प्रायः प्रत्येक अङ्ग पर इसमें प्रकाश डाला जाता है।......."

श्री डा० रामकुमार वर्मा जी—"........'श्रीस्वाध्याय' हमारे साहित्यका ऐसा पत्र है जिस पर हमें अभिमान है। इसमें जो सांस्कृतिक दृष्टिकोण रहता है वह हमें अन्य भारतीय पत्रोंमें नहीं मिलता। 'श्रीस्वाध्याय' के प्रत्येक पृष्ठमें मुझे अध्ययन और अनुशीलनसे परिपूर्ण साहित्यिक सामग्री मिली।......."

श्रीयुत पं रूपनारायणजी पाण्डेय (सम्पादक 'माधुरी,)—"....... श्रीस्वाध्याय' की सभी सामग्री ज्ञानवर्धक और उपादेय है।.......प्रत्येक देशभक्त, राष्ट्रभाषा प्रेमी, जिज्ञासु, धर्मप्रेमीको अवश्य इसे अपनाना चाहिए। हर एक पुस्तकालयमें यह पत्र स्थान पाने योग्य है।... ...."

श्रीयुत पं० देवीदत्तजी शुक्ल (सम्पादक 'सरस्वती')—'श्रीस्वाध्याय' बहुत ही सुन्दर निकल रहा है।........आपने 'स्वाध्याय' निकाल कर हिन्दीके एक विशेष अभावकी पूर्त्ति की है, इसमें सन्देह नहीं। इस महत्त्वपूर्ण कार्यके लिए हिन्दी वाले आपके अवश्य कृतज्ञ होंगे।

श्रीयुत पं० श्रीपाद दामोदर सातवलेकरजी—"........'श्रीस्वाध्याय' के विषयमें विशेष क्या कहा जाय, यह एक अत्युत्तम पत्र है। मैं हृदयसे इसकी सफलता चाहता हूँ। इसकी अन्यान्य महत्ताओं पर 'वैदिकधर्म' में प्रकाश डालूंगा।

इनके अतिरिक्त भारतके अनेकों महामान्य विद्वानों और प्रमुख पत्र-पत्रिकाओंने 'श्रीस्वाध्याय' की मुक्तकण्ठसे प्रशंसा की है। स्थानाभावके कारण वे सब यहां उद्धृत नहीं हो सकीं।

श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी द्वारा अर्जुन प्रेस दिल्ली में छपकर श्रीस्वाध्यायसदन सोलन (शिमला) से प्रकाशित।